शब्दो का विष

शब्दों
का
विष
सुमेर सिंह दइया

सुमेरसिंह दईया

अनुक्रम

शब्दो का विष

दादी

•

•

'यहाँ पानी की बाल्टी क्यों रखी ?"

अचानक क्रोध-पूर्ण स्वर में दादी चिल्लाई और देखते ही देखते बेरहम बनकर उसने वह पानी से भरी बाल्टी लाने वाले पर उड़ेल दी।

बेचारा बुड्ढा !

कार्तिक की शीत भरी साँझ उस पर हवा की हल्की हल्की लहरें। एक दफा सिर से पाँव तक वह थर-थर काँप गया। क्षण भर के लिये ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। बेचारे की घिग्घी बंध गई।

साँस की रुकावट के बीच बोला — 'हे राम !"

लेकिन दादी ने इधर ध्यान ही नहीं दिया। वह तो निष्ठुर स्वर

मे चीखकर कहने लगी—' मैंने तुम से कितनी बार कहा है कि जब मैं मन्दिर से लौट कर आऊ तो बीच मे बाल्टी मत रखा करो पर मेरी सुने कौन—माने कौन ।"

'यह बात नही है...।'—सहमे कण्ठ मे अपराधी की सी दयनीय मुद्रा बनाते हुये उसने रुक रुक कर कहना चाहा—"रोज रोज कहती हो, किन्तु ।"

दादी ने वाक्य पूरा नही होने दिया । मध्य मे तासी बनकर झिडक उठी—"अभी अभी दफ्तर से लौटकर आये हो । शायद स्नान भी नही किया होगा ?

'नही तो ।"

इस सदेह के जवाब मे बुद्धे ने गर्दन हिलादी ।

"लो, मेरी ओढनी का पल्ला इस बाल्टी से छू गया । ठाकुरजी का चरणामृत और प्रसाद दोनो ही अपवित्र हो गये । अब ये किस काम के । मुझे दूसरी बार स्नान करना पडेगा ।"

'इस वक्त स्नान करना पडेगा ?"

बुद्धा घन्ना जसे इस अपराध के बोझ के नीचे दब सा गया जहा से मुक्ति मिलनी असम्भव है ।

क्या कहा ?'— आखें निकालकर इस बार फिर दादी चिल्लाई— इतनी बार तुम्हें समझा दिया फिर भी तुम्हारी खोपडी म कुछ नही घुसता ।"

इस डाट फटकार से घन्ना एक तरह स डर गया । आग कुछ कहने की हिम्मत भी नही रही । सिर झुकाये चुपचाप सुनता रहा ।

'आइन्दा ध्यान रखना।'

अन्तिम चेतावनी देकर दादी घर के अन्दर प्रवश कर गई । उसका बडबडाना अभी तक खत्म नही हुआ था । असल में यह झमेला द्वार पर ही हो गया था, जहा भूल से बाल्टी रख दी गई थी ।

जाती हुई दादी की पीठ को निहार कर घन्ना ने कापते हाथ

से खाली बाल्टी उठाई और बाहर गली के सार्वजनिक नल से पानी भरने के लिये चल दिया। यूं भी उसके पैर भारी भारी से हो रहे हैं। एक ठण्डी सिहरन तमाम बदन में प्रविष्ट करके दौड़ने लगी है, जिसके कारण उसकी हालत धीरे-धीरे खराब होती जा रही है।

बेचारा दीन और लाचार बुड्ढा!

पीछे से दरवाजे की चौखट पर सहसा दादी का सिर दीखा और वह ऊंचे स्वर मे बोली— जरा जल्दी करना। हरबार गलती हो गई कहकर तुम तो छुट्टी पा लेते हो, लेकिन इधर मेरी पूजा चौपट हो जाती है—।"

घना ने कुछ सुना या नही, ठीक-ठीक कहना मुश्किल है। इस पर भी वह सोच रहा है कि पहले वह स्नान करेगा। इसके बाद पत्नी सारे कपड़े धोकर नहाने बैठेगी। आगन भी पानी से साफ करना पडेगा तब कहीं मनोवांछित शुचिता लौटेगी। छुआछूत की यह बीमारी काफी पुरानी है। न जाने कब दूर होगी।

दादी!

करीब करीब सारे मोहल्ले की दादी है वह। सभी उसे आदर सूचक सम्बोधन से पुकारते हैं। सुनकर वह प्रसन्न होती है। एक बड़प्पन का अज्ञात भाव उसकी आखो में अनचाहे ही भर जाता है। बहुत कम लोग है, जो उसे घना की बहू कहते हैं। यह नाम तमाम लोगो के मुह पर चढ गया है। इस कारण कोई उलझन या परेशानी नही होती!

प्राय स्त्रियो की आयु के सम्बन्ध में बात करना अनुचित ही नही, वरन् साधारण लोकाचार के विरुद्ध भी है। वैसे प्रसग वश

कभी कभी मुह से अगर यह अप्रिय सत्य प्रकट हो जाए, तो उसे एकदम आपत्ति जनक नहीं कह सकते ।

दादी की आयु कितनी है —निर्भ्रान्त तिथि किसी को भी ज्ञात नही । इस पर उनकी शारीरिक आकृति देखकर भी अनुमान लगाना कठिन है । उनका रहन-सहन, खान-पान और कपडे लत्ते तक अक्सर भ्रम जाल मे फसा लेते हैं । यू गली-मोहल्ले की सब बडी-बुढ़ियें बहुत ही विश्वास के साथ कहती हैं कि कल की तो बात हैं, जब घ ना उसे ब्याह घर लाया था । कोई लम्बा समय नहीं बीता । लेकिन इन थोडे से ही वर्षों म वह कितनी बदल गई है । असमय मे ही वृद्धवस्था ने उसे पूरी तरह घेर लिया । गालो मे सल पड चुके है । पोपला मुह और सन के समान सफेद केश उसे दादी तो क्या, पर दादी बनाने के लिये उद्यत हैं । आखें गढे म धस गई हैं और दृष्टि धु धली पड़ चुकी हैं । सूखे सूखे हाथ पैरो को देखकर उसकी दुबल काया का सहज ही अदाजा लगा सकते हैं ।

आज प्रात काल से ही दादी के सर मे दद उठना शुरु हो गया । यह कोई आकस्मिक यन्त्रणा नही है, बल्कि पुराना रोग है । अशान्ति एव बेचैनी कभी कभी इतनी बढ जाती है कि एक पल का चन भी नसीब नही होता ।

सर पर पट्टी बाधे दादी माची पर लेटी हुई है और आत स्वर मे धीरे धीरे कराह रही है। उसकी कराह मे विचित्र सी वेदना है अन्तर विदारी पीडा है ।

हे राम ! हे ठाकुरजी मेरी पीडा हरो । हे सत्यनारायण मेरी भव बाधा हरो । हे राम ।"

"लो चाय पीलो ।"

तभी धना प्याली मे कडक चाय बनाकर ले आया । उसने यह दूसरी दफा चाय बनाई है । दादी कोई गोली निगल कर उसे जल्दी जल्दी गटकने लगी । गम-गम और वाष्पयुक्त चाय । मगर दादी

के न तो होंठ ही जले और न जीभ। वह सारी की सारी सुडक गई थोडी ही देर में।

स्पष्ट है कि घना आज सुबह से ही व्यस्त है। पत्नी के अप्रत्याशित रूप से बीमार हो जाने के कारण बहुधा घर का सारा काम मजबूरन उसे ही करना पडता है। सफाई करने से लेकर बर्तन माजने और रसोई बनाने तक का काम हाथ मे लेना पडता है। यह एक ऐसी विडम्बना है जिसे आज तक वह आज्ञाकारी और स्वामी-भक्त सेवक की तरह सिर झुका कर झेलता आया है। जब कभी अधिक तग हो जाता है तो अपनी अतरखीझ को बडी कठिनाई से भीतर ही भीतर रोक पाता है। वैसे अचानक विवशता जनित खेद से उसका हृदय आक्रान्त हो जाता है तो निराशा-पूण ढग से वह अपने खोटे नसीब को कोस लेता है—बस !

वास्तव मे पत्नी सेवा का ऐसा उदाहरण अन्यत्र मिलना दुलभ है !

ताज्जुब तब होता है, जब इस बारे में गली मोहल्ले वाली औरतें भिन्न भिन्न रायें व्यक्त करती हैं। सन्देह नही कि उनकी अलग-अलग मान्यतायें हैं-धारणायें हैं। दादी चाहे कितनी ही चीखे-चिल्लायें, मगर वे बदलती नही '

"यह दादी सर-दद का झूठा बहाना बनाके पडी रहती है। हकीकत मे कुछ नही।"

'बचारे दाद की मुसीवत है।"

कभी-कभी मजाक मे घना को भी औरतें 'दादा' या 'दादे' कहकर पुकारती हैं लेकिन सभी नही।

गऊ-सा सीधा आदमी है, इसलिये कठपुतली की तरह नचाती रहती है।"

"बस, रसोई का काम खत्म करके वह दफ्तर की तरफ रवाना हुआ नही कि दादी का सर दद एक चमत्कारिक ढग से गायब।'

खूब चटखारे लेकर बातें करेगी और ।

विद्रुप से भरी हसी की बौछार बीच बीच मे सभी के मुह से फूट पडती है, इससे बातें करने का आनन्द आ जाता है ।

'और तो और दीपावली के अवसर पर वह सारे घर की लिपाई-पुताई भी इस 'काठ के उल्लू' से कराती है । खुद आलस मे मुह लटकाये टुकुर-टुकुर देखती है ।'

इस बार 'काठ के उल्लू' पर काफी लम्बा ठहाका लगा और आस पास की औरतें भी रस लेकर बातें सुनने के खातिर आगई ।

"च् च् च् बेचारा पति नही, बल्कि गुलाम है । पुरुष के अधिकार-पूर्ण सत्ता के युग मे सचमुच यह महान आश्चर्य की बात है ।"

एक पढी लिखी गृहिणी ने हसते हुये यह व्यग कसा, जो अपने आप मे बहुत प्रभावशाली है । इसका तात्पर्य भी स्पष्ट है ।

घना किसी सरकारी महकमे मे चपरासी है । दफ्तर जाने से पहले साहब के बगले पर जाकर सलाम मारना जरूरी है । जब से वह नौकर हुआ है तभी से यह काय एक धार्मिक अनुष्ठान की तरह वह सम्पादित करता आ रहा है । इसमे किसी भी प्रकार की भूल नही—खूब याद रखता है ।

इसके उपलक्ष मे निश्चित रूप से उसे कोई बेगार मिल जाती है । शहर से किसी भी तरह का सौदा लाने से लेकर आटा पीसाना चक्की से और धोबी से कपडे लाने तक का काम उसमे शामिल है । चलते चलते बीबीजी भी कोई हुक्म सुना देती है । उनसे फारिग होने मे काफी समय लग जाता है, इस वजह से दफ्तर पहुँचने से थोडी देरी हो जाती है । तब वहा नायब साहब उसे अच्छी खासी डाट पिलाते हैं । इसका अर्थ है कि वह उनके घर क्यो नही आया ? उसकी इस धृष्टता पर वे नाराज हैं—बेहद नाराज ।

इधर घना भी अभिनय करने मे कुशल है । कुछ भी पता नही

चलने देता ! सिर झुकाकर उनकी सारी झिडकियो को पानी की तरह गटागट पीता चला जाता है ।

परन्तु आज की स्थिति भिन्न है। घर से ही वह विलम्ब से निकला है अत वह बडे साहब के बगने पर भी जा नही पाया । आज दोनो अफसर एक साथ आग्नेय नेत्रा से घूरेंगे । अफसोस तो इस बात का है कि वह उनका किस तरह सामना करेगा ?

सच तो यह है कि दादी के सर-दर्द ने उसकी ऐसी तैसी करदी, नहीं तो वह भी मस्तक ऊ चा करके दफ्तर मे प्रवेश करता। उस असामयिक घटना पर कुढने मे भी क्या । यद्यपि उसकी मानसिक स्थिति अनावश्यक रूप से अस्त-व्यस्त है, तथापि यह साधारण सी बात वह भलीभांति समझता है । इसके साथ वह उसके निराकरण का उपाय भी मन ही मन सोच रहा है। उसकी गम्भीर मुद्रा स ऐसा ही ज्ञात हुआ।

इतना ही नही कि एक ठण्डी आह भरने के अतिरिक्त उसके पास कोई दूसरा विकल्प नही है ।

चाहे गर्मी की चिलचिलाती धूप हो अथवा शीत की सुहावन मीठी धूप फिर भी इससे कोई अ तर नही पडता। छत पर खडी रह कर दादी जब तक दो चार घरो मे ताक झाक नही कर लेती, उसका कलेजा ठण्डा नहीं हो पाता। उसकी अ वेषक दृष्टि पत्थर की छतो और ईंटो की दीवारो तक को भेद डालती है । कोई अपरिचित घटना, किसी तरह की अनहोनी बात या कोई असाधारण प्रसग इसके कानो और आँखो स छिप नही पाते । कानो मे पडी बात को एक दृश्य के रूप मे प्र यक्ष देखन की इसकी लालसा बनी रहती है । अपनी उत्कण्ठा शान्त करने के अभिप्राय से वह आधी आधी रात तक छत पर बेचैनी से टहलती रहती है । न जाने कैसी बेकली है !

"काना कल रात को दारू पीकर आया था ।"—दादी ने आज बैठते ही निसंकोच भाव से घोषणा की—"उसे के घर के हो रही थी और उसकी मा धीमे कण्ठ से गालिया बकती हुई सफाई कर रही थी ।'

'अच्छा ।"

इस रहस्योद्‌घाटन से गली की सभी औरतें चकित रह गई । कई सुनने वालियो की आखें फटी रह गई ।

"क्या कहती हो दादी ?"—कुछ ने दबी जबान से अविश्वास प्रकट किया ।

इस आशका की परवाह नही करते हुए दादी ने निर्भय बनकर कहा— " मैं सच कह रही हूँ । मैंने सब कुछ अपनी इन आखो से देखा है ।"

औरतो के इस छोटे से समूह मे अप्रत्याशित सनाटा छा गया । उन मे से कई द्वेषवश होठों ही होठो म अस्फुट स्वर से बड़बडाई मगर उनका स्पष्ट मन्तव्य अभिव्यक्त नही हुआ ।

गली मे काना प्रतिष्ठित कुल का ब्राह्मण है । यू उसके परिवार का सभी के दिलो म विशेष आदर भाव है । छोटा होने के बावजूद भी सारे गली के आदमी उससे 'पाव लागी' का शालीन अभिवादन करते हैं । वह भी हसकर उत्तर देता है । पण्डित जी वाली उच्च और गर्वीली भावना अनायास ही इसके मुख मण्डल को आच्छन्न कर जाती है । इसम कैसे कोई आश्चर्य की बात नही । अपने अपन परम्परागत सस्कार है जिनसे कोई भी अस्पृश्य नही-रिक्त नही !

लेकिन उसकी मा का भी जवाब नही । वह झगडालू स्त्री के रूप मे प्रसिद्ध है । विशेषकर इस कला म वह निपुण है । छोटी छोटी बाता को लेकर वह प्रत्येक से अशिष्ट ढग स लड बैठती है । उसके मुह से निकलने वाली असगत गालियो को सुनकर तो सब के होश उड जात हैं । गाली भी किस की—दूध-पूत की ! भला किस म साहस है जो

इस बेशर्म के मुह लगे। किस का कलेजा है जो बैठे बिठाये उससे बैर मोल ले। यह तो वह बात हो गई कि आ बैल मुझे मार।

साच को आच क्या ?

खोज करने के उपरा त दादी का कथन सवा सोलह आना सही निकला।

दूसरी घटना के सम्ब ध मे दादी की घोषणा अनपक्षित रूप से आश्चय जनक निकली।

जरा सुनिये और जायजा लीजिये।

जानकी किसी गल्स स्कूल म चपडासिन है। उसके एक जवान विधवा बेटी है। नाम है उसका केसर। दिन भर घर मे रहती है और किसी न किसी काम मे अपने मन को लगाये रखती हैं। कम से कम खामोशी को पीती हुई यह तनहाई उसे अधिक बेकरार न करे। शायद इसके पीछे यही मानवोचित भावना काम करती है।

अक्सर उनके घर एक चौधरी पास के किसी गाव से आया करता है। साडनी पर कभी घास, लकडियें और धान के बोरे भर कर ले जाता है। उ है शहर मे बेचकर उनके बदले मे आवश्यक सामान खरीद कर ले जाता है। इस बीच लौटते वक्त वह दो चार दिन के लिये विश्राम करन के उद्देश्य से उनके घर ठहर जाता है।

वह जानकी का धम भाई है और केसर का है धम-मामा। ऐसा ही कुछ सम्ब ध वे मोहल्ल वालो को बताती आ रही है। वहद बातूनी मिलनसार और हसमुग। एक तरह से खुश मिजाज और उसका हाथ खर्चीला! बस, फिर क्या था, गली मे शीघ्र ही लोक-प्रिय हो गया। अनचाह भले मानुस का खिताब मिल गया। एक समय ऐसा भी आया, जब वह मोहल्ले मे उल्लेखनीय व्यक्ति बन गया और सभी उसकी मैत्री के इच्छुक हो गये। जिसने भी अधिक घनिष्ठता और सौज य का परिचय दने की चेष्टा की, उसे चौधरी ने हसकर आत्मीयता से स्वीकार किया। यही उसकी व्यवहार कुशलता है।

पिछले दिनों जब उसने एक सुंदर-सी गाय लाकर जानकी के द्वार पर बांध दी तो आस पास के पड़ोसी अचम्भे म पड़ गये ।

उत्तर म हसकर चौधरी ने सफाई पेश की— "जानकी बहन कई दिना से एक दुधारू गाय की रट लगाये बैठी थी सो मैं ले आया ।"

यह उदारता काफी-कुछ समय तक चर्चा का विषय रही ।

परन्तु जब दादी न उनक गुप्त सम्बन्ध का वास्तविक रहस्य प्रकट कर दिया तो एक बार सब के सब अविश्वास से आन्दोलित हो उठे । उन्हें द्वेष और दुर्भावना से प्रेरित यह नितान्त ओछी गप्प ही मालूम हुई । एकाएक किसी को विश्वास नही हुआ । दादी की शकालु बुद्धि और सकीर्ण प्रकृति की सभी निन्दा करने लगे ।

अपने पक्ष को मजबूत देखकर जानकी दादी से जान बूझ कर लड बठी । कहनी अनकहनी उसने खूब जी भर गालिया बकी । झगडा इतना बढा कि अगर पडोसी बीच-बचाव नही करते, तो हाथा पाई की नौबत आ जाती । शेरनी की तरह गरज कर बटी ने भी दादी को दिन मे तारे दिखाने की जोरदार धमकी दी । यही नहीं, गली के अन्य लोग भी इनके स्वर मे स्वर मिलाकर उसकी भरसना करने लगे ।

किन्तु सब व्यथ दादी टस से मस नहीं हुई ।

सच है, भला होनी को कौन टाल सकता है । वह तो भविष्य के गभ म एक चोर की भाति छिपी बठी रहती है । जब समय अनुकूल आता है, तब वह एक दिन अचानक प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होकर सबको विस्मित कर जाती है ।

किसी को काना कान खबर भी नहीं लगी । पता नही कब केसर ने बच्चा पैदा किया और कब जानकी उसका गला घोंट कर पुराने किले की खाई में डाल आई ।

कुत्ते की तरह सूघती हुई जब सुबह ही सुबह पुलिस उनके घर के सामने आ धमकी तब जाकर राज खुला । लोगो की आंखो पर

पडा हुआ परदा एकदम उलट गया ।

है न कमाल !

ऐसी कई अनेक चमत्कार पूर्ण घटनायें हैं, जिनके अन्वेषण का श्रेय केवल दादी को ही है। वह इसकी विशेषता है या और कुछ, ठीक ठीक कहना कठिन है ! समयाभाव के कारण अभी उनका जिक्र बडी विवशता से छोडना पड रहा है, इसका खेद है !

दादी की पुरानी ओढनी मे आज फिर नई दो थेगलियें या पैबन्द और लग गई, आश्चर्य है ! पहले की पाच और इस बार की दो कुल मिलाकर पूरी सात हो गई । गणना मे कोई गलती नही।

'दादी ! तू इतनी कंजूसी क्यो करती है ?'— पडोसिन भला कहने से कैसे चूकती 'कपडे धोने म तू धेले का साबुन नही खर्चती। सब्जी मे पूरा मिर्च मसाला नहीं डालती । घी जैसी चिकनाई को तू कभी-कभार रसोई म घुसने देती है । और मिट्टी का तेल ।"

उसके होठो के पास व्यग्यपूर्ण मुस्कान थिरक उठी फिर भी वह छेडने की गरज से बोली— 'इतनी पूंजी जोडकर क्या करेगी ? कौनसी मरने के बाद सग ले जायेगी ?"

हसी-हसी की मामूली बात थी, लेकिन सुनकर दादी एकदम भडक उठी । लगा जसे यह उसके सम्मान पर सीधा आघात है ।

'अरी ओ लच्छो की मा ! क्या बढ बढ के बातें करती है । मैं सब जानती हूँ । खसम पत्रकार है न, इसलिये दिमाग सातवें आसमान पर है । पर यह इतनी कमाई कहा से आती है, सभी को पता है । मुह मत खुलवा। यह याद रहे कि हराम की कमाई कभी पचेगी नही, मौका पाकर एक दिन जरूर निकलेगी । जो खोटे किये है

उनको यही भोगना पडेगा । मेरी बात गांठ बांध लो पते की है ।"

पड़ोसिन का मुंह एकदम फक ! लगा जैसे उसम जीभ निर्जीव हो गई ।

अगले क्षण उसने घबराकर सोचा अब अगर बात सम्हाली नहीं गई तो सारी कटुक्तियां रस बस कर हालत खराब कर देगी । बड़ी मुश्किल से सकपका कर वह बोली "दादी ! मैं तो यूं ही तुम से हंसी कर रही थी । बेकार में बुरा मान गई ।'

'अरे, मुझे क्या बनाती है ।"—दादी तैश में आकर बोली—'मैं सब समझती हूं ।"

ठीक इसके बाद उसने चुटकी भर नसवार अपनी नाक में चढ़ाई । ओढ़नी से ही नाक साफ करके वह फिर कहने लगी, "तुम जो कहती हो उसे समझने की अकल अभी तक मुझ में है । पर पर मेरा भाग्य ही ऐसा है जो मेरा बुड्ढा एक मामूली चपरासी है और ... और ।"

अचानक दादी का स्वर बीच ही में कांप गया । जाने कैसे उसके नेत्र सजल हो आये । एक प्रकार का करुण भाव उस कातरता की सजीव मूर्ति बना गया । शायद नारी सुलभ-दुर्बलता ने अनायास ही उसकी आत्मा को पूरी तरह ग्रस लिया ।

शीघ्र ही पलट कर वह अपने घर के अन्दर चली गई ।

पड़ोसिन निःशब्द ! उसे क्या मालूम था कि उसकी यह साधारण सी हंसी एसा प्रतिकूल प्रभाव ग्रहण करेगी । वैसे भी किसी के दिल को दुखाने से भी क्या लाभ । इस तरह की हंसी अक्सर दम्भोक्ति बनकर रह जाती है जो किसी भी स्थिति में कदापि सहनीय नहीं ।

लेकिन अब पश्चाताप करने से भी क्या ।

इस समय दादी रोष एवं आक्रोश से अभिभूत होकर भीतर ही भीतर खूब छटपटा रही है । समाधान न खोज पाने की यह असफलता

हृदय म एक कचोट उत्पन्न करती है । इस कारण मानसिक स्थिति विक्षुब्ध है—अशान्त है। एक ही बात कील की तरह गडकर बेचैन कर रही है । निश्चय ही पडोसिन ने उसके आत्म-गौरव पर एकाएक प्रहार करके उसकी निर्धनता का मजाक उडाया है। वह इतनी कमजोर है कि प्रतिशोध भी ले नही सकती । नि सदेह अपनी गरीबी एव कम-जोरी की यह अनुभूति कितनी तीखी और कडुवी है, यह तो उसका मन ही जानता है ।

चाहे कुछ भी हो पर अपमान करने का हक किसी को भी नही ।' दादी आहत अभिमान से बडबडाती है ।

वह बहुत देर तक तडपती रही। किसी के घमण्ड को चूर-चूर करने का सकल्प भी लेती रही । बीच बीच म दारुण प्रतिध्वनिया भी उसके हृदय के आस पास गू जती रही, जो एक दूसरा ही अर्थ दे जाती है । अपनी अक्षमता और असमर्थता का यह बोध उसे आज पहली बार हुआ है ।

'ओह !"—दादी का मन एकाएक करुण स्वर मे एक उसांस छोड बैठा ।

वास्तव म इस पदाघात पर वह पूरी तरह चुप है । यह पथरीली चुप्पी उसके भग्न हृदय म हीन भावना भरती जा रही है, जो अन्दर से तोडती है- बिखेरती है । साहस-हीनता का यह एहसास एक मानसिक दुर्बलता को ज म देता है । यह इस अप्रत्याशित टूटन और बिखराव को नही रोकता ।

'दादी !"

किंचित् सम्हलकर दादी ने पूछा—'कौन ?"

द्वार पर से सहमी-सी आवाज आई ।

'यह तो मैं हूँ भीखू की मा।"

'अन्दर चली आओ ।"

अ यमनस्क अवस्था मे रहकर दादी अपनी माची पर से उठ

बैठी। इस अकेलेपन की उधेड़-बुन का खत्म करने के लिये दूसरे परिचित का सग अत्यन्त लाभ-कारी है। मन भी बहल जायेगा और भीतर का निरर्थक आवग भी किसी न किसी तरह रुक जायेगा, एसा विश्वास किया जा सकता है।

वह उत्सुक हो द्वार की तरफ देखने लगी।

उस महिला ने बडे सकोच के साथ घर मे पदार्पण किया और अपने आप में सिमट कर माची के पास फर्श पर बैठ गई।

दादी का एकदम सूखा मुह देखकर उसने पूछ लिया—'क्या बात है दादी ? तेरी तबीयत तो ठीक है न ?"

'कोई चिन्ता की बात नही।"—दादी ने फीकी सी मुस्कान के बीच अनमने भाव से उत्तर दिया।

"अच्छा।"

थोडी आश्वस्त होकर भीखू की मा ने अपनी ओढनी की गाठ खोली। उसमे से दस दस के कुछ नोट निकालकर बोली—"लो, दादी ! ये रुपये।"

दादी ने उतावली मे रुपये गिने। इसके पश्चात् उसने अचरज मे कहा—'ये तो सिर्फ पचास ही हैं।"

"इस बार मैं पूरे नही दे सकू गी।"

उस महिला का स्वर उदास है।

दादी को अचानक गुस्सा आ गया। उसकी कण्ठ-वाणी भी अस्वाभाविक रूप से प्रखर हो गई।

"क्या ? जब लेने आती हो तो वादा और होता है। देने आती हो तो उस वक्त बहाना कुछ दूसरा होता है। यह सब क्या है ?'

अत्यन्त अनुदार और असहिष्णु बनकर दादी ने अपनी तीखी दृष्टि भीखू की मा के चेहरे पर गडा दी।

लेकिन उधर से कोई जवाब नही आया तब दादी गर्म दूध की तरह उबल पड़ी।

' मैं अपने पूरे पैसे लूंगी और व्याज भी नही छोडूंगी । समझी ।"

इस लज्जास्पद स्थिति मे पडकर उस महिला की आखें नीची हो गई । वह क्या करे ? मजबूर है । गरीबी और बेकारी किसी को भी नही छोडती ।

"दादी ! इस बार मुझे माफ कर दे ।"—भीखू की मा कातर स्वर मे गिडगिडाई—"अगली बार पूरे दे दूगी । क्या करू ? भीखू कई दिना से बेकार है । घर मे दो वक्त की रोटी के भी लाले पडे हुये हैं और ।"

"मैं कुछ नहीं जानती ।"—दादी अधिक तीखी हो गई, निर्मम स्वर मे बोली - " मैंने काई तुम लोगो को खिलाने का ठेका ले रखा है ।"

'दादी ! थोडी दया कर दया कर , तेरे हाथ जोडती हूँ ।"

भीखू की मा के नेत्र हठात् आर्द्र हो आये ।

'अह ह ह क्या सूरत बनाई है ! अहा हा शक्ल तो देखो इसकी , इसलिये कहती हूँ कि तुम लोग अपनी नीयत क्यो खराब करते हो । फिर वैसा ही फल भोगते हो और दोष देते हो अपने भाग्य को ।'

अब दादी का आवेश मे बडबडाना शुरु हुआ तो सहज ही रुकने का नाम नही । वह काफी देर तक धारा–प्रवाह चलेगा, इसमें कोई सदेह नही ।

उस दिन असमय के स्नान [illegible] के लिये [illegible] हुआ ।

जल्दी ही सर्दी लग गइ । जुकाम हुआ और बिगडकर ज्वर का उग्र रूप धारण कर गया ।

देखते ही देखते वह माची से लग गई ।

स्पष्ट है कि दादी की यह बीमारी चिंताजनक है कष्ट-साध्य है । इस पर परेशानी का कारण तो यह है कि वह अस्पताल की दवा लेने से साफ इन्कार करती है । बस एक तुलसी पत्र और ठाकुरजी का चरणामृत लेकर ही वह सतोष कर लेना चाहती है । अपना अपना विश्वास — अपनी अपनी मान्यतायें ।

अब बेचारा धन्ना करे भी तो क्या । इस हठीली और जिद्दी औरत के आगे वह हार मान चुका है । कई बार समझाया कसमें दिलाई मगर सब व्यर्थ । वही कुत्ते की पूछ टढी की टढी । आस-पास के पडोसियो ने भी विनती करली । बीमारी के दिनो मे किसी प्रकार का व्रत अथवा अनुष्ठान करना बुरा होता है । इससे अनिष्ट की सम्भावना बढ जाती है । फिर भी दादी ने एक बार 'नहीं' कहकर 'हा' कभी नही भरी, जैसे इसस हेठी होती है ।

अन्त म इसका दुष्परिणाम तो भुगतना पडा ।

भला काल ने किस पर दया की है । किंवदती प्रचलित है । कहते है कि एक दफा महाबली रावण ने भी अपने बाहू बल के द्वारा इसे पराजित कर दिया था । कदाचित वह इस अपमान की यत्रणा को कभी नही भूला । अवसर देखकर उसने लकापति का अन्त कर दिया। ऐसा निर्दयी और बर्बर है वह ।

तब फिर दादी की क्या बिसात !

भोर के तारे के उगने स पूर्व ही धन्ना शोकातुर कण्ठ से चीख पडा । मोहल्ले-गली के लोग अच्छी तरह समझ गये । अब दादी इस ससार मे नहीं है । उनके इस असामयिक निधन पर सभी दुखी हैं । व सहानुभूतिवश उठकर अपने घरो से चले आये और धन्ना के निकट बैठ कर सवेदना प्रकट करन लगे । इसका विपरीत प्रभाव पडा । इस

सान्त्वना से बेऔलाद धना एक दम फफक पडा । लेकिन इस शोकाकुल घडी मे उनका तो पडोसी होने के नाते यही कर्त्तव्य है ।

इस बीच औरतो का समूह भी आस-पास मण्डराने लगा । सबसे पहले उन्होने लाश को सम्हाला । उसे माची से उठाकर गोबर से लिपे फर्श पर नीचे रखा । एक लोटा पानी देह पर डालकर उसे शुद्ध करने की प्रमुख धार्मिक क्रिया पूर्ण की । इसके बाद दूसरे धुले हुये कपडे पहनाकर एक रंगीन दुशाले से लाश को पूरी तरह ढक दिया। तुलसी-पत्र और गंगाजल भी मुह मे डालकर उसे बल-पूर्वक बद कर दिया । विस्फारित आंखो की पलकें भी धीरे से मूद दी ।

खेद है कि धर्म-भीरु और कर्त्तव्य परायण दादी को गगा जल भी दम निकलने के पश्चात् ही मिला। हायरे दुर्भाग्य ! विचित्र विडम्बना है ।

फीकी फीकी सुबह तक अच्छी खासी भीड इक्ट्ठी हो गई । दादी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के उद्देश्य से गली मोहल्ले के तमाम लोग आ गये । दारुण दुख की इस वेला मे वे सब धना को धीरज रखने का परामर्श दे रहे हैं ।

एक ओर गीता का पाठ हो रहा है तो दूसरी तरफ धना अपनी जीवन सहचरी की चिर विदा की घडी मे अभी तक करुण कण्ठ से सिसक रहा है । उसकी असहाय-सी अश्रु मुखी मुद्रा दिल मे टीस उत्पन्न करती है ।

'राम-नाम सत्त है ।"

इस शोर के साथ अर्थी उठी । सभी आखे शोकार्द्र हैं । गली मे कुछ ऐसी कमजोर दिल की औरतें भी हैं, जो एकाएक आचल मुह पर रख कर क्रन्दन करने लगी । अपनी प्यारी-प्यारी दादी से बिछुडने का दुख कितना गहरा है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है ।

कहने की आवश्यकता नहीं कि आज दादी ने बिना घर-द्वार

और गली गवाड सूनी-सूनी हैं । कहा है दादी की वे रसीली बातें और रोचक गप्पें ? कहा हैं वे उसकी मीठी मीठी गालिया ? कहा हैं उसकी वे दिल फरेब शिकायतें ? लगता है, जैसे वे उन्हे अपने आचल में समेट कर सग ले गई ।

क्या कभी फिर ऐसी अद्वितीय और अद्भुत दादी को पाकर यह मोहल्ला निहाल हो सकेगा ? इसका उत्तर इस समय देना कठिन है ।

यू अभी से सभी घन्ना के भविष्य के सम्बन्ध मे चिंतित हैं । बेचारा लाचार दीन हीन बुड्ढा ! कौन उसकी सेवा करेगा ? इस उम्र मे कौन उसकी देख भाल करेगा ? वास्तव मे दया का पात्र है वह ! वाहरे क्रूर विधाता ! कैसा बदला लिया है इस गरीब और बेकस इसान से ? कोई पानी पिलाने वाला भी पीछे नही छोडा । और तो और इतने बडे घर मे वह भूत की तरह अकेला पडा रहेगा, जिसम मरघट की सी शाति व्याप्त है । उसकी कठोर दीवारें एकदम चुप हैं फिर भी इस चुप्पी मे भी पथरीले होठो से एक ऐसा करुणाप्लावित स्वर नि सृत हो रहा है, जो मर्मांतक है प्राण घातक है ।

निश्चय ही आज घन्ना की आखो म भयानक उदासी समा गई है ।

जल्दी ही अर्थी एक हल्के से कोलाहल के साथ श्मशान घाट पर पहुँच गई ।

देखते ही देखते चिता सजी । बडी लकडियों के ऊपर लाश को रखा , फिर छोटी छोटी पतली लकडियें उस पर रखने का काम शुरु हुआ । असल म यह चतुराई का काम है । अगर लकडियो के जमाने का काय ठीक ढग से नहीं होगा, तो लाश भी अच्छी तरह नहीं जलेगी ।

इसी समय एक आश्चय-जनक चमत्कार हुआ ।

सभी ने विस्फारित नेत्रो से देखा कि लाश अपने आप हिलने

लगी । उसमे धीरे-धीरे गति उत्पन्न हुई और अकस्मात् हाथ-पैर हरकत करने लगे । इसके साथ ऊपर रखी वे छोटी-छोटी लकडियें नीचे गिर पडी ।

अरे !"

वहा उपस्थित सारा जन समुदाय भौंचक्का रहकर चिल्लाया । एक पल, दो पल और न जाने कितने पल इस अद्भुत् दृश्य को अपलक देखने मे बीत गये । इस बीच चारों ओर सन्नाटा सा छा गया । लगा मानो घूमती हुई धरती अपनी कील पर स्थिर हो गई है । हवा थम गई है और पेड-पौधो ने असह्य चुप्पी साधली है । वातावरण एक गहरे शू य मे विलीन हो चुका है ।

'मैं कहा ?"

अस्फुट स्वर मे कहती हुई दादी अचानक चिता पर उठ बैठी और चकित नत्रो से आस-पास देखने लगी ।

वहा कुछ दुर्बल हृदय के लोग भी उपस्थित हैं जो भयभीत कण्ठ से हठात् चीख पडे ।

"भू ऊ ऊ त !"

●

अर्थी के फूल

•

•

रात पूरी तरह ढल चुकी। एक के बाद एक सभी छोटे-मोटे तारे छिप गये। दिन उगा और उजली-सुहानी सुबह जगी। ओस में भीगी बेसुध पहाड़ियाँ, पहाड़ियों में ऊँघते अनमने जंगल और उनसे काफी दूर स्थित यह छोटा सा कस्बा, जैसे घने काले बालों के बीच एक बड़ा पीला गुलाब लगा हुआ सा।

पूर्व के स्वच्छ आकाश में सूर्योदय देखने के उद्देश्य से कई एक श्रद्धालु स्त्री-पुरुष अपने अपने घरों की छतों चढ़ आये। कुछ ऐसे भी हैं, जो बड़े आगन में खड़े होकर भगवान् भास्कर को श्रद्धापूर्वक एक लोटा जल अर्पित कर रहे हैं।

ठीक इसी समय पड़ोस के किसी घर में से एक चीत्कार चीख

सुन कर सभी चौंक पडे । ऐसा ज्ञात हुआ मानो मधुर स्वर मे बजते हुए सितार का तार किसी आकस्मिक आघात से टूट गया। देखते ही देखते सभी लोगो की आखें और कान उसी घर की ओर आकृष्ट हो गये । उनमे एक बडा-सा प्रश्न चिह्न है ।

निश्चय ही यह बाबू रामप्रताप का पुराना मकान है, जो असमय मे शोक की काली छाया से ढक चुका है । खूब याद है । उनके बेटे की बहू पिछले कई महीनो से बीमार चली आ रही है । कदाचित् उसका जीवन दीप आज बुझ गया है।

थोडी ही देर मे सशय का वह हल्का सा भाव विश्वास और निश्चय मे बदलने लगा ।

देखते-ही देखते पूरे घर मे हाहाकार मच गया । मृत्यु ने अपने भयकर झझावात से परिवार की सुख शान्ति प्राय नष्ट कर दी । अब तो छोटे-मोटे सभी के कलेजे शोकाकुल हैं अधीर हैं ।

कुछ ही देर मे श्वासोच्छ्वास को बीधकर सम्मिलित स्वर का वह रोदन दूर दूर तक गूजने लगा । स्त्री, पुरुष और बच्चो का यह क्रन्दन बडा ही करुणाप्लावित है । एक सरीखा, एक लय का, एक साथ सिसकिया भरता हुआ यह स्वर अत्यत हृदय-विदारक है । कुछ दबे और कराहते हुए गीले कण्ठ बीच-बीच मे सुनाई पड जाते हैं। शायद वे बडी आयु के रिश्तदार है जो इस असामयिक निधन पर अत्यन्त दु खी हैं ।

इस बीच शोक प्रकट करने वाले पडौसी और सात्वनादाता मित्रो की काफी भीड एकत्रित हो गई । परिवार के व्यक्तियो ने इस सवेदना और सहानुभूति के प्रति उनका हार्दिक आभार व्यक्त किया । उन्ही म से कुछ समझदार नवयुवक अपनी साईकिलें लेकर बाजार की तरफ चल पडे, जहा से वे दाह-सस्कार के लिए कुछ जरूरी सामान खरीदेंगे । अर्थी के वास्ते बास, कफन, दुशाला, रजगी और आगे आग फेंकने के लिए फूलियें लाना भी वे कैसे भूल सकते हैं ।

'मेरी कैसी लक्ष्मी सी बहू थी ।", कहते-कहते दोनों हाथों से अपने मुह को ढक कर बाबू रामप्रताप सहसा फफक पडे ।

इतने मे एक वृद्ध पडौसी दिलासा देने को आगे बढ़ा। उसने करुणस्वर मे कहा "बाबू साहिब, जरा धीरज रखिये, अगर आप ही दल छोटा करेंगे तो घर के दूसरे लोगो का क्या हाल होगा ?"

"आप अपने बेटे प्रकाश की ओर देखिये ।" द्रवित भाव से एक अन्य पडोसी भी बीच मे बोल पडा—'बेचारे की शादी हुए अभी अढाई वर्ष भी पूरे नही हुए हैं और बीच ही मे विधाता ने यह अनर्थ कर डाला ।"

'बिल्कुल ठीक कहा है आपने ।" —एक उक्डू बैठे मित्र भी सहानुभूति दिखाने की गरज से थोडा समीप सरक आये । बीडी का लम्बा सा कश लेकर कहने लगे— अब आप अपने बेटे की चिता कीजिए ।"

देखिये रोते रोते वह बेहाल हो गया है ।' यह किसी शुभ-चिंतक का भीगा हुआ कण्ठ स्वर है जो मध्य मे ध्वनित हो गया 'सचमुच दाना में बडा प्यार था ।"

यह सुनते ही विषाद का अवतार बना प्रकाश एक बार फिर जोर से सिसक उठा । घूमकर कई लोगो ने उसे सहानुभूति की निगाहो से देखा ।

इस बीच लाश का शुद्धिकरण हो जाता है । उसे नहलाकर नये कपडे पहनाये गये हैं । वह अब घर के आगन के बीचो बीच सुरक्षित रखी है, जहा से अर्थी मे बाध कर सीधे श्मशान की तरफ उसे ले जाना होगा।

विशेषकर स्त्रियों के द्वारा प्रत्येक कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो चुके हैं । लाश को गगा जल से पवित्र करके अशौच को जल्दी ही दूर कर लिया गया है ।

बहू सुहागन है, अत उसे नया जोडा पहनाना बहुत जरूरी है। मौत आने से घर और समाज के रीति रिवाज मर थोडे ही जाते हैं, वे तो अमर हैं। भले ही निर्जीव शरीर सामने रखा हो।

भारी मन से लाश की माग म गहरा सिंदूर भरा स्पन्दन-हीन पलको को काजल लगाया। सूखे ठूठ के समान निष्प्राण हाथो मे चूडिया पहनाई। लोक-लाज की परवाह करते हुए एकाध सोना और चादी का सस्ता सा गहना लाश के कान नाक म डाला, जिस पर मन ही मन उ ह खेद है। उनका वश चलता तो आखें बचा कर वे इस रस्म की पूरी अनदेखी कर जाते। लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि सभी स्त्री पुरुषो की निगाह लाश पर केन्द्रित हैं जैसे वे यहा छिद्रान्वेषण करने ही आये हैं।

कायदा तो यह है कि जीवित सुहागन की भाति लाश को भी पूरा पूरा शृङ्गार कराया जाता है फिर भी समय समय पर कुछ नियमो म छूट अपने आप ही हो जाती है। दबी जबान से प्राय विरोध होता है। इस पर समझदार व्यक्ति मौन धारण कर लेते हैं। वे अच्छी तरह जानते है कि कभी न कभी उनके घर मे भी ऐसी मृत्यु हो सकती है। तब एक उदाहरण-स्वरूप यह अच्छा बहाना मिल जायेगा। फिर मिट्टी के पीछे कौन इतने धन का अपव्यय करे। इसमे कोई बुद्धिमानी नही। एकदम मूर्खता की बात है। बस परम्परानुमोदित रीति का ही किसी न किसी तरह निभाते चलो यही ठीक है।

स्त्रियो क जमघट मे मरने वाली बहू की सगी सास काकी सास, भूया सास आदि बडी बुढियें नेत्र सुजाये हुए बैठी हैं। इनके अतिरिक्त बहू की दूर के रिश्ते की कुछ जिठानिया देवरानिया और भाभिया भी दिखाई पड रही हैं। वे सभी शोक मग्न हैं। रोने के कारण उनकी भी आखें लाल हैं। यद्यपि उनकी अस्थिर जीभ कभी-कभी फुसा-फुसाहट की हल्की सी ध्वनि कर बैठती है।

अपने क्लान्त-कातर नेत्रो को विस्फारित करते हुये प्रकाश की

भी व्यथातुर स्वर में चीख पड़ी।

"ओ, मेरी लाडली बहू! ओ, मेरी आगन की ज्योति! ओ, मेरी घर की शोभा! तू हमें छोड़ कर कहाँ चली गई — कहाँ चली गई ?।"

इसके पश्चात् उनके विलाप का स्वर पुनः अवास्तविक रूप से कर्ण-कटु एवं प्रखर हो गया। शीघ्र ही इसकी अनुकूल प्रतिक्रिया हुई, जो उस समय में आकस्मिक तथा अस्वाभाविक नहीं कही जा सकती। बात की बात में कुछ स्त्रियां अधिक निकट आ गईं और सहानुभूति शील बनकर उन्हें सान्त्वना देने की चेष्टा करने लगीं। उनके भी लगभग हृदय भर आये। सास सिर धुनकर कुछ देर के लिये रोने का जैसे सफल अभिनय करती रही।

पर्याप्त समय बीत गया। इस प्रकार की अनचाही वीभत्स और शोक विह्वल स्थिति में बैठे रहना प्रायः दूभर हो जाता है। सारा वातावरण अनायास ही असहनीय अप्रीतिकर और घृणास्पद भावना से भर जाता है। उसमें से न जाने कैसी दुर्गंध आने लगती है। शायद मौत की कालिमा अपने पीछे यही सब छोड़ जाती है।

घर भर में छाये उस स्तब्ध सन्नाटे के बीच कभी-कभी कोई एक धीमे कण्ठ से अचानक सुबक पड़ता है। इस शाप की घड़ी से उत्पन्न चिर वियोग की अपरिहार्य विवशता में जकड़े गए दिल के ऊपर कई-कई मन का बोझ सा अनुभव हो रहा है। यही दुःख और वेदना का मूल कारण है।

अकारण ही स्त्रियों के एक दल में अचानक अस्पष्ट-सी फुस-फुसाहट आरम्भ हो गई। शुरू शुरू में कुछ अनमने ढंग से दबे हुए स्वर में किन्तु फिर वह सम्भाषण तीव्र हो गई। ऐसा भान हुआ कि लम्बी चुप्पी में वे सभी धीरे धीरे ऊब और घुटन-सी अनुभव करने लगीं। इस अवधि में सामूहिक विलाप का कार्य-क्रम एक प्रकार से बंद है। अब तो वह शायद उठने के साथ ही फिर तेजी से आरम्भ होगा। उसकी प्रतीक्षा है।

"सचमुच, बहू का पदापर्ण इस घर मे बडी ही शुभ घडी मे हुआ था। इससे प्रकाश की मा को उसके रहते कोई कष्ट नही हुआ"

'अरे, उसके आगमन के बाद से तो इस घर मे दिन-दूनी और रात चौगुनी बढोत्तरी होती गई।"

ढेर सारा दहेज लेकर आई थी बहू !" एक प्रौढ महिला अपने मन मे मचलने वाले उबाल को निकाल कर ही मानी 'मैंने अपनी आखो से देखा था ।"

'बेचारी थी गऊ जैसी सीधी और भोली ।"

"रोना तो इसी बात का है।"—मध्य मे ही प्रकाश की मा अवसाद ग्रस्त नाटकीय भाव को प्रदर्शित करती हुई गद् गद् कण्ठ से बोली—'कहा खोजू उस लक्ष्मी सी बहू को ।"

उनके कथन में यदि कोई उद्रेक होता है तो वह केवल करुणा का, न कि किसी अन्य भावना का। यह उनकी मुखाकित रेखाओ से स्पष्ट हो जाता है।

चहुँ ओर शोक और विषाद की छाया पर्याप्त गहरी हो गई। घडी भर के लिये माना सभी की श्वास गति लगभग रुक सी गई। इस पर एक प्रौढ महिला दिलासा देने की कोशिश करने लगी। ये सम्हल कर धीरे धीरे कहने लगी—"प्रकाश की मा! जो चला गया उसके लिये रोना बेकार है। अब तु्म्हे अपने बेटे की तरफ और अधिक ध्यान देना चाहिये।'

'क्या मतलब ?"—प्रश्न भरी आखो से पूछकर सास ने अपने आसू रोके।

'मतलब की भी तुम ने खूब पूछी।' कुछ रुक-रुक कर अर्थ-भरी मुस्कान के बीच वह प्रौढा स्पष्टीकरण देने लगी—'मेरी दो भानजियाँ हैं खूबसूरत, जवान और पढी लिखी। उनमे से किसी को भी तुम अपने बेटे प्रकाश के लिये पसन्द कर सकती हो। तेरा भरा पूरा घर वे अच्छी तरह सम्हाल लेंगी। भले बुरे की जिम्मेदारी मैं खुद

अपने ऊपर लेती हूँ ।"

'क्या ऽ ऽ ऽ ..?"

प्रकाश की मा ने अपनी आतुर दृष्टि से एक बार आगन की ओर देखा । वहा बडी हलचल है । अभी अभी बाजार से सभी सामान आ चुका है । कुछ लोग लाश के आस पास घूम रहे हैं । एक ने पीतल के बतन म आग जलानी शुरू कर दी है । दूसरा आरी लेकर बास काटने मे जुट गया है । तीसरा अर्थी पर बिछाने के लिये घास बटोर रहा है । स्पष्ट है कि लाश उठान का काय आरम्भ हो गया ।

"तुमने कोई जवाब नहीं दिया ।"

क्षण भर पश्चात् पत्थर सी कठोर चुप्पी को तोडते हुये उस प्रौढ महिला न सास को पुन कुरेदा बोल तेरा क्या इरादा है ? मु ह मे बता तो सही ..।"

प्रकाश की मा ने उसकी तरफ केवल दृष्टि-निक्षेप किया । मुह स कुछ भी नही बोली । बेचारी प्रौढा एक तरह स निराश और उदास हो गई ।

इसी समय वहा बैठी एक वृद्धा कान के पास मुह लेजा कर धीमे कण्ठ से बोली— मेरी एक भतीजी है मेरे भाई की इकलौती बेटी। अभी अभी उसने बी० ए० पास किया है । गृह काम म निपुण देखन म सुन्दर और गुणा मे सुशील । ढर सारा दहज देगा मेरा भाई। साईकिल सिलाई की मशीन, रेडियो ग्राम, पखा, सोफा सेट और अन्य कई प्रकार की छोटी मोटी वस्तुए वह अब तक खरीद चुका है ।"

'मैं तो बीस तोले खरे सोने क गहन लूगी और साथ म एक स्कूटर ।"

अचानक प्रकाश की मा ने मुह खोला । वे गर्व पूवक फिर कहने लगी— मेरा बेटा ऐसा वैसा नहीं है ऊचे दर्जे का ओवरसियर है । कान खोल कर सुन लो । इससे अब उसकी कीमत भी बढ़ गई है, पहले वाली बात नही ।"

एकदम मानो वृद्धा घट कर रह गई । आवेश में मन ही मन बडबडाई— बडी आई है स्कूटर लेने वाली । भले ही वेट को ठीक से साईकिल चलानी आती भी न हो फिर भी ये स्कूटर लेंगी । बीस तोले खरे सोने के गहने चाहिए, चाहे खुद के घर मे इनसे चौथाई गहने भी न हो हुँम् ।"

अब व मन मार कर चुप हो गई ।

अर्थी बनकर तैयार है । दो आदमी खाली को उठा कर भीतर आगन म ले आये जहा पडित जी अन्तिम समय का पिडदान परिवार के व्यक्तियो के समक्ष मत्रोच्चारण के द्वारा कर रहे हैं । सभी के नेत्र गीले हैं । इस पर भी पूरे कार्य को विधि-पूवक सम्पन्न करने के लिये उनकी असामान्य रुचि देखते ही बनती हैं ।

लगभग चार पाच व्यक्तियो न मिलकर लाश को उठाया और उसे अर्थी पर लिटा दिया । कफन के ऊपर दुशाला डाल कर उसे रस्सिया से बाध दिया, ताकि वह बीच मार्ग मे हट न जाये ।

अभी तक ब्राह्मण देवता नारियल, गगाजल और तुलसी-पत्र लेकर कुछ शेष धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण करने म सलग्न है । शब्दो के उच्चारण करने की मन्द मद ध्वनि हिलते हुए होठो से सुनाई पड जाती है ।

प्रकाश की मा के आस-पास होने वाले वार्तालाप ने कई अन्य स्त्रियो का ध्यान आकर्षित किया । उनकी भी अचानक असाधारण दिलचस्पी बढ गई । वे सारी बातें जान लेन के लिए उत्सुक मालूम पडती है । इस कारण वे जिज्ञासावश उनके अधिक समीप आ गई । उनम स एक बुढिया अनुकूल अवसर देखकर धीमे कण्ठ स बाली "मेरे देवर की भी एक लडकी है । मैं समझती हूँ कि वह प्रकाश के लिय बिल्कुल ठीक रहगी ।"

'कसे ?" प्रकाश की मा ने प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी आर निहारा ।

'वे अच्छे पसे वाले हैं। इसके सिवाये वे ठेके का काम भी करते हैं, जिसमे लाखों कमाते हैं।"

अच्छा।" सास का प्रलोभित मन हठात् मचल गया।

वे मुह मागा सोना देंगे और स्कूटर भी । वे यहा तक कहते हैं कि अगर सौभाग्य से अच्छा घर वर मिल जाय, तो दहेज मे एक सुदर सा मकान भी देंगे ।"

"अरे वाह ! ऐसा !"

सास के मुह म पानी भर आया। कुछ देर के लिये आगन मे पडी बहू की लाश एकाएक उनके दृष्टि-पथ से ओझल हो गई। अब तो उसके स्थान पर नय जोडे मे सुशाभित नई बहू की सजीव मूर्ति सामने आ गई, जो ढेर सारे गहना से लदी घूघट काढे गृह प्रवश की रस्म पूरी कर रही है। वहा उसे नये हर्षोल्लास के बीच उचित अधिकार मिलेगा। नई मर्यादा से अलकृत एक नई प्रतिष्ठा भी मिलेगी।

'पर एक बात है, जो ।"

बुढिया के इस अधूर वाक्य का स्वर अनावश्यक रूप से कुछ लम्बा हो गया, जो एम समय म बिलकुल उचित जान नही पडा।

प्रकाश की मा सहसा चौकन्नी हो गई। इस पर भी उसका लोभी मन किंचित् सदह और अविश्वास का भाव लकर अधैय से पूछ बैठा—'क्या बात है ?"

'ऐसे ता कोई विशेष बात नही है, फिर भी भी ।" बुढिया ने अपनी बात बीच मे ही आधी छोड कर एक बार अपनी सशकित दृष्टि से आस-पास देखा तत्पश्चात् कहने लगी फिर भी मैं यह साफ कह देना चाहती हूँ कि यू वह लडकी ज्यादा पढ़ी लिखी नही है और वह एक आख स भेंगी भी देखती है ।"

'बस इती सी बात है ।'

सास का प्रतिक्रिया विहीन मुख थोडा टेढा हो गया । अब वह निर्निमेष दृष्टि से आगन मे रखी अर्थी की ओर ताक रही हैं, जिस पर अब ताजे फूल बिखरे पडे हैं । लगता है अर्थी उठाने का समय लगभग आ चुका है। यह आगन मे खडे लोगा की बातचीत से स्पष्ट हो गया ।

उधर से ध्यान हटाकर प्रकाश की मा जल्दी मे बोली—"मुझे लडकी पस द है । बस तुम अपने देवर से बात पक्की कर कर लो । कि तु याद रहे मैं स्कूटर और मकान के साथ साथ पूरे बीस तोले खरे सोने के गहनो से एक तिल मात्र भी पीछे नही हट्ट गी हा SSS ।'

अरे, नही । मैं वा दा ।"

ईसी समय आगन मे से अर्थी उठी स्त्री-बच्चो के सम्मिलित कण्ठों का रुदन पूरे घर मे अनुगू ज पैदा करने लगा । इन सबके ऊपर प्रकाश की मा का हृदय विदारक स्वर सुनाई पड जाता है, जो सहज ही मे पहचाना जा सकता है ।

"ओ, मेरी लक्ष्मी बहू ओ, मेरी घर की लाज ओ ।"

कि तु अर्थी पर बिखरे फूल अब मुस्करा रहे हैं ।

●

प्रकृति से काफी प्रभावित हैं । किसी भी लडके में इतना साहस नहीं कि उससे कोई छेडखानी करले । क्या मजाल है, कोई उसकी तरफ आख उठाकर भी देख ले । जरा सी बदतमीजी पर पर कई बार सरे आम सडकछाप मजनूओ का पानी उतार चुकी है। कॉलेज का नवयुवक वग उसके नाम से थर्राता है ।

इतना परिचय मिल जाने के पश्चात् उसके यहा आने से पूव ही अपनी भूमिका निश्चित करली । किस प्रकार बातचीत करेगा या कसे व्यवहार करेगा यह सभी कुछ वह पहले ही तय कर चुका है । इसस कही भविष्य मे किसी भी तरह की अडचन पैदा न हो,यह आशका कभी की खत्म करली गई है । इसी सन्दर्भ म सतोष से अधिक से अधिक दूर रहने का भी उसने मन ही मन सकल्प ले लिया है । अच्छा है, अनावश्यक रूप से अकारण ही परस्पर कोई टकराव नही हो।

यहा आते ही सवप्रथम जीजी से भेंट हो गई । वे प्रसन है । यू भी वह पहलीबार यहाँ आया है, अत उन्होने वडे उत्साह से उसका स्वागत किया । घर के हाल चाल पूछे । माताजी द्वारा भिजवाया गया सामान उनके हवाले करके वह अपने ठहरने के कमरे का निरीक्षण करने लगा।

जब वे वापिस लौटने लगी तो बोली— सन्तोष कॉलेज जाने की तैयारी कर रही हैं पहले उसस तुम्हें मिला दू ।'

लेकिन उसने कोई विशेष उत्सुकता प्रकट नही की । वैस ही कह दिया—'जसी तुम्हारी मर्जी ।"

कुछ ही देर मे व हसती हुई उसे खीच कर ले आइ । सन्तोष तो जसे लजीली-शर्मीली बनी हुई अपने आप म सिमट सिकुड रही हैं। नजरें नीची है, माना एक-एक कदम को नाप कर चलना जरूरी है । सामान्य लडकियो की तरह एक सकुच भाव मुख पर लाकर वह चुप-चुप सी है ।

सामने आकर जीजी उल्लासित कण्ठ से परिचय कराने की

मुद्रा मे बोली—"स्वरूप, ये मेरी ननद स तोष   और स तोष, यह मेरा छोटा भाई स्वरूप ।"

इसके पहले स तोष कुछ बाले, उसने अभिवादन की भगिमा मे कहा 'नमस्ते !"

'अब मैं चलू ।" जीजी तनिक व्यस्त स्वर मे बोली—"नीचे ढेर सारा काम पड़ा है । मैं जब तक चाय लेकर आऊ, तुम दोना आपस मे बातें करो ।"

वह जैसी शीघ्रता मे आई थी, वैसे ही वापिस लौट गई ।

घड़ी भर के लिये कमरे मे सन्नाटा सा छा गया । ऐसा लगा माना उस स्तब्ध वातावरण मे दो पत्थर के निर्जीव बुत खडे हैं ।

फिर झिझक के साथ स तोष ने गदन ऊपर उठाई और अपने दोनो हाथ जोड दिये ।

न म स्ते !"

स्वर जरूरत से ज्यादा मीठा है, शब्दो से ऐसा ही मालूम दिया ।

सामने खडी इस रूप गर्विता को स्वरूप अब टकटकी लगाकर देखने लगा । उसकी दृष्टि मानो स्थिर हो गई । स्पष्ट है कि उसका सौदय, उसका रग और उसकी चितवन को किसी भी प्रकार का मेकअप करने की कोई आवश्यकता नही । तराशे हुये होठ कुछ बोलना चाहते हुये भी खुल खुलकर फिर बार-बार बद हो जाते हैं । पतली सी नाक और उस पर वे मम स्पर्शी आखें ! इस गोल चेहरे पर इतनी बडी आखें भगवान ने पता नहीं किस तरह बिठाई होगी ।

कुछ देर तक वह विस्मय से सोचता रहा ।

ठीक कुछ एसा ही हुआ जैसे एकाएक तेजस्वी प्रकाश पर नजर पड जाने के कारण नेत्रों मे अजीब किस्म की चकाचौंध भर जाती है । औसत कद, स्वस्थ शरीर और छोटे घने घु घराले बाल, सभी कुछ उस असाधारण सु दरता प्रदान करते हैं । इन सबसे अलग उसके गौरवर्ण मुखडे पर लावण्य की कोमल दीप्ति की अपेक्षा दर्प का भाव परिलक्षित

होता है । वह मन को भाता है—दिल को अच्छा लगता है । उसके भीतर कुछ शब्द अपने आप मचल गये—'लाल गुलाब   ला
ल   गुलाब   ।"

अपनी ओर लगातार स्वरूप को देखते देख सन्तोष ने एकदम जैसे आहत अभिमान से मुह फेर लिया । तत्क्षण ही नीची निगाह किये किये उसने आहिस्ता से कहा—"अच्छा तो मैं चलती हूँ   ।"

न ठीक से मुलाकात ही हुई और न अच्छी तरह दीदार हुआ ।

पर तु दूसरे दिन एक ऐसी अवांछित और अप्रिय घटना घटित हो गई जिसन सब कुछ उलट कर रख दिया। इसके बाद किसी भी प्रकार की सदभावना और सहृदयता की आशा करना व्यथ है । उसकी बेरुखी ने बात करन की हिम्मत ही तोड दी । अलबत्ता हिकारत से भरी जलती नजरो का उसे पहले-पहल परिचय मिला । इसके बाद प्रभाव से घनिष्ठ सम्पर्क बढाने की सम्पूण चेष्टायें भी प्राय नष्ट हो गई ।

असल म बात यह हुई कि सन्तोष नहाकर बाथरूम से बाहर निकल रही थी । उसके भीगे वस्त्र पर ढीली-ढाली धोती लिपटी हुई थी । उसमे से अगो का मनोहर उभार झाक रहा था । अकस्मात् ही उधर से स्वरूप का निकलना हो गया । बस उसकी दृष्टि अटक गई । चिकने कपोल और स्वप्नो म तैरती आखें उसे बडी विचित्र सी लगी । बिखरे गीले बालो के नीचे चेहरे पर सौ दर्य की ऐसी अनोखी और अनुपम छवि चमक रही है जिसके दशन स्वरूप ने आज प्रथम बार किये हैं । कदाचित् ऐसे समय मे ही एक अनजानी-सी आत्मीयता जन्म लेती है एक अज्ञात अनुराग का भाव एसी अस्त व्यस्तता के कारण ही उत्पन्न होता है ।

हटाना चाहकर भी वह अपनी दृष्टि उधर से हटा न पाया ।

दूसरी तरफ सन्तोष का गोरा मुखडा एक क्षण मे गुस्से से लाल हो गया । भला वह इस प्रकार की बदतमीजी कैसे सहन कर सकती थी। उसने घृणा मिश्रित व्यग से कहा—' निर्लज्ज कहीं के   ।"

और वह फुर्ति से अपने कमरे में चली गई ।

स्वरूप को हठात् अन्दर ही अन्दर गहरी ठेस लगी । ऐसा ज्ञात हुआ, मानों बजते हुये सितार का तार अचानक टूट गया । नव-विकसित कली जैसी भावनाओं को किसी ने बेरहमी से मसल दिया । अपने प्रति किये गये तिरस्कार का स्पर्श पा वह अपमान की यन्त्रणा से क्षुब्ध है, हतोत्साहित है, अशान्त है, निराश है !

जैसे-तैसे उसने इन्टरव्यू दिया । इसके पश्चात् वह घर लौटने की तयारी करने लगा ।

सुनते ही जीजी चकित रह गई। उन्होंने कहा— 'इतनी जल्दी ? अभी तो तेरे जीजाजी भी लौटकर नही आये। क्या उनसे मिलना जरूरी नही ?"

इसके उत्तर मे स्वरूप क्या कहता ! गर्दन लटकाकर चुप हो जाने के अतिरिक्त उसके पास अन्य कोई विकल्प नही है ।

'अभी तुम्हारा जाना नही होगा ।'

यह बडी बहिन की आज्ञा है, जिसे टालने की हिम्मत उसमे कतई नहीं ।

परन्तु जीजी यह बिल्कुल नही जानती कि उनके घर मे ही उनके प्रिय भ्राता के दिल पर क्या बीत रही है ? किसी को नजर भर देखना यहा अक्षम्य अपराध है । भावनाओं की ऐसी कटु उपेक्षा न तो आज तक उसने कभी देखी है और न कभी सुनी है । उस दिन की वे अगारो के सदृश्य जलती निगाहो को अभी तक स्वरूप भूला नहीं है जिन्हें बडी मुश्किल से वह सीने पर झेल पाया था । इस आत्म हीनता से भरे वातावरण मे अब तो उसका दम घुटता है जी घबराता है ।

आधी आने की प्रबल सम्भावना को देखते हुये जिस प्रकार शतुर्मुर्ग रेत मे गदन दबाकर आखें बद कर लेता है, उसी स्थिति म आज स्वरूप अच्छी तरह पहुँच गया है ।

वसे भी वास्तविकता को अस्वीकार करते हुये मानसिक स्तर

पर उत्तेजना को बनाये रखना बुद्धिमानी की निशानी नहीं हैं। इससे हीन ग्रंथियें अत्यन्त ही तनाव-पूर्ण हो जाती है और वे भीतर ही भीतर अनावश्यक कुण्ठाओं को जन्म देती हैं।

बस यूं ही कुर्सी मे बैठा हुआ है स्वरूप, एक तरह से खाली और निढाल। इस कमरे के परायेपन को अपने चारो ओर लपेटे हुये उदास-सा, अप्रासंगिक-सा दरवाजे के बाहर आहट का आभास पाते ही वह एकाएक सतर्क हो जाता है सावधान हो जाता है। यद्यपि इस समय उसे किसी की प्रतीक्षा नहीं है और न ही वह किसी आने वाले के सम्बन्ध मे कुछ सोच रहा है।

लेकिन इस अप्रत्याशित आहट ने उसके मन मे किंचित भ्रम सा उत्पन्न कर दिया। उसके होंठ क्षण भर मे एक खामोश और खुश्क हंसी मे फैल गये।

अगले क्षण सतोष एक चाय की प्याली लेकर सशरीर उपस्थित हो गई।

उसके नेत्र सहसा अविश्वास और आश्चर्य से कपाल पर चढ गये। सारी भ्रान्ति मिट गई। अन्दर ही अन्दर आशा के विपरीत एक हलचल सी होने लगी। एक सुशील और सरल लडकी की मनोहर तस्वीर उसकी कल्पना मे घूम गई। उसके मन म एक वाक्य मद-मन्द ध्वनि करने लगा—'कभी-कभी ऐसा भी होता है ।"

अपनी तरफ हैरानी स स्वरूप को देखते हुये सतोष किंचित् मुस्कराई। प्याली को मेज पर रखकर वह धीरे से बोली—"बैठ जाऊ ?"

'जी हां ! बैठ जाइये ।"—स्वरूप ने बहुत ही शराफ्त से उत्तर दिया।

पास की कुर्सी को खिसकाकर वह उस पर इतमीनान से बैठ गई।

स्वरूप की समझ मे कुछ भी नहीं आया। चित्र का दूसरा

पहलू अभी तक धु घला है । वह चाय पीते-पीते सोच रहा है कि क्या वह यही लडकी है, जिसने पिछले दिन उसका अपमान किया था और वह आज भी उसकी दारुण यन्त्रणा भोग रहा है ।

'आप चुप क्यो है ?" एकदम सीधी दृष्टि स्वरूप के चेहरे पर डालकर सन्तोष ने पूछा ।"

कमाल है । आज यह चमत्कार कैसे हो गया ? कही वह जाग्रत अवस्था मे स्वप्न तो नहीं देख रहा है ? फिर भी स्वरूप चुप रहा ।

"मैंने तो आपके बारे मे सुना है कि आप बडे हसमुख और मिलनसार हैं, किन्तु मुझे आप ऐसे नही लगे ।"

अनजाने ही लडकी के कण्ठ में व्यग प्रतिध्वनित हो उठा ।

अब स्वरूप तनिक सम्हल गया । कुछ तो व्यग का प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पडा है और कुछ उसके पिछले दुर्व्यवहार को स्मरण करते-करते उसकी मुख-मुद्रा अत्यन्त कठोर हो गई । वह अपने स्वर को सयत करने के प्रयास मे धीमे कण्ठ से बोला— 'असल मे आपसे बात करने की हिम्मत नही पडती ।"

"क्यो ?"

"डर लगता है ।"

'मुझ से ?"

वह हठात् खिलखिला पडी । ।

'हसिये मत ।"

अनचाहे स्वरूप के शब्दो मे सख्ती आ गई । शायद उसकी इस हसी ने उसे एकदम उत्तेजित कर दिया ।

लडकी अचानक बुझ गई । लगा मानो किसी ने जलते हुये दीपक की बाती नीचे खींच दी हो । उसने अपनी बडी-बडी आखो मे मासूमियत और दहशत का भाव लेकर स्वरूप को निहारा ।

जाने क्यो, ये आखें स्वरूप को भावनात्मक स्तर पर भी प्रभा-

वित नहीं कर सकी । आश्चर्य । इसके विपरीत वह ज्यो-ज्यो उनकी गहराई मे डूबता चला गया त्यो त्यो एक अवांछित और अज्ञात क्रूर भाव उसके हृदय मे भरता चला गया । उस पर किसी का भी जैसे बस नहीं ।

वह चोट करने की नियत से बोला—"भगवान ने ये मोटी मोटी आखें सिफ बेरुखी और हिकारत से देखने के लिये नही बनाई हैं ।"

"क्या ?"

इतना भर सुनना था कि संतोष भक से जल उठी । पल भर मे ही त्रस्त एव आशंका का वह भाव अदृश्य हो गया । तिलमिलाकर उसने पूछा—"क्या किसी लड़की को घूरकर देखना शराफत है ?"

आवेश मे उसका समस्त गात थर-थर कापने लगा । उसका चेहरा तमतमा आया और उस पर घृणा एव तिरस्कार की रेखायें घनाभूत हो गई ।

स्वरूप इस भाव परिवर्तन से सहसा हतप्रभ रह गया । उससे एकाएक जवाब देते नही बना ।

इस निर्मम चुप्पी के कारण संतोष जहरीली नागिन की तरह बल खाने लगी । उसने फन ऊ चा किया और तेजी से फुफकार उठी "याद रखिये जो आज घूरकर देखेगा, वो कल फब्तियाँ भी कसेगा । फिर वह परसो राह चलते छेड़खानी भी करेगा । क्या यह आवारागर्दी और लफगापन नही है ?"

दिमाग मे खलबली मचाने वाला प्रश्न सुनकर स्वरूप कुछ देर चुप रहा, फिर अपने आपको सुस्थिर करत हुय उसने उत्तर दिया—'निश्चित रूप से । किन्तु किन्तु !"

इस 'किन्तु' पर आकर रुकते देख जरा नाराजगी म लड़की जोर स बोली—'कहिये, आगे कहिय । रुक क्या गय ?"

' किन्तु प्रत्येक व्यक्ति के लिये आप एसा नही कह सकतीं ।'

'क्या नहीं कह सकती ?"

"इसलिये कि सुन्दर वस्तु को देखना कोई अपराध नही ।"

'गलत । मैं नही मानती ।"

म तोष की कण्ठ ध्वनि प्रखर हो गई । इस बीच उसकी सुन्दर आखो की जलती दृष्टि मूख तीर के समान स्वरूप के कलेजे के आर पार निकल गई । इस पर वह विचलित नही हुआ ।

कुछ पल ठहर कर वह पुन कहने लगा—' मान लीजिये, आपके बालो की सु दर वेणी बनी है और उसम मोगरे या चमेली की कालियो का गजरा शोभा पा रहा है अगर उसकी तारीफ करते करते कोई अपनी उगलियो से उसे छू भी ले तो इसम हज क्या है ?'

'मैं मैं इसके पहले ही ।''

' बस बस रहने दीजिये ।''

लडकी को अत्यधिक उत्तेजित देख बीच मे बाधा देकर स्वरूप बोला — यही आपके हृदय मे झूठे अभिमान का राक्षस घुस बैठा है । यह सच्चरित्रता और नैतिकता की डीग हाकता हुआ स्नेह के स्थान पर घृणा, प्रेम के स्थान पर सन्देह और सदभावना के स्थान पर अविश्वास को जन्म देता है । अपने ही अहं के प्रभाव से निर्मित उलझन के चक्कर मे आप बुरी तरह फस गई है याद रहे ।''

कुर्सी के हत्था को अपनी मुट्ठिया म कस कर दर्प-युक्त नेत्रो से आग उगलती हुई सतोष चिल्लाई— 'अब आगे कुछ भी मत कहिये, वरना वरना ।''

वह रोष के अतिरक मे थर थर कांप रही है, यह स्वरूप ने भली-भांति देख लिया । फिर भी यह चेतावनी बिल्कुल बेअसर सिद्ध हुई । इस पर वह निरुद्विग्न है निद्वंद्व है । इस धमकी के आगे निभय बनकर वह बोला - जी नहीं । मैं आज अपनी बात कहकर रहूँगा, चाहे इस पर आप बुरा माने या नाराज होने की तकलीफ करें ।''

तनिक ठहरकर उसने कहना शुरु किया—' आप मे कुछ ऐसा है जिसे लोग देखते हैं । निश्चय ही ये बडी बडी आखें बहुत सुन्दर

है । इन्हे किसी किस्म के काजल और सुरमे की जरूरत नहीं । होंठ रसीले है, इन्हे भी किसी तरह की ललाई की अपेक्षा नहीं । यू यह पूरा चेहरा कमल के समान कमनीय है कोमल है इसे मेकग्रप की भी आवश्यकता नही । इन बालो को देखिये । घुघराले होने के कारण छोटे छोटे मालूम पडते है, किन्तु ऐसे सकोची है जो फैलना नहीं चाहते कधो पर उन्मुक्त भाव से लहराना नही चाहते । देखिये, मैं इन्हे छूने जा रहा हूँ । अभी पता लग जायेगा कि इससे इनका सौन्दर्य कम होता है या ।'

इतना सुनते ही मानो धीरज का बाध टूट गया । सतोष आग-बबूला हो गई। इस धृष्टता पर वह आग्नेय नेत्रो से एक पल मे ही जैसे स्वरूप को भस्म कर देगी, ऐसा ही ज्ञात हुआ ।

इससे पेश्तर वह कोई अनुचित हरकत कर बैठता, सतोष तन कर खडी हो गई । स्वरूप के बढे हुये हाथ को रोकने के प्रयास मे उसका हाथ उठ गया ।

'बदतमीज बदमाश लोफर ।"

परन्तु इस बीच काच की चूडियो से भरी नाजुक कलाई स्वरूप की बलिष्ठ मुट्ठी मे आ गई । धीरे धीरे कसाव बढता गया ।

"इतनी-सी बात पर इतना गुस्सा । अगर आप से मेरी शादी । हो जाय तो अभी बगैर किसी तरह की आनाकानी के आप अपना सिर झुका लेंगी वाह खूब ! जिसे कभी चाहा नही, देखा नही समझा नही छूआ नही उसे पति के सारे अधिकार बेहिचक दे देगी ! उसपर तन मन ही नही, बल्कि अपने क्वारेपन की निशानी अस्मत भी लुटा देंगी । वाहरी आपकी शराफत ! हो सकता है कि वह आज तक आपके विचार से बत्तमीज और बेशाम भले हो रहा हो । उस पर अपना स्वप्नो से भरा प्यार नौछावर कर देगी ?'

और उसने विद्रूप से भरा ठहाका लगाया ।

अपनी हसी को रोक कर वह फिर कहने लगा —" पर यू

शादी से पहले स्त्री पुरुष के बीच जो नैसर्गिक और स्वाभाविक मैत्री तथा स्नेह का सम्बन्ध होता है उसकी आप निरंतर अवहेलना करती जायेंगी। आखिर क्यों ?—मुझे यह पूछने का पूरा-पूरा हक है। मर्यादा और नैतिकता के नाम पर यह उस पुरुष का तिरस्कार है, जो आपका पिता है भाई है और निकट भविष्य में उसकी जाति में से ही कोई आपका प्रेमी अथवा पति बनेगा। निश्चित रूप से आप के बच्चों का बाप भी बनेगा। फिर पुरुष मात्र से यह घृणा ।"

आई ई ई ।"

इस लम्बी सिसकी के बाद संतोष अचानक टूट गई। चट चट की आवाज के साथ चूड़ियों के टुकड़े फर्श पर गिरने लगे। उनके ऊपर खून के कुछ छींटें भी आ गिरे।

स्वरूप सहसा घबराया। उसने कसी हुई कलाई तुरंत छोड़ी। उस पर छाया हुआ क्रोध का उन्माद क्रमशः उतरने लगा। इस बीच आत्म ग्लानि की त्वरित लहर उस के पूरे अंतस में दौड़ती चली गई।

●

उसने मुझे बुलाया था

"मोहनी देवी !"

अचानक मैं चौंक पड़ती हूँ, जैसे अदालत के चपरासी ने मुझे पुकारा हो।

पास बैठी नौकरानी से मैंने पूछलिया— 'क्या पेशी के लिए चपरासी ने मुझे अभी पुकारा है ?'

गहरी दृष्टि से देखकर नौकरानी ने मेरी उद्विग्नता को ताड़ लिया, इस पर भी उसका कण्ठ स्वर सयत है—स्वाभाविक है।

'कब ?'

'अभी।'

"जी नहीं। वकील साहब कह गए हैं कि जब जरूरत पड़ेगी तो

मैं खुद बुलाने आजाऊंगा।"

'तो फिर मुझे ।"

मेरा स्वर बीच ही मे टूट गया।

नौकरानी के होठो पर हल्की सी हसी की छाया नाच गई।

'आपको भ्रम हुआ है ।"

"भ्रम !"

नौकरानी के कथन ने मुझ पर गम्भीर प्रभाव डाला। इस समय जैसी अशात यथा अस्थिर मनोदशा है उसमे प्राय यह सम्भव है। इसे अप्रत्याशित एव आकस्मिक भी नही कह सकते।

अदालत के बाहर बरामदे मे मैं चुप चुप-सी बैठी हूँ—एकदम उदास और मौन मुख, जैसे कोई जिज्ञासा न हो। अच्छी खासी भीड है। पेशिया आरम्भ हो गई हैं जिज्ञासा।

भीड मे कुछ परिचित चेहरे हैं, कुछ अपरिचित मुख! पास आकर वे यहा आने का कारण पूछते हैं। अन्य अस्पष्ट तथा रहस्यमय सकेतो द्वारा मेरी उपस्थिति के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त कर लेना चाहते हैं। इन सबकी दृष्टि व्यगात्मक है दिल मे शूल सी गड गड जाती है।

इधर से ध्यान हटाकर मैं अब अन्तमुखी हो गई हूँ। यह प्रतिक्रिया स्वाभाविक हैं—मनोकूल है। अत सलिला में ज्वार की सम्भावना अत्यन्त तीव्र हो गई है, उसकी उद्दाम तरगो पर नियन्त्रण रख पाना अत्यन्त दुष्कर है।

धीरे धीरे अतीत का वह सारा घटना चक्र दुस्वप्न की भाति मेरे मन-चक्षुओ के आगे घूम गया, जिसके अन्तराल मे सुख-चैन सर्वथा नष्ट हो चुका हैं। इस चिता-जनक घटना चक्र से प्रेरित, प्रभावित और पोषित मेरा सरल तथा सीधा जीवन आज सवग्रासी एव सवनाशी भवर-जाल म फसकर रह गया है, जहा केवल जल समाधि लेने की दुराशा मात्र ही प्रबल होती है। मुक्तिपथ की खोज की सम्भावना

कठिन है ।

सर्व प्रथम मेरे स्मृति-पटल पर उसकी हसती हुई मुख मुद्रा उद् भासित हो गई। क्रमश उसकी पूरी आकृति सामने खड़ी मुझे आकर्षित कर रही है । लम्बा छरछरा वदन, गोरा रग और घुघराले बाल ! मुख पर खिलती कलियो की सी मोहक मुस्कान ! होठो पर स्वप्निल और मादक हसी ।

"बाढ पीडितों के लिए कालेज मे छात्रो द्वारा एक सास्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है, उसमे आपका सहयोग प्रार्थनीय है।"

एक दिन आकर उसने मुझे अचानक चकित कर दिया । हाथ म टिकटा की कापिया हैं और हैं निमन्त्रण पत्र !

मैंने असमर्थता प्रकट की । लेकिन वह निराश नहीं हुआ । उसने विनम्र स्वर मे कहा, 'देखिये, जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के पीछे कोई न कोई आवश्यक कार्य लगा ही रहता है, परन्तु इसका यह अर्थ नही कि आप व्यक्ति—गत कार्यों के निमित्त अन्य सामाजिक कार्यों के प्रति उदासीन अथवा निष्क्रिय रहें। इस प्रकार की मनोवृति तो व्यवहार शून्यता एव असामाजिकता की द्योतक है ।"

किन्तु समय का अभाव ।"

मेरे असमाप्त वाक्य के बीच ही म वह बोला—"आखिर बाढ-पीडितों के प्रति भी हमारा कोई मानवीय कर्त्तव्य है। केवल अपनी ही स्वार्थ-पूर्ति मे लिप्त रहना तो एक प्रकार की क्षुद्र एव सकीर्ण मनोवृति है, साथ ही यह कुत्सित भावना की सूचक भी है और और !"

अन्त म आकर वह लजा गया । उसका यह कथन जहा मर्यादा का उल्लघन है—वहा शिष्टाचार के साधारण नियम का भी अतिक्रमण है । शायद आवेश मे इधर उसका ध्यान गया होगा और अब अपनी भूल पर मौन रह कर वह मन ही मन मे पश्चाताप कर रहा है । यह उसके मुखाकित भावों से स्पष्ट ज्ञात हो रहा है ।

यह पहली मुलाकात थी ।

"नमस्ते !"

दूसरी मुकाकात का प्रारम्भ शायद किसी शुभ घडी मे नही हुआ । इसके अतिरिक्त उस समय मेरी मन स्थिति अनावश्यक रूप से अस्त व्यस्त भी हो सकती है । जाने कैसे मैंने उसके अभिवादन की निमम उपक्षा कर दी ।

उसने इसे लक्ष्य किया । उसका सारा उत्साह एकदम बुझ गया । वह विषण्ण मुख लटकाये-लटकाये चुपचाप लौट गया ।

लेकिन यह क्या ? मैं चाहकर भी सुस्थिर नही रह सकी । एक विचित्र प्रकार की बेचैनी से मैं आहत हूँ—उद्विग्न हूँ । हृदय मे चुपके से कोई कह जाता है—तेरा व्यवहार भद्रता के अनुकूल नही हैं, विवेक—सम्मत भी नही कह सकते । स्त्री सुलभ तो है ही नहीं । इस उपेक्षा मे तेरे ग्रह की परितुष्टि मात्र है जो सवथा असगत है—अविवेक पूर्ण है ।.. अब ?

कुछ दिना के बाद अचानक उससे एक और भेंट हो गई । वह सडक पर से जा रहा था और मैं नीचे के कमरे मे खडी खडी खिडकी मे से बाहर का दृश्य देख रही थी ।

वह रुक गया । उसने सहमी सहमी सी दृष्टि से मेरी ओर ताका । हालाकि कुछ अवश सी झिझक और न सह सकन वाली लज्जा उसमे अभी तक शेष है जो शायद मेरे व्यवहार क परिणाम स्वरूप उत्पन्न हो गई है ।

पता नही किस आकस्मिक विचार तरग, अप्रत्याशित मानसिक हर्ष वेग अथवा हृदय की किस उल्लसित भावना से प्रेरित हो मैं एकदम खिल उठी । बस मेरे अधरो पर सहसा हृदयग्राही मुस्कान नाच उठी ।

अब उसमे अद्भुत परिवतन हो गया । उसकी वह अन्यमनस्क भाव भगिमा और सहमी सहमी सी मुख मुद्रा एकाएक हास्य पूर्ण और मधुर हो गई । उसके होठो की मुस्कान इतनी प्यारी, इतनी मोहक

और इतनी सुन्दर कि किसी भी दर्शक का हृदय उस पर मुग्ध हो सकता है, रीझ सकता है ।

'ओह !"

बस, इसके पश्चात् अनजाने में अनचाहे ऐसा कुछ चला कि हम दोनों उसके जाल में उलझ फँस गये । वह आता है और मेरी ओर मन मोहक मुस्कान के साथ देखता रहता है । प्रतिक्रिया-स्वरूप मैं परिणाम से अनभिज्ञ होकर हल्की सी हँसी अथवा मंद-मंद मुस्कान से उसका स्वागत करती हूँ । संकोच अथवा झिझक का कोई भी भाव धीरे धीरे मेरी चेतना से विलुप्त होता गया । फिर लज्जा का ढोंग सा क्षण भी अवचेतन मन से अन्तत समूल नष्ट हो गया । मैं इस प्रकार साधारण व्यवहार समझ बैठी हूँ, मगर इसने जिस दुर्भाग्य पूर्ण परिस्थिति और हृदय हीन वातावरण की सृष्टि की है उसकी सहज ही में कल्पना नहीं की जा सकती ।

और मैं उस दिन अचानक चीख पड़ती हूँ ।

इस विडम्बनापूर्ण स्थिति अथवा संकटापन्न अवस्था में पड़ कर किसी का भी धैर्य और साहस आतंकित एवं भयभीत हो उठता है । इस पर मैं तो एक स्त्री हूँ प्रतिरोध शून्य, जो सहायक के अभाव में चीखने चिल्लाने के अतिरिक्त कुछ कर ही नहीं सकती ।

पता नहीं कैसे उसने अपना बौद्धिक एवं मानसिक संतुलन खो दिया । बिखरे बाल, अस्त-व्यस्त कपड़े, और लाल-लाल आँखें । विकृत मुखाकृति से प्रकट हो रहा है कि वह कई रातों से सोया नहीं है । कोई बात है जो शूल के समान उसके दिल में गड़ रही है । उसे लेकर ही वह परेशान एवं अशांत है । उसका सूखा चेहरा और क्रूर भाव प्रच्छन्न रूप से इस मान्यता की पुष्टि करते हैं ।

अपने सहज स्वभाव के निर्देशानुसार मैं मुस्करा कर उसके आगमन का मौन अभिनन्दन करती हूँ, मगर इसके विपरीत उसका उत्तर उफ !

एक क्षण का विलम्ब किये बिना ही वह अकस्मात् आवेश मे उछला और खिडकी में से कूद कर मेरे कमरे मे आ धमका। मैं एक तरह से स्तभित रहकर इस नई स्थिति को समझने की ठीक ठीक कोशिश करू, इससे पहले ही उसने मुझे अपने मजबूत आलिंगन-पाश मे कस लिया।

"मेरी हृदयश्वरी ! अब मैं अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता — नही कर सकता। तुम मेरी हो।"

मैं एक भयातुर चीख के बाद आप ही आप अचेत हो जाती हूँ।

मेरे मूर्छित हो जाने के कारण उस घटना ने एक नया रूप ले लिया। कदाचित नौकरानी ने मेरी चीख सुन ली थी और कमरे मे पहुँचकर उसने भयभीत कण्ठ से शोर मचा दिया था। बात की बात मे मोहल्ले के कई व्यक्ति एकत्रित हो गए। उन्हें बात समझते देर न लगी। तैश मे आकर "मजनू साहब" की अच्छी पूजा करने लगे। उन्हें पूछने वाला कौन है ! उनकी क्रोधोत्तेजक वाणी और रोष पूर्ण मुद्रा को रोकने की सामर्थ्य भी अब किस मे हैं।

तब वह भी मार खाते खाते बेहोश हो गया। प्रतिरोध का तो प्रश्न ही नही उठता ! वह एक अकेला और पीटने वाले इतने सारे लोग ?

उस पर बलात्कार करने के प्रयास का आरोप लगा कर मामला अदालत मे चला जायेगा यह प्राय निश्चित है। कई दफा भीड मे सयोग से कचहरी के आदमी भी मिल जाते हैं, जो अपराधी को अक्सर कटघरे तक खीच कर ले जाते हैं। दुख तो इस बात का है कि उसने मेरी प्रतिष्ठा को धूल मे मिला दिया। मेरी नतिकता और चारित्रिक पवित्रता को कलकित करके मेरे नारीत्व के प्रति उसकी घष्टता ने असहनीय सदेह उत्पन्न कर दिया। मैं किसी का मुह दिखाने योग्य नही रही। आज मेरी मर्यादा सवथा हास्यास्पद है—सदिग्ध है। खेद के साथ कहना पडता है कि जहा उसके साथ मैंने सद्भावनाओ से

परिपूर्ण सौजन्य का व्यवहार किया, वहां उसने दुर्भावना का परिचय देकर सम्पूर्ण नैतिक सिद्धांतो का उपहास उडाया है ।

अब वह किसी भी प्रकार की कृपा अथवा दया का पात्र नहीं । वह किसी भी सहानुभूति की, जो मानवीय संवेदना से अनुप्राणित है, अपेक्षा नही रखता । नि सदेह वह इन मानवीय भावो से वचित है । उसके लिए सर्वथा वह अनुपयुक्त है—अनुपयोगी है ।

उसने मुझे बुलाया था ।"

इस असम्भावित अभियोग को सुनकर मैं एक दम सन्नाटे मे आ गई । उसने पुलिस मे यही बयान दिया है और कोर्ट म भी यही देगा, इसमें कोई शक नही । भला, मैं उसे क्यो बुलाने लगी । इस मिथ्या और निराधार आरोप ने तो मेरे असयमित क्रोध को अधिक उग्र एव तीव्र कर दिया ।

"चलिये ।"

इस बीच वकील साहब ने आकर कहा तो मैं चौंक कर उठ खडी हो गई ।

मैंने सप्रश्न दृष्टि से उनकी ओर देखना चाहा । वे गम्भीर स्वर मे तनिक सांत्वना देकर बोले— 'घबराने की कोई बात नही । जो कुछ मैंन समझाया है – उसी पर बेफिक्र अमल करो, सब ठीक हो जायेगा ।"

मैं कठघरे मे जाकर खडी हो गई । अदालत मे श्रोताओ और दर्शको की अच्छी खासी भीड है । इस प्रकार के मामलो मे जन साधारण की असामान्य रुचि इससे प्रकट होती है ।

प्रश्नोत्तर काल मे एकदम शांति छा गई । प्रतिपक्ष के वकील ने मुझसे पहला प्रश्न किया ।

"क्या आप इन्हे पहचानती हैं ?"

उनका सकेत स्पष्टत सामने के कठघरे मे खडे अपराधी की ओर है। मैंने उधर देखा। वही मद मद रसीली मुस्कान और वही लोभ

मोय मौन हसी, जिस पर पहली ही भलक मे मैं मुग्ध हो गई थी—एक तरह से लुट गई थी ।

"ओह ।"

अतिशय घबराहट मे मरे बदन पर पसीना सा छूट आया ।

वकील का फिर स्वर सुनाई पडा— 'मोहनी देवी । आप पढी लिखी हैं समभदार हैं । अ पकी यह चुप्पी ठीक नही । कही यह किसी भले आदमी के जीवन से खिलवाड न कर बठे विशेष रूप से इसका आपको ध्यान रखना है ।"

इसका मुझ पर अनुकूल प्रभाव पडा । ये शब्द ममस्पर्शी हैं, मगर भावोद्रेक मे मेरी जीभ तालु से चिपक गई ।

'आप इन्ह पहचानती हैं ?"

वकील का प्रश्न विचित्र सा ध्वनित हुआ । कम से कम मुझे तो ऐसा ही अनुभव हुआ । मैंने गदन उठा कर धीरे से उनके सकेत की दिशा मे ताका तो वही मोहक मौन हसी और प्यारी-प्यारी सी मोहनी मुस्कान । उफ ।

मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही उनका दूसरा प्रश्न है— 'अपराधी पर बलात्कार के प्रयास का घृणित आरोप है । लकिन वह बार बार कहता है कि उसने मुझे बुलाया था, याने आपने उसे बुलाया था । क्या यह सच है ?'

सुनकर सारी अदालत मे सन्नाटाछा गया । लगता है जैसे सभी लाग केवल इस प्रश्न का उत्तर सुनने के लिये ही आतुर हैं । अब तो उनकी उत्सुक दृष्टि सिर्फ मेरे ऊपर कुण्डली मार कर बैठ गई है ।

'झूठ बिल्कुल झूठ !—मैं आपाद मस्तक तडप उठी । मेरी एक ना' उसे जेल की कोठरी मे बद कर सकती है । उसको बबरता की सजा दिला सकती है ।

परन्तु दूसरे ही क्षण मैं धक्-सी रह गई । आशा के विपरीत यह प्रभाव उस दूसरी मोहनी का है जो मेरे अतस मे से भाक कर मुझे

ही चुनौती दे रही है।

"मोहनी ! तू दुनिया को धोखा दे सकती है, मगर मुझे नहीं। एक निरपराध का बलात् जेल भेजन से भी क्या ! यह तो घोर पाप है। सत्य की अवहेलना करने से ही वह झूठ नही बनता। सत्य तो सत्य ही रहेगा। उसकी सहज स्वीकृति गौरव पूर्ण है—मर्यादा की रक्षक है। मैं स्पष्ट शब्दों में कहती हूँ कि उसे तुमने ही बुलाया था। तेरी अत रात्मा की प्रीति ने उसे बुलाया था। तेरी जादू भरी मुस्कराहट ने उसे बुलाया था। अब तो केवल 'हां' करके इस लज्जा जनक प्रकरण को ।"

"क्या आपने उसे बुलाया था ?"

वकील का यह प्रश्न अचानक सहस्त्र-सहस्त्र कठों से ध्वनित-प्रतिध्वनित होने लगा। और म विक्षिप्त सी हो दिल की डूबती धडकनें लेकर इधर-उधर देखती रह जाती हूँ। न जाने किन भावनाओं से आकुल मेरा मन और अज्ञात सवेगो से उद्वेलित मेरा हृदय सहसा चीख पडता है—'हां ऽ ऽ ऽ मैंने ही उसे बुलाया था ।'

●

t

शब्दो का विष

•

•

नरोत्तम को विदा करके जब मिसेज बसल लौटी तो अत्यन्त उदास और थकी हुई थी। वह कटे वृक्ष की तरह शिथिल होकर सोफे पर गिर पडी मगर लज्जा, ग्लानि तथा अन्तर्ज्वाला से मुक्ति नही पा सकी। यह बात किसी भी प्रकार भुलाई नही जा सकती कि पति की निष्ठुर वाणी और शकित दृष्टि नरोत्तम और उसके सम्बन्धो को लेकर अविश्वास एव अश्रद्धा प्रकट करती है, जो किसी भी स्थिति मे सहनीय नही है।

अभी, थोडी ही देर पहले, पति से उसकी अप्रिय झडप हो चुकी है।

'मेरे मित्रों का इस प्रकार अपमान और तिरस्कार करने का

आपको कोई अधिकार नहीं ।"—कृष्णा के स्वर मे तीखी खीज है ।

प्रोफेसर बसल एक पल ठिठके । फिर एक उडती हुई दृष्टि पत्नी पर डालकर चिढे हुए कण्ठ मे बोले—'किसका अपमान ? कैसा तिरस्कार ?"

ओह ! किसका अपमान—कैसा तिरस्कार !"—विस्मय, विक्षोभ तथा उत्तेजना की दशा मे कृष्णा उनके शब्दो की केवल आवृत्ति कर गई— आपने मेरे से पूछे बिना नरोत्तम को कैसे कह दिया कि मेरी तबीयत ठीक नही है और मैं बाहर जाने म असमर्थ हूँ ।'

"मैंने पूछा की आवश्यकता नही समझी ।" यह बसल का पुरुष-स्वर है ।

'क्यो ?'

'क्यो !"—प्रोफेसर की अतर्भेदी दृष्टि कृष्णा के मुख पर टिक गई— सुन सकोगी सब कुछ ?"

हा ।'

पत्नी के मुह से हठात् निकल पडा ।

"इतना साहस है तुमम ?'

"हा है ।"

कृष्णा का तन क्रोध के अतिरेक में कापने लगा ।

" तुम्हार और नरोत्तम के सम्ब ध ?"

'छि छि ।"

तीव्र घृणा के उद्रेक मे केवल इस लघु प्रत्यय के अतिरिक्त मिसज बसल मुह से और कुछ भी बोल न सकी ।

"क्यो चुप क्यों हो गई ?"—प्रोफेसर बसल क होठो पर विद्रूप से भरी कटु मुस्कान तिर गई ।

इस बार अत्याधिक वितृष्णा एव विरक्ति के आवेग म भरकर कृष्णा बोली —'आश्चर्य तो इस बात का है कि जिसका स्वय का चरित्र भ्रष्ट है वही मन-गढ़त अभियोग दूसरे पर आरोपित करता है ।"

प्रोफेसर को एक धक्का लगा । वे भली भाति जानते हैं कि इस अस्पष्ट अभियोग की तह मे केवल क्षोभ, प्रतिहिंसा तथा दुर्भावना के अतिरिक्त कुछ भी नही है, जो आगे चल कर अविच्छिन्न अशान्ति का जनक है ।

'यह झूठ है ।"– प्रोफेसर बसल उत्तेजना वश कहने लगे— "अपने आपको निर्दोष और निष्कलंक सिद्ध करने के लिए मेरे ऊपर तुम दुश्चरित्र होने का मिथ्या आरोप गलत रही हो—यह ठीक नही ।

'क्या ठीक है – क्या गलत है यह तो तुम्हारा दिल ही जानता है । अब मेरे मुह से सुनकर क्या करोगे ?"

"तुम चाहे कितना ही सतीत्व का ढाग रचो, वास्तव मे ।" प्रोफसर बसल जैसे गरजे ।

'क्या बोले ऽऽ ?"

कृष्णा की दोनो आखा से हठात् विद्युत शिखा सी निकल पडी ।

' मैं तो अब अदालत मे ही जाकर बोलू गा ।"— अपना बौद्धिक और मानसिक सन्तुलन खोकर प्रोफेसर चीख पडे—"मेरे पास प्रमाण है जिसके आधार पर मैं तुम्हे तलाक ।"

'हा हा, द दीजिए तलाक ।"—कृष्णा का क्रोध भी बरसाती नदी की तरह उमड पडा, जो कूल-किनारो की मर्यादा का शीघ्र ही उल्लघन कर जाता है— 'मेरे पास भी आपके विरुद्ध पर्याप्त प्रमाण ह याद रहे अदालत भी आखें बन्द करके फैसला नही करेंगी ।"

"दखा जायगा ।"

इस सिंह गजना के पश्चात् प्रोफेसर बसल पर पटकते हुए अपन कमरे की तरफ चल दिये ।

-

तनाव की यह स्थिति कई दिनो से बराबर चली आ रही है ।

पति-पत्नी मे एक प्रकार से बोल चाल ब द है । प्राय अपने-अपने कमरो मे दोनो एक दूसरे के प्रति अजनबी से बनकर बैठे रहते हैं । यदि सयोग से, कभी एक दूसरे के सामने आ गये तो अगले क्षण ही व घृणा एव रोष से कतरा कर निकल जाते है माना दोनो परस्पर चिर काल से वैरी हैं शत्रु हैं । यह शत्रुवत् व्यवहार और दूरत्व की यह परिधि दिन प्रति-दिन अनावश्यक रूप स विस्तार ले रही है । इस दुर्भाग्यपूण विडम्बना का अ त निकट भविष्य म तो दिखाई नही पडता ।

अचानक एक सुबह नरोत्तम ने प्रोफेसर बसल के कमरे मे एक आधी के झोंके के समान प्रवेश किया और उ हे आश्चयचकित कर दिया ।

"क्या बात है नरोत्तम ?"

बिखरे बाल, अनिद्रा से क्ला तकातर आखें, मलिन मुख मण्डल ! किसी अप्रत्याशित दु ख अथवा किसी आकस्मिक आघात के फल स्वरूप वह भीतर ही भीतर घुट रहा है । अ तव्यथा मे सुलग रहा है ।

उसके प्रति वितृष्णा एव आक्रोश का पूर्वभाव त्यागकर, प्रोफेसर बसल दग रह गये । तब वे पुन पूछ बैठे— क्या बात है ?"

'सर — सर । देखिये यह दो पत्र । एक आप द्वारा लिखा हुआ मेरी बहन चचल के नाम और दूसरा कृष्णा जी का मेरे नाम ।"

"क्या ?"

सहसा अवाक् मुख पर सीप-सी आखें जडी रह गई ।

अब नरोत्तम की आखो म मार्मिक पीडा झलक आई । वह सम्वेदन शील कण्ठ से बोला—' और और चचल ता एव प्रकार से अन्न-जल का त्याग करके भूखी प्यासी अपने कमरे म ब द है । इस पत्र को पढ कर सव प्रथम वह स्त ध रह गई फिर उसका भावार्थ समझ कर आपाद मस्तक काप उठी । वह निर्दोष भोली किशोरी अभी

से रो रही है । यह यह कैसे सम्भव हो गया है सर ?"

इस प्रश्न के साथ ही जैसे उसका हृदय चीत्कार कर उठा । दोनो पत्रो को देखकर प्रोफेसर बसल हठात् गम्भीर हो गये ।

सध्याकालीन छाया जसे ही घनी हुई, पार्टी म सतरगी बहार छा गई । कही हसी की जल तरग—कही होठो पर कटीली मुस्कान की खिलती कलियां । चारो ओर परस्पर हास परिहास की मधुर मदाकिनी का तीव्र प्रवाह ।

आज प्रोफेसर बसल ने अपनी कक्षा मे पढने वाले छात्र छात्राओ के एक दल को इस पार्टी मे विशेष रूप से आमन्त्रित किया है । एक कोने मे उनकी पत्नी कृष्णा भी गुम सुम बैठी है । लगता है, प्रोफेसर बसल उसे बडी कठिनाई से मनाकर लाये है । शायद अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उन्होने सारी स्थिति पत्नी के समक्ष स्पष्ट की होगी, तब कही थोडी देर के लिये पति पर एक प्रकार का कृतज्ञता का बोझ लादकर कृष्णा ने पार्टी मे सम्मिलित होने का निमत्रण स्वीकार किया होगा । अभी तक वह मानभरी, अभिमान भरी चुपचाप एक तरफ बैठी है । नरोत्तम भी इन सबसे अलग थोडा दूर हटकर उदास और मौन है । कभी हसने अथवा बोलने का कोई प्रसग आता है तो निर्जीव-सी फीकी हसी प्रत्युत्तर मे हस भर देता है बस !

खान-पान के पश्चात् प्रोफेसर बसल उठे। उन्होने हस कर विद्यार्थियो के समक्ष एक प्रस्ताव रखा—"मैं आप सबको बोल कर एक पत्र लिखवाता हूँ । आशा है, आप सुन्दर शब्दो और वाक्यो के द्वारा उसे लिखने का प्रयत्न करें, परन्तु ध्यान रहे—उस सुलेख पर एक विशेष पारितोषिक भी मिलेगा ।

"क्या ?" सुनकर सभी छात्र व छात्राए हैरान रह गई—"इस खान पान के साथ यह पत्र-लेखन का कैसा कार्यक्रम ?"

तभी उनमे से एक छात्र-प्रसन्नचित्त होकर कहने लगा—'अरे भई ! यह भी एक खेल है । देखें, बाजी कौन जीतता है ?"

'हा !"—सबने सम्मिलित स्वर मे सहमति प्रकट की ।

प्रोफेसर बसल निर्विकार-भाव से धीरे धीरे पत्र की भाषा बोलने लगे ।

'प्रियतमा मेरी ।"

कई श्रोता एक साथ चौंक पडे । उनकी आखो मे एक प्रश्न उभरा ।

'क्या ?"

प्रोफेसर के होठों पर एक हल्की सी मुस्कान खेल गई ।

"चौंकिये मत । मैं स्पष्ट बता दू कि यह एक प्रेम-पत्र है । इसमे एक विरही प्रेमी की अन्तरग भावनाए ही अभिव्यक्त हो रही हैं ।"

सबने विस्मय से एक—दूसरे की ओर देखा, बाद म एक मीठी-सी हसी हसकर पत्र लिखने के लिय सभी तैयार हो गये ।

प्रोफेसर ने पुन आरम्भ किया—

' प्रयत्न करने पर भी मैं पिछली रात बिल्कुल सो न सका। तुम पूछोगी—क्यों ? जान मेरी, बार-बार मुझे होटल की वह रगीन और मतवाली रात स्मरण हो आई, जब तुम उस यौवनपूर्ण एव रसील वातावरण म डूबकर बडी हस मुख चुलबुली और प्रणय आतुर बन गइ थी । आह ! तुम्हारा वह बडे नखरे स हैं हैं हैं ' करना और इसके साथ मुझे तरसा तरसा कर सताना । सचमुच तुम्हारी यह अदा मेर मन का इतनी भा गई कि इस समय भी कलजा मसोस-मसोस उठता है ।

' तृष्णा ! तुम वास्तव मे मेरे विकल मन की तृष्णा हो।

अकेले में अपने जलते होठो को तर करके मैं विचित्र प्रकार का रोमाच सा अनुभव करता हूँ जिन पर तुम्हारे अधरो के गम गर्म स्पश ।"

'यह झूठ है —यह बकवास है ।"—मिसेज बसल की आखो मे जैसे रोष की अग्नि भडक उठी—'तुम्हे मेरा अपमान करने का कोई अधिकार नहीं है ।"

"अपमान !"—प्रोफेसर के होठो पर निर्लिप्त सी हसी फैल गई—"भई कमाल है । मैं तो एक साधारण प्रेम पत्र ।"

'प्रेम पत्र ?"

कृष्णा ने दात पीसे । विवेक शून्य-सी होकर वह पति की ओर भूखी बाघिन के समान झपटी ।

शायद उनके लक्ष्य को अतिथि अच्छी तरह समझ गये । वे सब एक दल बनाकर पति-पत्नी के बीच मे खडे हो गये ।

"ठहरो !"

ठीक इसी समय प्रोफेसर बसल धीर-गम्भीर स्वर मे बोले । इसके साथ उनकी दृष्टि उस विद्यार्थी पर केन्द्रित हो गई, जो अभ तक मेज पर गदन झुकाए चुपचाप बैठा है ।

प्रोफेसर उसके समीप आये । उससे पत्र छीनकर पढ़ने लगे । फिर अपनी जेब से पत्रो का बण्डल निकालकर वे एक एक पत्र की लिखावट उससे मिलान लगे ।

"क्या बात है सर ?"—सब विस्मित रहकर पूछ बठे।

प्रोफेसर बसल के चेहरे पर रहस्य की छाया घनी हो गई ।

अभी ज्ञात हो जाता है ।"

अभी उन्होने बैठे हुए विद्यार्थी को सम्बोधित करके कहा—"तो खन्ना, तुम थे, जो सबके नाम से अलग अलग प्रेम-पत्र लिखा करते थे । इनमे से अधिकाश पत्रो की भाषा तथा शैली इतनी अश्लील, इतनी अभद्र है कि कोई भी सम्भ्रान्त व्यक्ति उन्ह पढने का साहस नही कर सकता ।"

'मुझे क्षमा कर दीजिए, सर !"—खन्ना एक-दम घबराकर दोनों हाथ जोड़ कर गिडगिडाया – 'भूल हो गई !"

क्षमा ?"

प्रोफेसर के होठों पर तीखा व्यग्य उभर आया ।

'तुम्हें शायद अपने अपराध के द्वारा होने वाले दुष्परिणाम का ठीक-ठीक अनुमान नही है तो सामने आँखें खोलकर देखो । ये मेरी पत्नी है जो क्रोध में अन्धी होकर मेरे ऊपर प्रहार करने के लिये तत्पर है । इसके विपरीत मैं-उसका पति उसे तलाक देने के अभिप्राय से अदालत में जाने को निश्चय बद्ध हूँ । तुमने इन पत्रो के खेल से कितना बडा अपराध किया है और इनके द्वारा आज हमारे दिलो में विष के कैसे कैसे बीज बो दिए है, शायद तुम नही जानते ।'

'मैं इस दुष्ट की हत्या कर दूंगा ।"—नरोत्तम सहसा आवेश मे चिल्लाया— इसने मेरी बहिन को ।"

मैं इसका खून पी जाऊंगी ।"—मिसेज बसल भी आग्नेय नेत्रों से चीखी । और इनके साथ स्वर मे स्वर मिलाकर सभी रोष एव आक्रोश मे चीखने चिल्लाने लगे । अब इसमे रत्ती भर भी सन्देह नही रहा कि उन सभी को खन्ना ने किसी की बहिन, भाभी जाजा, मित्र आदि को सम्बोधित करके इसी प्रकार के अनेक बहूद पत्र लिखे है । भूल हो गई सर !'—याचना करती हुई खन्ना की भयभीत आँखें अकस्मात् छनक आई ।

तब सोचकर प्रोफ़ेसर ने एक प्रश्न किया— खन्ना ! तुम बता सकते हो कि इस प्रकार की शरारत करने मे तुम्हारा क्या उद्देश्य था ?"

'बताता हूँ सर बताता हूं ।"

खन्ना ने अपने आसू पाछे । एक बार भय-त्रस्त दृष्टि की परिक्रमा करके वह धीरे-धीरे कहने लगा—'सर ! मेरे एक बडे भाई हैं । उन्हें विशेषकर अश्लील और वासनापूर्ण साहित्य पढने का विचित्र शौक है । प्राय वे इस प्रकार की पुस्तकों की खोज मे रहते हैं और

उन्हें एकत्रित भी करते हैं। संयोग की बात, एक दिन कुछ पुस्तकें मेरे हाथ लग गई। उनमें नंगी तस्वीरें के अतिरिक्त कामुक कथाएं भी संकलित हैं, जिन्हें पढ़कर प्रथम बार मुझे रोमान्च सा हुआ।"

' उन्हीं पुस्तकों में इस प्रकार के प्रेम पत्र पढ़ने को मुझे मिले। अचानक मेरे मन में एक विचार उत्पन्न हुआ—क्यों न इन पत्रों को अलग अलग नाम से अलग अलग व्यक्तियों को लिखे जाय ?

" तब मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब इन पत्रों का मैंने आशा के विपरीत और कल्पनातीत प्रभाव होते देखा। सर ! जब आप दोनों पति पत्नी को मैंने छिपकर लड़ते देखा था तो सचमुच एक विचित्र आनंद की अनुभूति से मेरा मन मयूर नाच उठा था। चचल और नरोत्तम को मैं तड़पते देखता था तो मेरा हृदय अपूर्व सुख के अनुभव से उछलने लगता। कभी कभी तो मैं एक निमम हंसी भी हंस देता। . बस, इसी आनन्दानुभूति और मानसिक तृप्ति के लिए ही मैं यह सब कुछ अपराध आज तक करता रहा।"

और इसके साथ खन्ना पश्चाताप की अन्तर्ज्वाला मे धू धू करके जलने लगा जिसकी प्रतिच्छाया उसके विवर्ण मुख पर स्पष्ट रूप से झलक रही थी।

" मुझे क्या पता था कि मैं अनजाने में कैसा दुष्ट-कार्य कर रहा हूँ। किसी की हरी भरी गृहस्थी में आग लगा रहा हूँ किसी के मन की शान्ति भंग कर रहा हूँ। अब इस अपराध के लिए आप चाहें तो मुझे पुलिस के हवाले करदें—अथवा आप सब लोग मिलकर मुझे इतना पीटें इतना पीटें कि।"

इतना कहकर खन्ना ने असीम ग्लानि और दुख के अतिरेक में अपना मुंह दोनों हाथों से ढक लिया और मार्मिक स्वर में वह अचानक सिसक उठा।

'यह कैसी आनन्दानुभूति।"

'यह कैसी मानसिक-तृप्ति ?"

सबके होंठों पर केवल एक ही प्रश्न चिन्ह है।

बरसते पानी का संगीत

•
•

उस दिन सहसा क्षितिज के एक कोने मे काले मेघ के एक छोटे से टुकडे का आविर्भाव हुआ और देखते देखते सारे नीलाम्बर को वह आच्छादित कर गया। मन्द मन्द गति से बहती हवा अत्यन्त तीव्र हो गई। उसमे आधी का सा वेग आ गया। वर्षा की भीनी भीनी गध भी आने लगी। दूर–बहुत दूर—आकाश के काले हृदय को विदीर्ण करते सौदामिनी भी तड़प-तड़प जाती है।

यातायात प्राय ठप्प हो जाता है। आवागमन एक तरह से रुक जाता है। इस बीच भगदड-सी मच गई। लोग-बाग इधर उधर भागने लगे। यदि तनिक भी विलम्ब किया गया, तो वर्षा की मोटी मोटी बूदो से सबका अच्छा स्वागत होगा। यही सोचकर सभी सुरक्षित

और निरापद स्थान की खोज में दौड पडे—खासतौर से पैदल चलने वाले।

और तो और दूकानदारो के भीतर भी घबराहट सी फैल रही है। वे भी शीघ्रता म दूकानें बद करने के पक्ष मे हो गये हैं।

हवा का वेग क्रमश तेज होता गया। तीव्र लहरें सन सनाती हुई आई। पैदल चलने वाने राज के कान नाक, आखें और मु ह मे मिट्टी भर गई। एक लहमे मे ही वह आपाद मस्तक धूल-फूम से धूसरित हो गया। आश्चर्य तो यह है कि उसके हाथ मे तना हुआ छाता भी उसकी रक्षा नही कर सका। वह तो हवा के पहले झाके म ही उडने लगा। पूरी ताकत लगा कर वह उसे सम्हाले हुए है।

तभी वर्षा की पहली बौछार मटमैले आसमान से बरस पडी। परेशान होकर राज फुर्ति से भागा और फुटपाथ के बीच मे खडे नीम के पेड के नीचे आ गया। उसने सोचा—थाडी ही देर मे वर्षा और धूल का आतक पूरी तरह समाप्त हो जायेगा तब वह आराम से चल देगा।

आशा के विपरित स्थिति निरतर बिगडती जा रही है। इस उल्टे मौसम की वारिश के कम होने के कोई लक्षण दिखाई नही पडता। नन्हे-नन्हे जल सीकरो के स्थान पर मोटी-मोटी बू दें घटाघोप आकाश से टपकने लगी हैं। दुर्भाग्य स वह पड भी मानो प्रकृति के इस कोप म सम्मिलित होकर झूम झूम कर अपने सहस्र पत्तो से जल बरसाने लगा है।

अब ?

राज की धु घली-धु घली दृष्टि मे स्वाभाविक रूप मे यह प्रश्न उभर आया। वह ठीक से कुछ निर्णय नही कर सका। छात को मजबूत मुट्ठी मे कसकर पकडे पकडे ही अधैर्य से वह खडा रहा।

काफी तेज वारिश है। दूरतक सडक सुनसान हो गई है। एक छोर पर मरियल सा कुत्ता आता दिखाई दिया, लेकिन जल्दी से

वह भी दुम दबा कर जाने किधर भाग गया ।

दुकानो के सामने और सड़क के किनारे बहुत लम्बा बरामदा है जो पैदल चलने वाले और साईकिल पर जाने वाले बाबू लोगो से ठुठ कुठ भर गया है । कई ऐसे बिरले भी हैं, जो वर्षा मे बुरी तरह भीगते हुये तेज पैडल मारकर साईकल पर चल निकले हैं । वे सिर नीचा करते बौछारो को बर्दाश्त करने की कोशिश भी करते हैं ।

अब राज की खीज और झुंझलाहट भी बढती जा रही है । कभी दिल करता है कि वह गर्दन झुका कर किसी न किसी तरह निकल पडे । छाता तो उसके पास है ही बस थोडी सी हिम्मत करने की जरूरत है । आखिर भीगेगा भी कितना !

मगर तभी वर्षा का हाहाकार सुनकर वह फिर डर जाता है । आशंका है कि कही बदकिस्मती से यह नीम के पेड का आश्रय भी छूट न जाय । तब हारकर बरामदे की शरण म जाना पडेगा, जहा भीड और दम घोटने वाली बदबू है । वहा तो दम मारना भी सम्भव नही है ।

इसी समय एक तरुणी भी पानी की बौछारो को सहती और बारिश मे भीगती हुई पेड के नीचे चली आई । साडी के आचल से सिर को ढके हुए वह अपने को सुस्थिर करने का अथक प्रयत्न करती है । अपन बडे से पस को भी ऊचा करके वह बौछारो को रोकना चाहती है किन्तु विफल रही । अब असहाय और निरुपाय सी रहकर अशा त भाव से बराबर भीग रही है । इस गरजते हुए तूफान मे अपनी खुद की रक्षा करना भी एक समस्या है ।

'शायद काम-काजी महिला है ।'—यह राज की पहली प्रतिक्रिया है 'इस कस्बेनुमा शहर मे काफी लडकिया आजकल दफ्तरो म काम करन लगी हैं । यह भी उनमे से एक है ।"

उसकी पोशाक से ही उसने ... नी मे अनुमा... । परेशान और थके हुए चेहरे से ... मालूम

भी उसकी मासूम आखें डरी – सहमी सी है । बार बार सहायता की याचना करती मी वे राज की तरफ अपने आप उठ जाती हैं । उसकी मूक वाणी अत्यन्त मर्म-स्पर्शी है हृदय द्रावक हैं ।

वास्तव मे राज का उधर ध्यान ही नही है । उसकी दृष्टि तरुणी की भीगी साडी पर केन्द्रित है, जो बदन से बुरी तरह चिपक गई है । उसमे मे अ गो का मनोहर उभार झाक रहा है । वैसे वह स्वस्थ और सुदर है । हिरनी जैसी बडी बडी आखें उसके गोरे मुखड पर बहुत अच्छी लगती हैं । उसके तीखे नाक-नक्श और तराशी हुई आकृति को देखकर उसके मन मे किसी पुरानी कलाकृति की याद ताजा हो जाती है, जो तस्वीर मे इसी तरह भीग रही थी ।

हटाना चाहकर भी वह अपनी निगाहे हटा नही पाया ।

कही इन आखो को रूप की भूख तो नही लग गई ?' — आशका और अविश्वास से राज सहसा विचलित हो गया – फिर य चकाचोध क्यो है ?"

शुरू-शुरू मे उसकी आखो मे अदृश्य सकोच का भाव आया लेकिन धीरे-धीरे वह स्वय ही दूर हो गया । अब तो अपना पन सा लये हुये एक मधुर आकर्षण दिल मे भली भाति अनुभव किया जा रहा है ।

बरसते मेह के तीखे शोर को चीरती हुई एक कार बहुत ही तेजी से गुजर गई । पहियो की रगड से फैला हुआ पानी दूर दूर तक उछला इन दुर्दमनीय और प्रचण्ड लहरो को काटना एक प्रकार स मुश्किल है फिर भी कार तो तश्तरी की तरह फिसलती हुई चली गई ।

'आपने मुझसे कुछ कहा ?"—युवती राज की ओर मुह करके हठात् पूछ लिया ।

"जी !"

राज एकदम जैसे चौंक पड़ा । उसकी आखें युवती के आहत

और दयनीय हो आये चेहरे पर आश्चर्य से कुछ पल टिकी रह गई। उनके मध्य अब धुंध की पतली सी दीवार उठ आती है, जो इस भीगे चिपचिपे मौसम में और भी घनी होती जाती है।

"मैंने कुछ कहा, याद नहीं।"

दिमाग पर जोर देकर सोचता है फिर भी उत्तर नहीं आता। यूं एक बात स्पष्ट हो गइ वह तरुणी उससे सहायता के लिये कह रही है। यद्यपि इसका अन्दाज अलग है। असल मे इनका एक मात्र यही अर्थ है। शायद उसने सोचा होगा कि छाते वाला आदमी भला नेक और उदार है। इसीसे मन में श्रद्धा जगी है जिसे वह प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त कर गई।

उसने बडे उत्साह से कहा— चली आइय, इस तरह कब तक खडी रहेंगी ?"

"जब तक किस्मत खडा रखेगी।"

'आपका मतलब वर्षा से है ?"

'जी नहीं। उस छाते स, जिसे आज मैं भूल आई हूँ।"

"ओह!"

दोनो एक साथ मुस्कराते हैं।

हवा का जोरदार झोंका फुहारों मे भरा जैसे घुस पडता है और सीधा आकर युवती के मुंह पर प्रहार करता है। वह कुछ कदम पीछे हट जाती है, फिर फुर्ति से छाते के नीचे राज की बगल म चलकर आ जाती है।

अब राज के मुख पर दो बडी-बडी तरल और विश्वास भरी आखें ठहर जाती है, जिनमे कोई संशय और भय नहीं।

अकस्मात् राज के पूरे शरीर स झुरझुरी-सी दौड जाती है। वैसे युवती के भीगे बदन की रगड से उसके रोम रोम सिहर उठते हैं।

वर्षा का जोर बढता जा रहा है। इससे सडक एक नाले के

रूप में वदल गई है और साफ रात मे । शार इतना अधिक हो रहा है कि जैसे अपन भीनर की आवाज भी सुनाई नहीं देती ।

राज न वारिश को बडे ठण्डे और अनासक्त भाव से देखा, कुछ देर मे उसने दृष्टि लौटा ली ।

महिला ने अपनी छाती म एक उसास भरी बाद मे अनमने भाव से बोली—"अब चलना चाहिये । यहा यू इकार म खडे रहन से कोई फायदा नही ।"

"वशक ।"

पता नहीं राज कैसे सहमत हो गया । अभी चलन के प्रति न तो उसकी इच्छा है और न मर्जी । शायद युवती का मन रखने के लिये उसने हामी भरली । शिष्टता के नाते भी ऐसे समय म इ कार करना ठीक नही ।

एक वार फिर वे एक दूसरे को आखो ही आखो मे निहारते हैं और आहिस्ता आहिस्ता फुटपाथ पर ही चल दत हैं । महिला सिमट कर और नजदीक आ जाती है । लगभग दोनों के बदन एक तरह से सटजाते हैं । स्पर्श का मजा लेते हुये वे बरसात मे आग वढते है ।

युवती ने बहुत हद तक पिंडलिया से ऊपर साडी और उसके नीचे के पेटीकोट को एक हाथ से खीच लिया है । यू राज ने अभी तक हाथ बढा कर उनका स्पश नही किया है । इस समय वह उसकी खुली और गोरी-गोरी पिंडलिया को छूना चाहता है जसे यह जानने को कि क्या उसकी त्वचा भी उतनी ही कोमल और चिकनी है, जैसी कि खुद उसकी पत्नी की है ।

'इस प्रकार हम कहा तक चलेंगे ?"

सडक को पीछे छोड एक गली मे स गुजरते हुये वह पूछ बैठता है ।

'केवल नरेन्द्र नगर तक ।"

और दयनीय हो गया चेहरे पर आश्चर्य म डूबा पर खिंची रह गई। उसके मध्य अब धुंध की पतली सी दीवार उठ आती है, जो इस भीगे चिपचिपे मौसम म और भी घनी होती जाती है।

मैंने कुछ कहा, याद नहीं।"

दिमाग पर जोर देकर सोचता है फिर भी उत्तर नहीं आता। यू एक बात स्पष्ट हो गई वह अपना उसम सहायता के लिये कर रही है। यद्यपि इसका अन्दाज अलग है। अगर म इसका एक माप नहीं अर्थ है। शायद उसने सोचा होगा कि छाते वाला आदमी भला नेक और उदार है। इसीलिये मन में श्रद्धा जगी है जिसे वह प्रत्यक्ष रूप म व्यक्त कर गई।

उसने बड़े उत्साह से कहा— चली आइए, इस तरह कब तक खड़ी रहेंगी ?"

"जब तक किस्मत खड़ा रखेगी।"

'आपका मतलब वर्षा से है ?"

जी नहीं। उस छाते से, जिसे आज मैं भूल आई हूँ।'

"आह!"

दोनों एक साथ मुस्कराते हैं।

हवा का जोरदार झोंका फुहारों से भरा जैसे घूम पड़ता है और सीधा आकर युवती के मुह पर प्रहार करता है। वह कुछ कदम पीछे हट जाती है, फिर फुर्ति से छाते के नीचे राज की बगल म चलकर आ जाती है।

अब राज के मुख पर दो बड़ी-बड़ी तरल और विश्वास भरी आँखें ठहर जाती है, जिनम कोई संशय और भय नहीं।

अकस्मात् राज के पूरे शरीर म झुरझुरी सी दौड़ जाती है। वैसे युवती के भीगे बदन की रगड़ स उसके रोम रोम सिहर उठते हैं।

वर्षा का जोर बढ़ता जा रहा है। इससे सड़क एक नाले के

रूप मे बदल गई है और साझ रात म । शोर इतना अधिक हो रहा है कि जैसे अपने भीतर की आवाज भी सुनाई नही देती ।

राज ने वारिश को वडे ठण्डे और अनासक्त भाव से देखा, कुछ देर मे उसने दृष्टि लौटा ली ।

महिला ने अपनी छाती में एक उसास भरी, बाद मे अनमने भाव से बोली—"अब चलना चाहिये । यहा यू बेकार म खडे रहने से कोई फायदा नही ।"

' वेशक !"

पता नही राज कैसे सहमत हो गया । अभी चलने के प्रति न तो उसकी इच्छा है और न मर्जी । शायद युवती का मन रखने के लिये उसने हामी भरली । शिष्टता के नाते भी ऐसे समय म इन्कार करना ठीक नही ।

एक बार फिर वे एक दूसरे को आखो ही आखो म निहारते हैं और आहिस्ता आहिस्ता फुटपाथ पर ही चल देते है । महिला सिमट कर और नजदीक आ जाती है । लगभग दोनो के बदन एक तरह से सटजाते हैं । स्पर्श का मजा लेत हुये वे बरसात मे आगे बढ्ते है ।

युवती ने बहुत हद तक पिडलिया से ऊपर साडी और उसके नीचे के पेटीकोट को एक हाथ से खीच लिया है । यू राज ने अभी तक हाथ बढा कर उनका स्पश नही किया है । इस समय वह उसकी खुली और गोरी-गोरी पिडलियो को छूना चाहता है जैसे यह जानने को कि क्या उसकी त्वचा भी उतनी ही कोमल और चिकनी है, जैसी कि खुद उसकी पत्नी की है ।

'इस प्रकार हम कहा तक चलेंगे ?"

सडक को पीछे छाड एक गली म से गुजरते हुये वह पूछ बैठता है ।

'केवल नरेन्द्र नगर तक ।"

वसी ही हालत है । आस पास का वातावरण निष्प्रभ है—निश्चल है अपने आप मे घिरा हुआ—सिमटा हुआ !

दोनो के बीच मे एक छाता है जो न उह मिलाता है और न पृथक करता है । दोनो चुपचाप भीग रह हैं । यू एक छाता दो के लिए पर्याप्त भी नही है ।

"आप क्या देख रहे हैं ?"

एक साधारण सा सवाल ।

पानी को ।"

वैसा ही सक्षिप्त-सा उत्तर ।

"पानी पीने की चीज है, देखन की नहीं ।"

यह एक व्यग हैं, जिसे वह मौन भाव स सुन लेता है—प्रति उत्तर नही देता ।

परस्पर दोनो के शरीर टकराते है । चलते हुए बराबर बदन स बदन की रगड लग रही हैं । कभी कधे से कधा और कभी बाह से बाह छू जाती हैं । अधिक भीगने के कारण वे छाते के अ दर सिमट रहे है । एक सुखद स्पर्श से मन न जाने कैसे क्से होने लगता है ।

"बहुत देर हो रही है ।"

युवती की आवाज में थोडी घबराहट है—थोडी बेचैनी है, किन्तु उसी के अनुपात म नेत्रों म अधिक मोहकता है । यह ध्यातव्य है ।

'मुझे अच्छा लगता है ।'

क्या ?"—युवती न चौंक कर पूछा ।

"इस तरह बारिश मे अधभीगे चलना ।"

ज्ञात हुआ, जैसे कुछ शब्द पानी के शोर म डूब गये ।

एक जोर का विक्षिप्त-सा हवा का झोका आता है और छात को उडा ले जाता है, पर इस बीच राज सम्भल जाता है । कसी हुई

महिला ठण्डे और निर्विकार भाव से उत्तर देती है ।

अब राज उसके सिर को निर्निमेस दृष्टि से देखता है । साड़ी का पल्ला ऊपर से थोडा पीछे खिसक जाता है । माग मे सिंदूर की भीगी भीगी रेखा साफ चमक रही है । क्षण भर के लिये वह स्तब्ध रह गया । कुछ समय पहले तक मन में भरी हुई अनजान सी आशा तडक कर जस टूट जाती है ।

असल मे वह इतनी देर तक उसे अविवाहित और क्वारी ही समझ रहा था । लेकिन वैसे यह भ्रम होना स्वाभाविक है । सहज दृष्टि से देखने पर ज्ञात होगा कि उसका शरीर अभी भी गठा हुआ है । उसमे युवावस्था की रमणीयता है, चेहरे पर लावण्य आकार जैसे थम गया है ।

अचानक युवती का पैर फिसला और उसके मुह से हल्की-सी चीख निकल पडी । गिरते गिरते भी वह सम्हली और राज से बुरी तरह लिपट गई ।

इधर अपने आप उसका भी हाथ पीठ पर चला गया और उस भयभीत महिला को उसने सीने से सटा लिया । अब उसके भीगे ठण्डे तन मे एक उष्ण सिहरन सी दौड गई, जिसम विचित्र सा सुख है । भावनाओ म वह जान का एक मधुर आकर्षण है ।

'ओह !"—एक झटके के साथ दूर होती हुई युवती अपने चेहरे पर लज्जालु मुस्कान बलात् खीच लाई ।

राज इस बीच प्रकृतिस्थ होने का धीरे धीरे प्रयास करता है ।

पानी रुकता नही । लगातार बरस रहा है । सडक की बत्तिया तभी जल जाती है मगर उनसे रोशनी नही फैलती । बिजली के खम्भा पर गीले कपडे सी टग जाती है ।

व अब दोनो घूमकर एक और सडक पर आ गये । उसको भी

वैसी ही हालत है । आस पास का वातावण निष्प्रभ है—निश्चल है अपने आप मे घिरा हुआ—सिमटा हुआ !

दोनो के बीच मे एक छाता है, जो न उन्हे मिलाता है और न पृथक करता है । दोनो चुपचाप भीग रहे हैं । यूँ एक छाता दो के लिए पर्याप्त भी नही है ।

"आप क्या देख रहे हैं ?"

एक साधारण सा सवाल ।

'पानी को ।"

वैसा ही संक्षिप्त-सा उत्तर।

"पानी पीने की चीज है, देखन की नहीं ।"

यह एक व्यग हैं, जिसे वह मौन भाव से सुन लेता है—प्रति उत्तर नही देता ।

परस्पर दोनो के शरीर टकराते है। चलते हुए बराबर बदन स बदन की रगड लग रही हैं। कभी कधे से कधा और कभी बाह से बाह छू जाती हैं । अधिक भीगने के कारण वे छाते क अन्दर सिमट रहे है । एक सुखद स्पश से मन न जाने कैसे-कैसे होने लगता है ।

'बहुत देर हो रही है ।"

युवती की आवाज में थोडी घबराहट है—थोडी बेचैनी है, किन्तु उसी के अनुपात म नेत्रो म अधिक मोहकता है । यह ध्यातव्य है ।

"मुझे अच्छा लगता है ।'

क्या ?"—युवती न चौंक कर पूछा ।

"इस तरह बारिश मे अधभीगे चलना ।"

पात हुआ जैसे कुछ शब्द पानी के शोर म डूब गये ।

एक जोर का विक्षिप्त-सा हवा का झोंका आता है और छाते को उड़ा ले जाता है, पर इस बीच राज सम्भल जाता है । कभी दूर

मुट्ठी और मजबूत हो जाती है ।

अब वह उसकी ओर भरपूर नजर मे देखता है । वर्षा मे भीग कर उसका सुन्दर मुख उज्ज्वल और कान्तिपूर्ण हो गया है । दिन भर की क्लान्ति और थकान के कोई भी चिन्ह उस पर नही है। गीली साडी के बदन से चिपक जाने के कारण उरोजो का उभार कमनीय नजर आता है। पीछे गदराये हुये नितम्ब भी औसत से ज्यादा बडे और भारी दीख पडते हैं । जल की छोटी छोटी धारायें कुछ खुली हुई अलकें और ढीली-ढाली वेणी में से रिस रिस कर नीचे आ रही है ।

सचमुच में राज अवाक् है । वह तो नारी के इस अकृत्रिम सौन्दर्य पर मुग्ध है—आसक्त है ।

देखो उधर ।"

युवती सहसा कहती है ।

"क्या है ?"

"उधर ।"

वह एक रोशनी के खम्भे की तरफ इशारा करती है, जिसके पीछे के मकान के बरामदे मे कुछ लोग खडे हैं । बत्ती के प्रकाश मे अस्पष्ट दीख रहे हैं ।

'वे शायद हमे कौतुहल और विस्मय से देख रहे है ।"

'अच्छा ।"

लगा जैसे वर्षा का जोर निरन्तर बढता जा रहा है । एक मादक संगीत है जो सम्पूर्ण वातावरण में अनुगूंज पैदा करता है । लेकिन अब वह मसहा हो उठा है, कर्ण-कटु सा लगता है ।

'रात अधिक हो रही है ।"

'हा । पर इतनी ज्यादा भी नही।"

'कोई सवारी भी नजर नही आती ।"

इस बार राज धीरे से हस पडता है ।

"आपने भी ठीक कहा । इस वक्त सवारी ?"

वह पुन खिलखिला उठा ।

युवती शायद झेंप गई ।

काफी देर भीगने से उसे बदन मे कपकपी सी महसूस होन लगी । अभी जिन मोहक आखो मे रगीन और गहरा नीलाकाश झाक रहा था, अचानक उसमें मेघ घिर आये । चिन्ता और बेबसी के मेघ ! शिथिल तन मे एक अप्रत्याशित थकान सी भर गई ।

"रुको, जरा रुको । शायद मेरे पैर की सैंडिल टूट गई है ।"

"अच्छा !"

राज ने किंचित् आश्चर्य व्यक्त किया । उसने इधर उधर और आस पास निगाहें दौडाई, शायद खडा होने के लिए कोई उपयुक्त स्थान देख रहा हो । तभी फुटपाथ के बीच मे खडा एक दूसरा नीम का पेड नजर आ गया । वे उसकी दिशा मे चल पडे । उसके नीचे कुछ देर सुस्ता लेना ठीक रहेगा । उसने जरा सोचा ।

लेकिन उनके पहुँचने से पहले ही वहा एक जोडा छाते के नीचे मौजूद है । उनकी तरह अध भीगी हालत मे, विवशता और परेशानी से घिरे हुए । एक छाता और उसके नीचे दो जने, एक स्त्री और एक पुरुष ।

आने वाले जोडे को उन्होने कौतुहल और विस्मय स देखा । विशषकर राज पर स्त्री की हैरान-हैरान सी निगाह गडी रह गई । साथ वाले पुरुष की भी प्रश्न भरी दृष्टि राज की बगल म खडी तरुणी पर स्थिर हो गई । कोई कुछ नही बोला, जैसे आखा ही आखा म बातें हो रही हैं । कुछ सवाल है जिनके उत्तर मूक पलकें अपन आप दे रही हैं ।

थोडी देर तक यह अनोखा खेल चलता रहा, तब अचानक आश्चर्य जनक परिवर्तन हो गया । हुआ यह कि इस छाते वाली युवती उस छाते के नीचे चली गई और उस छाते वाली इधर आ गई । इसके

बाद कण्ठ से स्वर फूटा—'चलिय !"

'अ च् छा !"

राज ने हवा और वर्षा के थपेडो म छात को सम्हालन की कोशिश की । अब वह चल पडा । बिना उस युवती की ओर ताके, जो अब तक उसके साथ थी एक तरह स उसकी हम सफर थी ।

दूर बहुत दूर—निकल जान पर छात के नीचे अब तक एक आकृति ही नजर आती है । दूसर छोर तक पहुँचत पहुँचत वह आकृति भी शून्य म विलीन हो गई ।

वर्षा का जोर और शोर इतना ही है । सडक इतनी ही निर्जन है । बिजली के खम्भे उतन ही उदास और खामोश है ।

●

प्रतीक्षा का दर्द

बाबू जयनारायण न ज्योंही घर मे प्रवेश किया, उसी समय मुन्नी के जोर से रोने का स्वर उसके कानो म पडा । वह हठात् चौंक पडा ।

दहलीज पर तनिक ठहरा तब वह मन ही मन झुझलाया—"लो आते ही रोने से स्वागत हुआ है । दिन भर दफ्तर मे फायलों से सिर मारो और घर आने पर यह मुसीबत ! जाने कैसी विवशता है ... ।"

जैसे कोइ कडुवी चीज अकस्मात् ही मु ह मे घुल गई। उसका असर भीतर तक हो गया ।

श्रीमति जी शायद तीखे कण्ठ से मुन्नी पर बरस रही हैं । स्वर

जरा तेज-तर्रार और अन्तर्भेदी है ।

'लो, इतनी बडी हो गई, मगर अभी तक काम करने का कोई सलीका नही—शऊर नहीं । कई बार कह चुकी हूँ कि काम के वक्त बाहर जाकर खेलने की कोई जरूरत नही, पर मेरी सुने कौन, माने कौन ! तनिक चुन्नु मुन्नू को खेल में लगाये रखने से इस समय काम मे कुछ सहारा लगे ।"

अब जयनारायण चलकर आगन मे आ गया ।

एक क्षण के लिये श्रीमति जी रुकी । उसने भी अनमनी दृष्टि पत्नी पर डाली । देखा—बिखरे बाल, ढलका आचल, राख पसीने व थकान से ढीला ढाला चेहरा ! एक प्रकार के रोप आक्रोश और तीखी खीज से भरीभरी आखें !

"मैंने कितनी बार कहा है कि आप समय पर दफ्तर से आने की कोशिश करें, पर पर र ।"

बगल मे चुन्नू को लिये श्रीमति जी ठीक सामने खडी हैं अस्थिर और अधीर ! मुन्नी को बेधने वाली वे जलती निगाह अब बाबू जयनारायण पर टिकी हैं । आकस्मिक घबराहट के कारण उसकी गर्दन अपने आप झुक गई ।

मुन्ना आचल थामे थामे अंगूठा चूस रहा है । मुन्नी फर्श पर बैठी रो रही है । उसकी याचना करती हुई करुण और कातर आखें अब अपने पिता पर ठहर गई ।

"तुम्हें बच्चों को इस कदर बेरहमी से पीटना नही चाहिये ।" —किंचित् झिझकते हुए बहुत ही सयत स्वर मे जयनारायण ने पत्नी से कहा ।

'क्या ?

लेकिन श्यामा सह न सकी, अपने रोष को दबा न सकी ।

क्या बोले ?"

" अभी नादान बच्ची है ।"

सहमकर पति ने धीमी और दबी आवाज मे कहना चाहा किन्तु दूसरी तरफ इतना धैर्य कहा ? वर्षोन्मुख मेघ अचानक गरज उठे ।

'हा हां ! साफ साफ क्यो नही कहते कि मैं कसाइन हूँ । बच्चो के प्रति मेरे दिल मे दया और ममता कतई नही । मैं एक तरह स इनकी दुश्मन हूँ । य बच्चे मेरे नही मेरी किसी सौत के है ।"

गृह कलह म निपुण स्त्री की तरह पत्नी को सन्नद्ध होते देख जयनारायण अपनी अस्थिरता को दबाकर चुप हा गया । स्पष्ट है कि श्यामा के स्तर पर आकर झगडा करना न तो विवेक सम्मत है और न बुद्धि सगत ! यद्यपि उसन खिन्न मन से कहना चाहा— 'मेरे कहने का अथ यह है कि ।

पर श्रीमति जी बीच ही मे उबल पडी यह सब आपकी अनुचित कृपा का दुष्परिणाम है जिमसे कि बच्चे इतने हठी, लापरवाह और नटखट हो गये । व्यथ क लाड प्यार और अकारण के पक्षपात स बच्चे बिगडते हैं यह ध्यान रहे । म बारह बरस की बडी बेटी है । क्या चुन्नू को वह रख नही सकती ? अभी स घर का काम काज नही करगी तो सीखेगी कब ? बोलिये बोलिये ।"

रसोई घर से दाल के लगन की तीखी गध आई । गृहिणी का ध्यान उधर आकृष्ट हुआ । वह फुर्ति से पाव पटकती हुई चल पडी ।

' मैं इन बच्चो को सम्हालू या गृहस्थी के जजाल को समेटू । कुछ समझ म नही आता ।"

बडबडाती हुई श्यामा न दाल की पतीली चू हे पर से नीचे कर रख दी ।

"लो, इस चू नू के बच्चे ने सारे कपडे खराब कर दिये ।"
पत्नी की तीखी कण्ठ ध्वनि इस बीच फिर गू ज उठी ।

बस एक भारी सा हाथ उस न ह शिशु की पीठ पर पडा और वह पूरे गले का जोर लगाकर पचम स्वर म चीखने लगा ।

अब कहने सुनने के लिए कुछ भी शेष नहीं है। कसा हुआ चेहरा लेकर जयनारायण अपने कमर की तरफ चल दिया। न मिटने वाली उदासी और न सह सकने वाले अवसाद के गहरे सागर म वह अब पूरी तरह डूब गया।

देखत देखते वह कपडे बदलकर मलिन और अवसन्न आलोक की परिधि म पलग पर मानो ढेर हो गया।

दिन के क्षीण पखो पर सध्या की अभेद्य शाति उतर आई। गली के मकानो की सूनी साय साय वातावरण मे हल्के हल्के सुनाई पड जाती है। घरो से निकलकर धुआ ऊपर आसमान मे घुल रहा है। एक आलोकहीन मटमैली छाया क्रमश गहरी होती जा रही है।

इस बीच मौन का लम्बा अतराल रहा। मुन्नी रोते-रोते शायद सो गई। कुछ दर तक चुन्नू पालने मे काव-काव करता रहा। उसे किसी न प्यार स सहलाया नहीं चुप कराया नहीं। लगता है सुन किये लेते लेते उसकी भी आखें लग गई। नीद मे मजे से अगूठा चूस रहा है। मुन्ना चुपके से बाहर खेलने के लिये खिसक गया।

श्यामा इस समय रसोईघर मे व्यस्त है। वह आश्चर्य जनक ढग से अपने आपको काम मे लगाये हुए है। उसके पतले पतले हाथ यत्र की तरह अविराम गति से चल रहे हैं। सदेह नहीं कि सम्पूर्ण गृहस्थी का बोझ उसके दुबल कधो पर अनायास ही आ पडा है जिसे वह भारी मन और बुझे हुए दिल स निरतर ढोती आ रही है। इसके अतिरिक्त उसके सामने दूसरा कोई विकल्प भी नहीं है। उसकी व्यथित-सी आकृति और कमजोर-सी काया से तीन-तीन बच्चे जोंक की तरह चिपके रहते हैं। उसका बुरी तरह से खून चूसते है।

विडम्बना तो यह है कि इस घर में एक अकेली श्यामा को दिन रात खटना पड़ता है। यह उसके स्वभाव और सेहत के लिये एक प्रकार का अभिशाप सिद्ध हुआ। वह माना अपना प्रतिशोध लेना भी नहीं भूला। शीघ्र ही उसकी कंचन सी दमकती काया एक कंकाल मात्र रह गई। उसका लटका हुआ चेहरा तो कहीं गहरे टीस उत्पन्न करता है, जैसे एक रूखा दुदमनीय सा विषाद उसमें सिमट आया है। गालों की हड्डियां उभर आई हैं। वह स्निग्धता वह कोमलता न जाने कहां लुप्त हो गई। वे मोटी मोटी प्यारी सी सुन्दर आखें पता नहीं कब गढ़े में धस गईं। वे अब तेजहीन हैं—भावना शून्य हैं। वे पलकें उठाये खोया सा भाव लेकर केवल ताका करती हैं। उनमें तुरन्त ही हृदय द्रावक सूनापन झलक आता है।

जयनारायण ने दीर्घ निश्वास ली और बड़े उदास मन से सोचने लगा 'पता नहीं, कुछ दिनों से श्यामा को क्या हो गया है? उसके मिजाज में कुछ-कुछ (सनकी पन) सा आ गया है। किसी के बारे में कितना ही कुछ कहलो पर सुनेगी नहीं ।"

" अचरज तो यह है कि वह न ढंग से रहती है न बोलती है न खाती है न पीती है। बस दिन रात अशान्त हृदय और खीझ भरा मन लेकर इधर-उधर घूमती रहती है। मालूम नहीं उसे क्या हो गया है! न जाने उसका स्वभाव कैसा होता जा रहा है एकदम चिड़ चिड़ा, गुस्सैल और और र भावना हीन !"

जयनारायण को यह सब कुछ अच्छा नहीं लगता कि वह हमेशा अन्दर ही अन्दर घुटती रहे। उसे याद है- खूब याद है, जब कई वर्ष पहले वह श्यामा को शादी करके लाया था। उन दिनों बड़ी हंसमुख विनोद प्रिय और मिलनसार थी। यौवन पूर्ण हृदय में अपूर्व उल्लास! तेजस्वी किन्तु तरल आंखों में जीवन के नये नये सपने! और एक छोटी अधूरी-सी मुस्कराहट में खुले खुले रसीले गुलाबी अधर

वह तो उसकी पहली झलक देखकर ही मोहित हो गया।

अब कहने सुनने के लिए कुछ भी शेष नहीं है। थका हुआ चेहरा लेकर जयनारायण अपने कमरे की तरफ चल दिया। न मिटने वाली उदासी और न सह सकने वाले अवसाद के गहरे सागर में वह अब पूरी तरह डूब गया।

दस्तखत-देखते वह कपडे बदलकर मलिन और अवसन्न आलोक की परिधि में पलंग पर मानो ढेर हो गया।

दिन के क्षीण पखों पर सध्या की अभेद्य शांति उतर आई। गली के मकानों की सूनी साय साय वातावरण में हल्के हल्के सुनाई पड जाती है। घरों से निकलकर धुआं ऊपर आसमान में घुल रहा है। एक आलोकहीन मटमैली छाया क्रमश गहरी होती जा रही है।

इस बीच मौन का लम्बा अन्तराल रहा। मुन्नी रोते रोते शायद सो गई। कुछ देर तक चुन्नू पालने में कांव-कांव करता रहा। उसे किसी ने प्यार से सहलाया नहीं, चुप कराया नहीं। लगता है, सुबकियां लेते लेते उसकी भी आंखें लग गई। नींद में मजे से अंगूठा चूस रहा है। मुन्ना चुपके से बाहर खेलने के लिये खिसक गया।

श्यामा इस समय रसोईघर में व्यस्त है। वह आश्चर्यजनक ढंग से अपने आपको काम में लगाये हुये है। उसके पतले पतले हाथ यन्त्र की तरह अविराम गति से चल रहे हैं। सदेह नहीं कि सम्पूर्ण गृहस्थी का बोझ उसके दुबले कधों पर अनायास ही आ पडा है जिसे वह भारी मन और बुझे हुए दिल से निरंतर ढोती आ रही है। इसके अतिरिक्त उसके सामने दूसरा कोई विकल्प भी नहीं है। उसकी व्यथित-सी आकृति और कमजोर-सी काया से तीन-तीन बच्चे जोंक की तरह चिपके रहते हैं। उसका बुरी तरह से खून चूसते हैं।

विडम्बना तो यह है कि इस घर मे एक अकेली श्यामा को दिन रात खटना पडता है । यह उसके स्वभाव और सेहत के लिये एक प्रकार का अभिशाप सिद्ध हुआ । वह मानो अपना प्रतिशोध लेना भी नही भूला । शीघ्र ही उसकी कचन सी दमकती काया एक ककाल मात्र रह गई । उसका लटका हुआ चेहरा तो कही गहरी टीस उत्पन्न करता है, जैसे एक रूखा दुदमनीय सा विषाद उसमे सिमट आया है । गालो की हड्डिया उभर आई हैं । वह स्निग्धता वह कोमलता न जाने कहा लुप्त हो गई । वे मोटी मोटी प्यारी सी सुन्दर आखें पता नही कब गढे म धस गई । वे अब तेजहीन हैं – भावना शून्य ह । वे पलकें उठाये खोया सा भाव लेकर केवल ताका करती है । उनम तुरन्त ही हृदय द्रावक सूनापन झलक आता है।

जयनारायण ने दीर्घ निश्वास ली और बडे उदास मन से सोचने लगा 'पता नही, कुछ दिना से श्यामा को क्या हो गया है ? उसके मिजाज म कुछ-कुछ (सनकी पन) सा आ गया है । किसी के बारे मे कितना ही कुछ कहलो पर सुनेगी नही ।"

" अचरज तो यह है, कि वह न ढग से रहती है न बोलती है न खाती है न पीती है । बस दिन रात अशान्त हृदय और खीझ भरा मन लेकर इधर उधर घूमती रहती है । मालूम नही उसे क्या हो गया है ! न जाने उसका स्वभाव कैसा होता जा रहा है एकदम चिड चिडा गुस्सल और और र भावना हीन !"

जयनारायण को यह सब कुछ अच्छा नही लगता कि वह हमेशा अन्दर ही अन्दर घुटती रहे । उसे याद है– खूब याद है जब कई वप पहले वह श्यामा को शादी करके लाया था । उन दिना वडी हसमुख विनोद प्रिय और मिलनसार थी । यौवन पूण हृदय म अपूव उल्लास ! तेजस्वी किन्तु तरल आखों म जीवन के नये-नये सपन ! और एक छोटी अबूरी सी मुस्कराहट मे खुले खुले रसीले गुलाबी अधर

वह तो उसकी पहली झलक दखकर ही मोहित हो गया ।

"न न न ।"

उसकी आंखें अज्ञात भय और आतंक से त्रस्त हो उठी ।

मैं दवा ले ले कर पहले ही बहुत भुगत चुकी हूँ । सेहत बिगड गई है । हो न हो, अंदर ही अन्दर कोई रोग पल रहा है जो ।"

'हैं ।'

इसके अलावा यह एक तरह की भ्रूण हत्या है । यह पाप कौन करे ?"

'पाप ।"

पत्नी के इस सहज सरल विश्वास पर जयनारायण के होठो पर एक वक्र रेखा खिंच गई ।

'अच्छा, अब दाई को बुलाकर ले आओ " श्यामा की भंगिमा अत्यन्त ही वेदनापूर्ण हो गई 'यह असमय की पीडा तो मेरे प्राण लेकर ही छोडेगी ।"

कहते-कहते श्यामा ने अपना निचला होठ काट लिया ।

अब जयनारायण के पास कहने लिये कुछ भी नही है मगर समय और परिस्थिति ने किसी अस्पष्ट अमंगल की आशंका पैदा करदी है । उसके अन्तराल म एक अज्ञात भय भी है । इधर पत्नी की त्रस्त विह्वल दृष्टि और मर्म भेदी कराहें उसे एक पल के लिये भी चैन से बैठने नही देती ।

मुख पर गहन दुश्चिंता का भाव लेकर पति ने बडी मायूसी से कहा—'अ च छा ।"

वह रात इतनी ही गहरी और उतनी ही उदास है । प्रकृति की बाहो मे बर्फीला सन्नाटा लिए हुए वह एक तरह से निस्पन्द, मौन और मुर्दे के समान निर्जीव पडी है . और

निर्वसना

•
•

आज फिर मिसेज चदवाणी का मन अचानक क्षुब्ध एव अशा त हो उठा । सदय वे अपन आक्रोश और अपनी व्यथा का अवचेतन म धकेलती आ रही हैं । निरतर प्रयास स वे इसकी बहुत कुछ अभ्यस्त हो चुकी हैं । लेकिन आज स्थिति भिन है । जब व पुन अ तद्वद्व के भवर मे फस गई ता वे चाहकर भी अपने आपको सुस्थिर एव सुव्यवस्थित नहीं कर सकी ।

वे आज तक परमान द के साथ व्यवहार की यथता का बर्दाश्त करती आ रही हैं । वैसे यह बाहरी दिखावा भर है मगर अब वह धीरे धीरे बोझ सा बनता जा रहा है । इस वे विवश सी विमन स भी होती जा रही है । इसके विपरीत भीतर ही भीतर वे इसके प्रति

अनास्था, अश्रद्धा तथा आक्रोश की अकृत्रिम भावना से भरती जा रही है। यह परिवर्तन आकस्मिक भी है और साथ ही साथ असम्भावित।

बाथरूम से लौटकर परमानन्द ने अपने हाथ मुंह पोंछे, फिर स्नेहसिक्त कण्ठ से बोला— 'रजनी! इस प्रकार तुम मुंह लटकाये क्यों बैठी हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ना?"

शायद मिसेज चंदवाणी ने इस औपचारिक प्रश्न का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं समझी। वे पूर्ववत् मौन साधे रहीं।

इस बीच परमानन्द ने तौलिया एक ओर फेंक दिया। अपने सिर के बालों पर हाथ फेर कर उसने गम्भीरता-पूर्वक कहना आरम्भ किया - मैं पिछले कई वर्षों से देखता आ रहा हूँ कि तुम्हारे हृदय की व्यथा और चिंता काली घटा बनकर तुम्हारे जीवनाकाश पर बुरी तरह छा गई है। लगता है जैसे इन सबसे तुम्हें मुक्ति मिलनी कठिन है।"

इस बार मिसेज चन्दवाणी के मुंह से एक सर्द आह निकल पड़ी। इसके द्वारा अन्तर्पीडा की मार्मिकता उनके होठों पर अपने आप बिखर गई।

वे थरथराये शब्दों में कहने लगीं—'जिनके भाग्य में दुःख के कारण रोना लिखा हो, वे भला ... ओह!"

तभी उनकी आंखें बरबस छलक आईं। वे भावाकुल सी हो सिसक पड़ीं।

इस नैराश्य पूर्ण उत्तर से परमानन्द को एक गहरी ठेस लगी। उसका करुणार्द्र हृदय सहज ही में इसे सहन न कर सका।

'जीवन जीने के लिए है। यदि इसे रो-रो कर घुटन के अंधेरे में व्यतीत कर दोगी तो इससे हानि किसकी होगी?"

एक प्रश्न वाचक दृष्टि डालकर वह किंचित् मुस्कराया "रजनी! इस संसार में ऐसा कौन व्यक्ति है जिसे कभी दुःख और पीड़ा ने सताया नहीं होगा। घटना, अघटना और दुर्घटना सदैव प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के साथ परछाईं की भांति लगी रहती है। वह

चाहे आँखें खोलकर चले या बद करके, कभी न कभी—कहीं न कहीं ये उसे अपना शिकार बना लेती हैं। उसके सदा बहार जीवन मे ऐसा विष घोल देती हैं, जिसके प्रभाव मे वह स्वय जलता है, उसका जीवन जलता है और उसका पथ जलता है। आकाक्षायें, कल्पनायें तथा भावनायें तक उसम झुलस जाती हैं और रह जाती है केवल मुट्ठी भर राख जो आधी के प्रबल वेग मे उडकर उसके भविष्य को निर्मम अधकार म धकेल देती हैं ।"

इतना लम्बा वक्तव्य देकर परमानन्द सहसा शात हो गया। मगर वह इसके प्रभाव को लक्षित करने का लोभ सवरण न कर सका।

मिसेज चदवाणी अभी तक विकार ग्रस्त एव (चिंता युक्त) मन स्थिति लिए वेदना की साकार मूर्ति बनी स्थिर-निश्चल बैठी हैं। लग ऐसा रहा है कि परमानन्द की ये बातें चिकने पत्थर पर बूदो के सदृश्य गिरकर फिसल गई। परन्तु अपना कथन पूण करने के उद्देश्य से वह पुन कहने लगा—' मगर उस क्रूर अधेरे मे भी कभी कभी आशा की एक किरण सी चमक जाती है। यह प्रकाश है आत्म विश्वास का, जो कष्ट सकट और यत्रणा से परिपूण वातावरण तथा प्रतिकूल परिस्थितियो के विरुद्ध लडने की मनुष्य की असीम शक्ति का परिचायक है। यह अपूर्व साहस का ज्योतिपुज है जो उसे जीवित रहने के लिए प्ररित करता है और टूटने स उसकी रक्षा करता है। उसका निवास स्थान है स्वय का अतस ! वही से प्रेरणा पाकर तुम नया उत्साह ग्रहण करो और इस मानसिक व्याधि से सदैव के लिए मुक्ति प्राप्त करो ।"

बोझिल भाषा से उत्पीडित इन उपदेशात्मक विचारा की ध्वनि प्रति ध्वनि घनी देर तक मिसज चन्दवाणी के अन्तमन मे गूजती रही। लगता है एकदम जस रटे रटाये शब्द ! तब वे प्रकृतिस्थ होने के प्रयास मे बाथरूम म चली गई। अपने चेहरे और माथा पर ठडे पानी के छींटे भी मारे, किन्तु लौट कर आई ता वसी की वैसी भरी भरी और

छलछलाती हुई । सामान्य होना भी जैसे उनके भाग्य में नहीं है ।

बालकोनी के एक सोफे मे धसा परमानन्द आज का समाचार-पत्र पढ रहा है । इधर मिसेज चन्दवाणी के अन्तःकरण मे प्रलयकारी बवडर सा उठ रहा है । उस पर प्रभुत्व पाना एक प्रकार से असम्भव जान पडता है ।

जब कभी उनकी भेंट परमानन्द से होती है तो निश्चित रूप से वे अपना बौद्धिक एव मानसिक सतुलन खो बैठती हैं । शिष्टाचार-वश वे कुछ कह नहीं पाती, फिर भी वे उस पर नाराज है—बेहद नाराज ! अब वह रोष भी घृणा तथा तिरस्कार मे बदल चुका है । ज्वालामुखी की भाति उनके अभ्यन्तर म विचित्र प्रकार की हलचल मची रहती है । लावे और धुए से दम घुटता है । पता नही कब विस्फोट की घडी निकट आजाए और उसमे सब कुछ स्वाह !

एक ऐसी सुहावनी और मनोहारी सुबह परमानन्द ने हसते हुए उनके घर मे प्रवेश किया । मिस्टर चन्दवाणी का स्वर्गवास हुए लगभग छ मास हो चुके हैं । मिसज चन्दवाणी काले परिधान में शोक की करुण प्रतिमा बनी चुपचाप बैठी हैं ।

परमानन्द ने अपने स्वभाव के अनुसार बेफिक्री से कहा—"रजनी ! हमे यह सब पसन्द नही । यह रोना यह आसू बहाना और यह शोक प्रकट करना बिल्कुल बकार है—फिजूल है । ये अतीत के ढकोसले हैं जो इस आधुनिक युग म एकदम अर्थहीन, असगत और अव्यावहारिक लगते हैं। दिवगत आत्मा के प्रति हम सच्चे मन म प्रार्थना कर चुके हैं । अब उसके पीछे इस जीवन से सन्यास लेना कहा की बुद्धिमानी है !"

रजनी ने तिरछी चितवन से कटाक्ष किया । स्पष्ट है कि इस अनपेक्षित कथन को वह सुनी-अनसुनी कर गई । वह तो अपने दिल म कुछ अन्य भाव लिए बैठी है ।

'हूँम् । आज कई महीनो के बाद तो यहा आए हैं क्षेम-

कुशल पूछने के लिये। कोई मरे या जीये, तुम्हारी बला से। चिट्ठिये लिखी, तार दिए और सदेश भिजवाये, लेकिन आप हैं, जो लौटकर सूरत तक नही दिखाई। झूठे कहीं के ।"

इस उपालम्भ ने शीघ्र ही वाछित प्रभाव डाला।

परमानन्द के चेहरे पर एक भाव आ रहा है और दूसरा जा रहा है। किन्तु उसके होठो पर चिर परिचित मोहक मुस्कान खिल उठी, जिस पर रजनी मरती है—रीझ-रीझ जाती है।

"बात दरअसल यह है रजनी, कि मैं बिजनैस के सिलसिले में कभी कलकत्ता, कभी बम्बई और कभा दिल्ली तक घन चक्कर की तरह घूमता रहा। बस इस बार तुम्हारा तार मिला और मैं सिर के बल भागा चला आया।"

इसके बाद की स्थिति स्वत स्पष्ट हो जाती है। परमान द ने एक विदूषक की भाति अपनी उचित तथा अनुचित अभिनय कला का परिचय दिया। रूठी हुई प्रेयसी के मुह से अचानक हसी की बौछार बरस पडी और उसम सारा मान बह गया

काले लिबास के स्थान पर सफेद आ गया। फिर सफेद कपडा का रूप भी भडकीले वस्त्रो म बदल गया। शीघ्र ही वह शोक आवास खत्म हो गया और उसके स्थान पर अब पुन मस्ती भरी किलकारियें, आल्हादपूर्ण हसी और हर्ष विह्वल मुस्कानें गूजने लगी। इसके साथ आरम्भ हो गई क्लब की वे रगीन रातें और पिकनिक की वे रमणीक साझें, जिसमे व्यक्ति आत्म विस्मृत हो खो जाता है।

इन सबका मौन दर्शक है दिनेश चन्वाणी मिसज चन्वाणी का एक मात्र किशोर बेटा, जो अपने पिता के आकस्मिक निधन पर शोक सतप्त है उदासीन है, विपण्ण है।

अन्त म प्रलय की वह रात भी आ गई जिसने मिसज चन्वाणी के जीवन की गति ही बदल दी। वह आलोक सदैव के लिए बुझ गया। आनन्द का वह रस स्रोत मन्ना के लिये सूख गया।

प्रमुदित वातावरण, मन-मोहक परिवेश ! धवल चादनी मे डूबी रात्रि के प्राण सुख से ऊर्मिल है । उल्लसित आनन्द म निमग्न युगल प्रणयी के पैर नडखडा रहे हैं ।

"ओह परमान द ! आज तुमने पिलाकर हिक !"

"चुप । शि शि नि ।"

परमान द न रजनी को अपनी बाहो म थामा और उसे पलग पर लिटा दिया ।

अच्छा । अब जाकर सो जाओ । मेरा सिर भारी हो रहा है । आखें जल रही हैं ।'

रजनी के इस कथन पर परमानन्द को हल्की सी हसी आ गई। उसक वासना आतुर होठ किंचित् थरथराये । आखो मे कामुकता की तीव्र प्यास झलक आई ।

रजनी रजनी ! मेरी हृदयेश्वरी ।"

और परमानन्द रजनी पर झुकता चला गया ।

'नही नही न ही ।"

परन्तु आज विरोध मे वह शक्ति नही है । अवज्ञा मे वह बल नही हैं । तिरस्कार म वह भावना नही है ।

प्राय कुछ ही देर म सब कुछ शान्त । दानो अचेत अवस्था मे पडे है—मानो एक युग के पश्चात् दो विकल प्रेमी हृदयो का मधुर मिलन हुआ है ।

'सहसा कमरे के द्वार किसी के धक्के से ममर का स्वर करके मौन हो गए । इसी समय मिसज चन्द्रवाणी की हठात् आखें खुल गई । अपने आप को निवसना दख वे अत्यन्त घबरा गई । अब व यथा सम्भव सुव्यवस्थित करने का प्रयास कर रही है ।

वह अजनबी और अज्ञात छाया तब तक उनकी दृष्टि से ओझल हो गई थी, केवल उसकी पीठ ही की थाडी सी झलक दिखाई पडी ।

घोर लज्जा, असीम ग्लानि और आत्म-प्रताडना की तीव्र ज्वाला मे वे शेष रात भर जलती रही।

एक प्रहर दिन बीतने के पूर्व ही उनकी आशका ने सत्य का रूप ग्रहण कर लिया ।

शेष रात के क्षीण पक्ष पर दूसरा दिन भी उतर आया ।

तभी व्याकुल कण्ठ की चीख सारे बगले की दीवारो तक को हिला गई ।

"निश ।"

मिसज चदवाणी हृदय विदारक स्वर मे रो पडी ।

निश की खोज आरम्भ हो गई । शहर का कोना-कोना छान मारा मगर उस निर्मोही का कही भी पता नही चला । लगता है जैसे उसे धरती निगल गई । हवा उसे अतरिक्ष मे उडाकर ले गई ।

आज पाच वर्ष से ऊपर हो चुके हैं । देश के बडे बडे शहरो की खुद परमानन्द खाक छान चुका है । किसी ने भी आकर कहा कि एक लडके को हमने साधु वेश मे हरिद्वार म देखा है तो मिसज चदवाणी अविलम्ब ही पख लगाकर उड गई । कोई समाचार देता है कि एक गोरा सा लम्बा लडका बूट पालिश का थैला लिए दिल्ली के कनाट प्लेस मे घूम रहा है तो वे भूखी प्यासी वहा भी पहुच गई । किसी ने सदेह व्यक्त किया कि वह कहीं बम्बई तो नही चला गया। फिल्म ससार का आकर्षण सैकडों होनहार युवक एव युवतिया के अनमोल जीवन के साथ असदिग्ध रूप से निर्मम खिलवाड कर रहा है । बस मिसज चदवाणी वहा भी पहुँच गई। लगता है जैसे उनकी ममता अन्धी होकर दर दर भटक रही है । एक क्षण का विराम भी अब असह्य हो चुका है । न दिन को चैन है और न रात को आराम ।

अब तो उनके अतमन ने उन्हे उस दारुण अतीत मे ले जाकर पटक दिया जहा व्याकुर स्मृतियो के धुए के गोले उठ उठ कर चोट करने लगते हैं । उनके चेहरे पर अकस्मात् कारुण्य और कातरता का

आत्म-पीडित भाव आ गया ।

सहसा मुखाकृति बदल गई । उस पर अत्यन्त कठोर भाव आ गये । देखते देखते दु:ख-दैन्य के स्थान पर रोष एव घृणा के काले नाग फन ऊ चा करके विष उगलने लगे । हृदयाकाश मे मेघ का एक छोटा सा टुकडा आया और बात की बात मे समस्त अन्त प्रदेश को आच्छादित कर गया । आधी के प्रबल झोंके ने तो आकर ध्वस लीला की अग्रिम सूचना दे दी ।

दुर्द्धष मेघ गरजे । दुर्निवार बिजली कडकी, चमकी और गिरी ।

पता नही कैसे मिसज चदवाणी के हाथो मे लोहे का छड आ गया । अज्ञ व अनात शक्ति से परिचालित होकर बालकोनी मे आ गई और परमानन्द के सोफे के पीछे खडी हो गई । अत्यन्त क्रोधित होकर वे लोहे के छड से उसके सिर पर प्रहार पर प्रहार करने लगी ।

'तुमने मेरा घर-ससार बर्बाद किया है नीच कमीने कुत्ते ! मगर आज मैं तुझे जिदा नही छोडूगी नही छोडूगी ।"

'रजनी ! यह तुम क्या कर रही हो ? रजनी ।"

परमानन्द की भयातुर चीख थोडी ही देर मे मद पड गई ।

●

बड़ी शोभा पा रही है । इसस व्यक्तित्व म चित्ताकर्षक निखार आ गया है । कैसी निश्चितता एव सतोष है उसकी मुद्रा मे । शायद मोर्चे मे लौटकर फर्लो पर घर जा रहा है ।

स्त्री के नये रेशमी कपडे चमकदार हैं । लाल रग की साडी मे वह सुघ विवाहिता लगती है । बात-बात मे एक अबूझी मुस्कान के साथ दुल्हन की तरह उसका लजाना मन को भाता है । ललाट पर गाल बिंदी है । माग म गहरा सिंदूर है । लाल और हरे काच का चूडियो से उसकी दोनो गोरी कलाइयें भरी हुई हैं । जब मनाविनोद म डूबे,पति धीमे कण्ठ से हास्य-पूर्ण प्रसग छेड देते हैं ता युवती के मुह स मधुर हसी की फूलझडी अनायास छूट पडती है तब उसका सिर हिलता है और धूपे की रोशनी म नाक की लौंग से एकाएक सतरगी किरणें छिटक पडती हैं ।

वे दानो नव विवाहित दम्पत्ति है सुदूर अरुणाचल म चले आ रहे हैं । पूरी यात्रा थकान एव ऊब से भरी हुई है फिर भी वे दोना इसे अम्लान भाव से बिना किसी दुविधा के प्राय समाप्त कर लेना चाहते है । यही उनके यौवनपूर्ण मुख से ज्ञात हो रहा है । बस इस सफर के प्रति उनके हृदय म कोई अनिच्छा और कटुता नही बल्कि आशा के अनुकूल उत्साह और उमग है, जिसे सहज ही म देख सकते है । अत उ ह यह सब विशेष रूप से अप्रिय एव अरुचिकर नही लगता ।

युवती ने खिडकी खोली और कुहनी धीरे से टिकादी । शातल वायु का एक अल्हड सा झोका आया और वह उसके रूप विह्वल मन को चुपके से छू गया । उसने तिरछी चितवन से पति को देखा ता वे और पास सरक आय । दखते देखते अधरो पर खिलन वाली मुस्कान की गुलाबी प्रभा कपोलो तथा आखा से झरने लगी । यह असर है पति की उस मीठी मीठी नजर का, जो अपनी मूक वाणी से अ तमन क रहस्यमय गुप्त भेद खोल देना चाहती है ।

वर्दी शोभा पा रही है । इससे व्यक्तित्व मे चित्ताकर्षक निखार आ गया है । कैसी निश्चितता एव सतोष है उसकी मुद्रा म । शायद मोर्चे से लौटकर फर्लो पर घर जा रहा है ।

स्त्री के नये रेशमी कपडे चमकदार हैं । लाल रग की साडी मे वह सद्य विवाहिता लगती है । बात बात मे एक अधूरी मुस्कान के साथ दुल्हन की तरह उसका लजाना मन को भाता है । ललाट पर गोल बिंदी है । माग म गहरा सिंदूर है । लाल और हरे काच की चूडियो से उसकी दोना गोरी कलाइयें भरी हुई हैं । जब मनोविनोद म डूबे पति धीमे कण्ठ से हास्य पूर्ण प्रसग छेड देते है तो युवती के मुह से मधुर हसी की फुलझडी अनायास छूट पडती है तब उसका सिर हिलता है और धूप की रोशनी म नाक की लौंग से एकाएक सतरगी किरणें छिटक पडती हैं ।

वे दोनो नव विवाहित दम्पत्ति हैं सुदूर अरुणाचल स चले आ रहे हैं । पूरी यात्रा थकान एव ऊब से भरी हुई है फिर भी व दोनो इसे अम्लान भाव से बिना किसी दुविधा के प्राय समाप्त कर लेना चाहते है । यही उनके यौवनपूर्ण मुख स ज्ञात हो रहा है । बस इस सफर के प्रति उनके हृदय मे कोई अनिच्छा और कटुता नही बल्कि आशा के अनुकूल उत्साह और उमग है, जिसे सहज ही म देख सकते है । अत उन्हे यह सब विशेष रूप से अप्रिय एव अरुचिकर नही लगता ।

युवती ने खिडकी खोली और कुहनी धीरे स टिकादी । शीतल वायु का एक अल्हड सा झोका आया और वह उसके रूप विह्वल मन को चुपके से छू गया । उसने तिरछी चितवन से पति को देखा तो वे और पास सरक आय । देखते-देखत अधरो पर खिलने वाली मुस्कान की गुलाबी प्रभा कपोलो तथा आखो से झरने लगी । यह असर है पति की उस मीठी मीठी नजर का, जो अपनी मूक वाणी से अन्तमन के रहस्यमय गुप्त भेद खाल दना चाहती है ।

कुछ देर तक पति चित्र-लिखित सी भगिमा में एक प्रकार से शान्त एव निरुद्विग्न बैठे रहे, जसे वे प्राणेश्वरी की रूप सुधा को अपनी प्यासी आखो से पी लेना चाहते हैं। फिर तृप्ति की अगडाई लेकर व उसकी फूलो से भी कोमल गोदी म मौन भाव स लेट गये।

सब प्रथम पुरुष की निगाह प्रेयसी की बाकी चितवन से टकरा गई, फिर वे फिसल कर खिडकी के बाहर अपलक देखन लगी। वहा ऊपर आसमान के आचल मे तारा को समेट कर रात बेखबर सो गई।

अब नीद की परियें उसे मीठे मीठे सपनो की लारिया सुनाकर अवश करती हैं। उसका एक खास अन्दाज से पलकें उठाना और उनमे कम्पन ले आना यह जाहिर करता है कि वह जल्दी ही सो जान वाला है। अब अधिक देर जागने की उसम कतई सामथ्य नही।

पत्नी का एक हाथ स्वत ही पुरुष के बालों स खेलन लगता है। कभी बालो से निकल कर उगलियें मुह और नाक को छू लेती हैं। लेकिन उसका ध्यान अ यत्र है। दृष्टि कही शून्य मे ठहर गई हैं जहां विगत स्मृतियो का जाल सा फैला हुआ है। धु धला-धु धला कोहरा छटता हैं और कुछ चित्र स्पष्ट रूप से दीखने लगते हैं।

इस बीच ट्रेन पूरी रफ्तार पकड चुकी है।

नेफा की हिम-मण्डित पहाडिया, जिस पर जीवित अवस्था म पशु पक्षी तो क्या निरे पेडो के ठूठ भी नजर नही आत। कभी कभी गलती से कोई भूला भटका पक्षी उस विराट सन्नाटे को चीर कर पख फडफडाता है तो वह शीघ्र ही इन असीम गहराइयो मे खो जाता है। दूर तक सनसनाती हुई तुषार भरी ठण्डी हवा, जो तीखे तीर की तरह चुभ कर पूरे पहाडी अ चल को ही छलनी कर जाती है। इसके विपरीत यहा किसी पहाडी झरने का कल हास मानव कण्ठा की पुकार अथवा नभचरो का कलरव बिल्कुल सुनाई नही पडता। बस, छोटे-छोट तरत हिम-खण्डो से भरी नदी एक विशाल अजगर की भाति धीरे धीरे रेंगती हुई दीख पडती है।

अचानक हिमालय के बर्फीले सीने मे युद्ध की ज्वाला भडक उठी । देखते देखते उसके धवल गिरिशृ ग रक्त-रंजित हो गये । बारूद और धुयें ने उसकी नीरवता को एक हलचल मे परिणत कर दिया जिसके कारण चिर काल से शान्ति पूर्वक रहने वाले दो पडोसी सदैव के लिये दुश्मन बन गये ।

एक दिन जिसको भाई कहकर गले लगाया था—वही आज आस्तीन का साप बनकर डस गया । उसने पीठ मे छूरा भोंक कर देश के स्वाभीमान को जगा दिया । इसमे भारत के रण-बाकुरे सपूत आज विश्वासघाती चीनी शत्रु के लहू से पवित्र हिमालय का अभिषेक कर रहे हैं । स्वतन्त्रता की रण-चण्डी अपना खाली खप्पर नर मुण्डो से भरने लगी है ।

एक भयानक युद्ध के बाद सवत्र शान्ति छा गई । शत्रु पक्ष की तोपो की गर्जना अब चुप है । उनके बडे आक्रमण को भारत के गर्वीले जवानो ने अपने प्रबल प्रतिरोध से विफल कर दिया । वे बहुत सी युद्ध सामग्री छोडकर कायरो की भाति पीठ दिखाते हुये भाग गये ।

इसी समय रैड क्रॉस का एक सहायक दस्ता बडी तत्परता से आगे बढा और थोडी हीं देर मे उस पहाडी पर आकर चारो तरफ फैल गया । उनके पास फर्स्ट ऐड बॉक्स के अतिरिक्त और भी आवश्यक साज-सामान है। घायल सैनिको का उपचार करने मे वे शीघ्र ही सलग्न हो गये । फिर उन्हें वे स्ट्रेचर पर डालकर उस दुगम पहाडी रास्ते को पार करते हुये नीचे खडी लोरियों मे रखने लगे ।

प्रात काल से ही आज घना कोहरा छाया हुआ है । इस कारण सहायता काय म अनावश्यक विलम्ब हो रहा है । इसमें सदेह नहीं कि प्रकृति के इस अप्रत्याशित प्रकोप के सम्मुख आज का मानव असहाय, पगु और विकल्प शून्य ज्ञात होता है । सचमुच में उसे अपनी अकिंचनता तथा अक्षमता का कितना तीखा बोध हो रहा है यह एक तरह

से चिन्ता का विषय है । इस पर भी वह चुनौतियो को साहस और धैर्य से स्वीकार करके उसका प्रतिकार करने के लिये सतत प्रयत्नशील जान पडता है । बीच-बीच मे अवरोध आते हैं, रोडे और पत्थर उसका रास्ता रोकते हैं, फिर भी वह अपने डगमगाते पैरो से निरन्तर आगे बढता रहता है ।

ठण्डी हवा का हठात् एक तीव्र झोका आया और वह जैसे हड्डी में कपकपी उत्पन्न करके चला गया । नस के मुह से एक सद सीत्कार सी निकल पडी और वह अपने ऊनी लवादे म सिमट कर रह गई । अपना मुह पोछ कर और आखें मसलते हुये उसने एकबार फिर सामने देखना चाहा, लेकिन एक साय साय करती सफेद दीवार के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नही दिया ।

उसके साथ वाले व्यक्ति इधर उधर चले गये हैं । सावधानी-पूर्वक घायल सैनिकों की खोज जारी है । इस बीच वह अकेली रह गई । स्वाभाविक रूप से नारी मन घबराया और अचिंतनीय परेशानी से कलेजा काप-काप आया । फिर भी कर्तव्य का बोध ऐसी हतोत्साहित भावनाओ पर विजय प्राप्त कर ही लेता है । चेतना में नई शक्ति भर देता है जिससे गिरता हुआ आत्म बल पुन सन्तुलित हो जाता है ।

चलते-चलते सहसा उसे एक ठोकर लगी । वह एकदम जैसे चौकन्नी हो गई । आखें झुकाकर परो के पास नीचे देखा तो अवसन्न रहगई ।

लाश ! निश्चित रूप से यह एक निर्जीव लाश है जिसके अधर निस्पन्द है और चेहरा विकृत है । हाथ-पाव लहू लुहान हैं और आखें काच के टुकडो की तरह पलको म निश्चल हैं । निसदेह यह एक सनिक की क्षत-विक्षत देह है जिसका लहू निकल-निकल कर पास के छोटे-छोटे गड्ढो म पाले के कारण जम गया है ।

पता नही क्से उसकी नस नस म भय की लहर त्वरित गति स

ड गई। एक नस के दिल म ऐसे भाव का उदय होना असम्भव है। श्चय ही ऐमी डरपोक तो वह कभी रही नही। फिर ? उसके ाद मन म कई आवाजें उठती है एक प्रकार से जानी-पहचानी, जिनके भाव से लड़खडाते हुये कदम एक दम स्थिर हो जाते हैं।

कर्तव्य की भावना से प्रेरित हो वह घुटनो के बल झुककर ठ गई। उसने नाक पर उगली रखी तो सास बद-सी मालूम हुई। दन पर हाथ फेरा तो वह बर्फ के समान ठण्डा गात हुआ। अब ?

उसने स्पष्ट रूप स देखा कि घावो से बहने वाला रक्त तो चंता-जनक स्थिति का सकेत देता है।

वह घबराहट म सहायता के लिये चिल्लाई, मगर उसकी व्यग्र ण्ठ की ध्वनि उस कोहरे में डूब कर रह गई। कोई प्रत्युत्तर नही—ोई सहायता नही।

अब वह निराश हो गई। भला अकेली वह करे भी क्या ! फर बेदम लाश को ढोने से भी क्या फायदा ! व्यर्थ मे कष्ट होगा। च्छा है, इसे यही छोडकर आगे की सुधि ल।

यही सब सोचकर आगे बढने के लिये वह तैयार हो गई।

वह कुछ दूरी पर गई होगी अकस्मात् उसके पाव जहा के हा ठहर गये, जैसे किसी ने उनमे मोटी मोटी बेडिया डाल दी हो। गग चलना एक तरह से मुश्किल हो गया। जाने कसी मन म आशा और विश्वास का न हा मा अकुर फूट पडा — हो सकता है कि उस ायल सनिक की देह मे प्राण शेष हो किसी भी तरह बचाना।"

अचानक दुविधा और अनिश्चय की स्थिति खत्म हो गई। पता ही किस अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत हो वह उल्टे पैरो लौट पडी। वहा हुँच कर उसने जरा हिम्मत से काम लिया। बडी कठिनाई से उसने ाश को अपनी पीठ पर रखा। इसके बाद अपनी फूली सास और असतुलित चाल को साध कर वह धीमे धीमे कदमा स चल पडी।

हथेली पर चिबुक टिकाये और चलती ट्रेन की खिड़की मे से बाहर की तरफ देखते हुये युवती के अधरो पर आत्म विश्वास तथा विजयोल्लास की मधुर मुस्कान खिल उठी।

निश्चित रूप से वह सफर कितना कष्ट साध्य और प्राण घातक था। एक एक कदम सम्हल-सम्हल कर रखना पड़ता था। इस पर भी ठोकरा पर ठोकरे ! रुकावटा पर रुकावटें। लेकिन मैंने हार नही मानी। अपने गिरते हुये साहस को बटोर कर मैं अविराम गति से चलती रही। विश्राम का कोई नाम नही—रुकने का कोई काम नही। परिणाम-स्वरूप मेरे दोनो पैर सूज गये उनमे धीमा धीमा रक्त-स्राव होने लगा। कोहरे की दीवार से छन कर आने वाली बर्फानी हवायें सीधी आखो म भर जाती और उनमे धुधला धुधला अधेरा-सा घिर आता। आसुआ की धारायें निकल पडती घडी घडी मे सास फूल उठती। इस पर मैं तनिक रुकती और फिर चल पड़ती तब ।"

युवती ने झुक कर बहुत ही प्यार से सोये हुये पति के ललाट पर एक चुम्बन अकित कर दिया।

गाडी बडी तेजी से खटर-पटर करती हुई भागी चली जा रही है

टन।

कही सुदूर किसी गिरजे की घडी ने एक घटा बजाया। अध रात्रि का निष्करुण सन्नाटा अचानक सिहर उठा। मचलती हुई हवा भी क्षण भर के लिये स्तब्ध रह कर ठहर गई।

नर्स हठात् चौंकी। नीद से बोझिल पलको को मसलकर उसने सुस्त उबासी ली फिर अध निमीलित नेत्रो से पलग पर सोये मरीज को टकटकी लगा कर देखने लगी। वह सज्ञा शू य अवस्था म निश्चल पड़ा है।

"नर्स !"

"जी ।'

"मेरी तो राय यह है कि अब तुम्हें आराम करना चाहिये ।"

"आराम ?'

नर्स के होठों पर सूखी-सी हंसी की छाया फैल गई ।

'डॉक्टर ! मैं यहीं ठीक हूँ ।"

"मैं सब जानता हूं ।" आत्मीयता से भरी निश्छल स्नेह की चमक अनायास ही ड्यूटी डाक्टर के चेहरे पर निखर आई—'आज तीन दिन से देख रहा हूँ कि तुम इस पलंग से लगकर बैठी हो । हालांकि हम लोगों का विचार था कि यह घायल सैनिक बचेगा नहीं, लेकिन उसे मौत के मुंह में खींच लाने का श्रेय केवल तुम्हें ही है । तुम्हारे अटूट विश्वास और अपार धैर्य ने इसे बचा लिया, इसमें कोई शक नहीं ।"

डाक्टर !"—नर्स का स्वर एकाएक जैसे भीग गया—"मैं समझती हूं कि विश्वास में बड़ी शक्ति होती है वह असम्भव को भी सम्भव बना देता है . ।"

'बेशक !"

डॉक्टर ने समर्थन में सिर हिलाया—"अब वह खतरा पूरी तरह टल चुका है, तुम निश्चिन्त रहो ।"

उन्हें होश आ जाय तो ।"

'अच्छा-अच्छा । जैसी तुम्हारी मर्जी ।'

नर्स का दृढ़ निश्चय देखकर डाक्टर चला गया ।

यह तेजपुर का मिलिट्री होस्पिटल है । सीमा पर घायल होने वाले सैनिक बड़ी संख्या में यहां आये हैं । उनके उपचार की समुचित व्यवस्था है । देश के कोने-कोने से डॉक्टर कम्पाउन्डर और नर्सें उनकी सेवा के लिये यहां एकत्रित हुये हैं । उनमें नया उत्साह है—नया जोश है ! मातृभूमि पर प्राणोत्सर्ग करने वाले लाडले सपूतों की सेवा में एक निराला आनन्द है—एक अलौकिक सुख है । यह सचाई यहां आकर दिन के प्रकाश के समान उज्ज्वल हो जाती है ।

नस के मु ह से अचानक दीर्घ नि श्वास निकल पडी। इसके बाद उसने थकी थकी दृष्टि से वाड के इस हाल म चहुँ ओर देखा । इसमे लगभग बोस या पच्चीस बड है । कई घायल सैनिक अभी तक अचेतावस्था मे पड हैं । कुछ ऐस भी हैं जो असह्य शारीरिक यातना भोगते हुये कभी कभी मन्द मन्द स्वर म कराह उठते है । उनके प्रति सहज ही सहानुभूति का भाव हृदय मे जागृत हो जाता है ।

नस ने उधर से अपना ध्यान हटाया । तब वह अपने पास के पलग मे अधिक रुचि लेने लगी । वह अब अपलक निहार रही है ।

य कैप्टिन है । उसके लिये बिल्कुल अपरिचित और अनजान ! केवल मानवीय सद्भावना एव आतरिक सवेदना के वशीभूत हो उनके पास खिचकर चली आई । अपने पेशे के नाते यह एक तरह से नियम विरुद्ध है । एक के प्रति यह स्नेह प्रदशन सवथा पक्षपात पूण है, अनुचित है । लेकिन वह अपने हृदय के सबल आग्रह को घडी भर के लिये भी टाल न सकी और उसके निर्देश के अनुसार आज तक वह इस पलग के पास जमी रही । वैसे एक राष्ट्र वीर की सेवा करने का उसे जो सुअवसर मिला है वह खोना नही चाहती । तहे दिल से वह इस सम्मान से वचित रहने के लिय कदापि तैयार नही है ।

उस दिन सला पहाडी के भयानक युद्ध म ये बुरी तरह घायल हो गय थे। कहत हैं कि अतिम क्षण तक ये अपनी छोटी-सी सैनिक टुकडी को लडने के लिये वीरोचित आदेश देते रहे । शत्रु पक्ष की अन्धाधुन्ध गालियो की बौछार क सामने जब पाव उखडने लगे तब भी ये स स मस नही हुय । इनकी सिंह गजना स उत्तजित हो शेष सैनिक भी खुलकर शत्रुओ स लोहा लने लग । उनका प्रत्याक्रमण बडा भयकर था । लेकिन दुर्भाग्य से शत्रु एक क अनुपात म लगभग सौ ! इसके अतिरिक्त, व मशीनगनें और मोर्टार तोपें भी ल आय । उनकी लोम हषक गजना म उन मुट्ठी भर वीरो की शौयपूण आवाज भी डूब गई ।

असीम श्रद्धा और भक्ति से नर्स का जैसे मस्तक झुक गया। लगा कि माना गद गद् चित्त से वह अपन हृदय के पवित्र भावा की अजलि उनके चरणों म अर्पित कर देना चाहती है ।

कौन कहता है कि हमारा देश दुबल है, प्रतिरोध की भावना स सर्वथा रिक्त है ! किसी अभाव जनित क्लेश से पीडित है ! जब तक ऐसे वीर—शिरोमणि नर-रत्न जीवित है किस विदेशी म इतना साहस है कि वह इस स्वाभिमानी देश को दासता की बेडियो म जकड दे ! आज हिमालय पर आग लगी है। शत्रुओ की गगन भेदी तोपें उसके हिमाच्छादित अतम को चीरन के लिये आतुर है। आज भी राणा प्रताप और छत्रपति शिवा की परम्परा मे आस्था रखने वाले महावीर अपन शोणित से उसे बुझान के लिय सतत प्रयत्नशील है। चट्टान से भी कठोर उनकी छातिया से टकरा टकरा कर शत्रुओ की गोलियें चकनाचूर हो रही हैं ।

धन्य हैं वे वीर जो आज सारे देश के मुकुट मणि हैं—हृदय के हार हैं ।

भावोद्रेक म युवती सोचती चली गई

तभी एकाएक ट्रेन रुकी । शायद कोई स्टेशन आ गया है । वहा कुछ देर ठहरकर वह शीघ्र ही आगे चल पडी ।

एक झटके के साथ नर्स की विचार शृ खला हठात् टूट गई । बड यत्न से वह पुन उसकी कडी जोडने लगी । पर तु इस बार सम्पूर्ण दृश्य ही बदल गया ।

'डॉक्टर ! मैं मोर्चे पर जाना चाहती हूँ ।"

"तुम ?"

अनायास ही डॉक्टर की प्रश्न भरी दृष्टि उसके मुख पर केन्द्रित हो गई ।

'जी हा । मैं ।'—बडे धय स नई नर्स न उत्तर दिया ।

ताज्जुब है। इतनी कम उम्र की लडकी और यह हौसला—यह हिम्मत! भयानक युद्ध क्षेत्र का नाम सुनकर तो अच्छे अच्छे साहसी भी कदम पीछे रख लेते हैं। मानव हृदय को समझ पाना वैसे भी सम्भव नहीं है। हारकर उन्होंने सहमति प्रकट की—'अच्छा।"

जब नर्स मुडकर कमरे के बाहर जाने लगी तो कुछ स्मरण करते हुये डॉक्टर ने पुनः पूछ लिया—"क्या तुमने अपने घर वालो से इजाजत लेली है ?"

यह प्रश्न अप्रासांगिक नहीं हैं। नर्स भली-भांति जानती है कि इस विषय मे माता पिता की आज्ञा आवश्यक है।

"घर वालो से ।"

बस, वह इतना ही बोल पाई। बीच ही म उसका मन पता नही कैसे कैसे होने लगा। कुछ ही पलो म उसके चमकते चेहरे पर जैसे स्याही उतर पाई। अन्तःकरण मे कटु स्मृतियों का विष फैल गया, जिसके कारण मनोदृष्टि धुंधली हो गई।

फिर एकदम जैसे बिजली चमकी, कडकी और गिरी।

"आपने मुझे धोखा दिया है।"

"जरा सुनिये ।"

घबराहट मे यह मन्द स्वर फूटा।

क्या खाक सुनू!"

'असल म बात यह है कि कि ।"

"बात गई भाड मे ।"

"मेरी सुनिये तो सही सुनिये ।"

"अब सुनने को क्या शेष रह गया है ।"

"ऐसा मत कहिये ठाकुर ।"

'चल हट धोखे बाज विश्वासघाती ।"

अत्यन्त क्रोधित होकर सर्माध ठाकुर विक्रमसिंह तिरस्कार-पूर्ण

स्वर मे पुन चिल्लाने लगे – ' आपने गिरगिट के समान जो रग बदले हैं उसे मैं खूब जानता हूँ । वाह ! मेरी लडकी अच्छे सस्कारो वाली है । सुशिक्षित है सु दर है सुशील है । गृह कार्य म निपुण है । याद है न, खूब यशगान किया था उस दिन । नाम है उसका जमना ! दुर्भाग्य से जन्म पत्री खो गई है । नाम से ही लग्न निकलवा लें । अरे वाह खूब अभिनय किया । मेरी आखो म अच्छी धूल झोकी । और और अब ।"

'मेरी बात तो सुनिये, फिर आप कुछ भी कह लीजिये ।"

अन्त मे नारायण सिंह दु खी दीन बन कर गिडगिडाया । स्पष्ट है कि उसके याचना करते हुये नेत्र सहसा आर्द्र हो आये ।

'देख नारायण ! यह तो मैं पुरानी मित्रता का इतना लिहाज कर रहा हूँ वरना कोई दूसरा होता तो पता चलता । " आखें निकाल कर विक्रम इस दफा भी चीखा ।

समधि के साथ आय पडित ठाकुरदास ने भी मु ह खोलकर हवन की अग्नि म घी की आहुति दी ।

'नारायण सिंह जी ! हमारे जजमान तो नेक दिल, आप सज्जन पुरुष हैं, इस वजह से चुप रह गये ।"

नारायण के मु ह पर ताला ठुक गया । एक अज्ञात अपराध की भावना से अभिभूत उसका सिर झुकता चला गया ।

'वाह ठाकुर साहब ! आपने भी खूब निभाई मित्रता ! सच मुच मे अनुकरणीय है !'—पडित जी इस बार फिर विष-वमन करने लगे—' अपनी अशुभ एव दुष्ट ग्रहो से युक्त लडकी को इन्ही के गले बाधनी चाही । यह तो अच्छा हुआ जो हमारे गाम आदमी ने लडकी के असली नाम व जन्म कुण्डली के सम्बन्ध म समय पर सूचना दे दी । इस कारण हम शीघ्र ही सचेत हो गये फिर भी आपने तो अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोडी ।"

स सहमत होकर घोषणा कर देते हैं कि किसी भी स्थिति म इस लडकी का लग्न हो नही सकता । यदि जान बूझ कर इसकी अवहेलना की गई तो वर और उसके परिवार पर निश्चय ही अशुभ ग्रह का प्रकोप होगा वैसे इस समस्या का कोई उपयुक्त समाधान भी ज्ञात नही होता । भाई करे भी क्या !

जब व्यक्ति चारो तरफ से निराश हो जाता है और उसे किसी जटिल समस्या का कोई युक्ति सगत विकल्प नजर नही आता तो वह हारकर झूठ, छल-फरेब का आश्रय लेता है । ठाकुर नारायण सिंह ने भी यही किया । उन्होने लडकी का नाम बदलकर जमना की खो जाने की बात उडाई । लेकिन यह भी उनका भ्रम निकला । इसम लेश मात्र भी वे सफल न हो सके । पता नही उनके वहा से शत्रु पैदा हो गये, जिन्होने उनकी चाल का शीघ्र ही भण्डा फोड दिया ।

अन्त म, यह छल हो उनके लिये घातक बन गया । आज इस कुत्सित काय के लिये उनकी सवत्र घोर निंदा स्तुति हो रही है । वे अपना मुह दिखाने के काबिल भी नही रहे । कैसा भाग्य का विद्रूप है, जिसके कारण उनकी यश और कीर्ति का सूर्य अस्त होने जा रहा है ।

इस विडम्बना का सबसे अधिक प्रहार हुआ है तो निर्दोष जमना पर । अपने माता पिता को अत्यधिक चितित और दुखी देखकर किस सतान का दिल बैठ न जाये ! भीतर ही भीतर उद्वेग जनित क्लेश से उसका अतस झुलसता है । अपने आपको विकल्प शून्य तथा निष्क्रिय पाकर वह शीघ्र ही एक दीपक की तरह बुझ जाती है, जिस की बाती म से केवल कसैला धुआ ही निकला करता है ।

आशा के विपरीत अब तो उसे भी विश्वास होने लगा है कि हो न हो वही अभागी है मनहूस है, जन्म जली है । उसी के कारण परिवार के सारे व्यक्ति परेशान है, हताश है । अब इसम सन्देह की

रत्ती भर गुंजाइश नहीं ।

निराशा भय और अविश्वास ! ये भावनाएं अब उसके दैनिक जीवन में घिर गयी हैं । इनसे परित्राण पाना असम्भव सा लगता है । लगा मानो सिन्धु का शान्त जल एकाएक उद्वेलित हो उठा है । उसमें लाल लहरें ऊंची नीची होती हैं और विक्षुब्ध होकर मानस-तट से टकराती हैं । इसके बाद विरल ध्वनि-प्रतिध्वनि अन्तराल में एक टीस-सी पैदा करती है । स्पष्ट है कि यही उसकी नियति है ।

यही असहनीय स्थिति कई दिनों तक यथावत् चलती रही । बीच में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं हुआ । लेकिन एक दिन अचानक उसके मन में एक विचार आया । कालान्तर में वह अपनी गहरी जड़ें जमाने लगा । इसका अनुकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है । कुछ दिनों तक वह उसे बलात् दबाती रही फिर उसे अपनी विवशता का जल्दी ही एहसास हो गया । उसने बड़ी झिझक और संकोच के साथ सबसे पहले अपनी मां के सामने उसे व्यक्त करने का साहस किया ।

जैसी आशंका थी—वही हुआ ।

सुनकर मां के नेत्र विस्मय से फटे रह गये ।

'क्या ? अब तू नर्सिंग की ट्रेनिंग लेगी ?'

'हां मां ! इसमें हर्ज ही क्या है !'

'हर्ज ?'

मां के अधर आवेग में कुछेक क्षण कांपे, तब वह ऊंचे स्वर में पति को पुकारने लगी—'अजी सुना आपने ।"

घबराये हुये से ठाकुर साहब दौड़े दौड़े आये । छूटते ही पूछ बैठे—'क्या बात है ?"

'लो अब आपकी लाड़ली नर्स बनेगी ।'

प्रच्छन्न रूप से छिपे व्यंग ने गहरा प्रभाव डाला । हतबुद्धि से होकर वे सहसा इतना ही बोल पाये—"नर्स !"

एक लघु अन्तराल के पश्चात् ठाकुर साहब परेशानी से पूछ बैठे—"यह कैसा निर्णय है बेटी ?"

लेकिन जवाब बेटी की तरफ से नही आया। क्रोध मिश्रित वाणी मे पत्नी ने वक्रोक्ति कमी।

" और पढाओ अपनी बेटी को। उसका फल भोगो। अब यह नर्स बनकर उच्च राजपूत घराने का नाम उजागर करेगी।"

सुनते ही नारायण सिंह को मानो काठ मार गया। वे हठात् कुछ बोल न सके।

इस स्थिति का पत्नी ने पूरा-पूरा फायदा उठाया। उनकी आवाज और भी तीखी हो गई। वे मुह बिगाड कर नक्ल उतारने के स्वर मे कहने लगी—" समय बदल गया है। पुराना जमाना बीत चुका है इसलिये बच्चों को पढाना माता पिता का फर्ज है। आज अनपढ की कोई कद्र नही। लो, यह बेटी अब मनमानी करने पर उतर आई। सम्हालो इसे तुम्।"

इस क्रोध पूर्ण फुत्कार के साथ वहा से वे पैर पटकती हुई चली गई।

ठाकुर साहब चिन्तातुर अवस्था मे कुछ समय तक खडे रहे फिर उन्होने प्रश्न-वाचक दृष्टि जमना पर डाली जो अविचलित भाव मे गर्दन झुकाये बिल्कुल मौन है। उन्हे महसूस हुआ कि लडकी किसी निर्णायक स्थिति मे पहुँचकर ही उनके सामने उपस्थित हुई है, अत कुछ भी कहने के प्रति उनकी अनिच्छा अब छिपी न रह सकी।

चलते चलते वे भारी मन से केवल इतना भर बोले—"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

इतने सहज ढग से आज्ञा मिल जायेगी जमना को इसकी बिल्कुल आशा नही थी। सर्व प्रथम वह आश्चर्य-चकित रह गई किन्तु बाद म उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सच तो यह है कि अब

वह अपने पैं । पर खड़ी हो ज येगी। माता पिता पर बोझ बनकर नहीं रहेगी । यह मन अप्र यासित । ‌‌ फिर भी आशा है कि इस उपेक्षित, लाछित और अ यात्रहान्ति जीवन से उस महा ी मुक्ति मिल जायेगी ! मुक्ति की बा में नाम लेना क्या सुखद अनुभव है, य तो आनन्दी मन ही जानता है । वह हो स्वत न मुक्त !

पानी !

मुक्ती न चौक कर पति की तरफ देखा । लगते हैं वे काफी देर से जगे हैं। वह इतना देर तक विचार-मग्न थी इसलिए उधर ध्यान ही नहीं गया । वह एकदम मानो लजा गई ।

ट्रेन के शोर के साथ उस मुख में कुछ अस्पष्ट से शब्द फूटे— आप बड़े वैसे हैं ।'

प्रश्न भरी भंगिमा में अभिव्यक्त हु । 'क्या ?'

आपको जग ना ी देर ना चुकी है फिर भी ।

पत्नी । मुह बनाते हुए वाक्य अ रा छोड़ दिया ।

पति के अध । पर प्यार की सी मुस्कान नाच गई । पत्नी के हाथ को सीट पर रखकर बड़े प्रेम में थपथपाते हुए वे बोले—'मैंने बीच में तुम्हें डिस्टर्ब करना उचित नहीं समझा ।'

उहू आप बड़े गंभीर हैं ।

मान अ दाज में मुस्कराकर युवती अपने स्थान से उठी और एक गिलास पानी ले आई ।

पानी पीने के बाद पति ने उस को जाने का अनुरोध किया, लेकिन इसारा उसने सुनी अनसुनी कर दी । वह खिड़की के पास पुन कुहनी टिकाए बैठी रही । अनजाने ही उसकी चिबुक हथेली पर आ गई और कुछ ी देर में दृष्टि शून्य में भटक गई ।

इस बार पति उपर के सामने की ऊपरी बर्थ पर टांगें फैलाते हुए पसर गए । सिगरेट के कश पर कश खींचते हुए वे उदासियें लन

लगे। धुएँ से अन्दर का वातावरण घुट गया, मगर खुली खिड़की से आने वाली तेज हवा उसे उड़ा ले गई।

आश्चर्य है कि जमना की आँखों में नींद नहीं। जाने किन स्मृतियों की अनजानी घाटियों में वह भटक चुकी है। उसका यह स्वभाव है। जब सोचने लगती है तो मूर्ति की तरह इसी अंदाज में बैठी रहती है। अपने अतीत की बीती घटनाओं का विश्लेषण करना एक तरह से उसकी आदत सी बन गई है।

एक बार पति ने चाहा कि जमना को छेड़ा जाये। कोई रोचक प्रसंग उठाकर बातचीत में पूरी तरह डूब जाय। परन्तु उसकी गम्भीर मुद्रा ने विशेष उत्साहित नहीं किया। यूँ भी बोझिल पलकों के नीचे मचलने वाली नींद को उपक्रम रोकना भी अब कठिन हो गया। मुँह से अपने आप मुक्त उबासी निकल पड़ी और थोड़ी ही देर में देखते देखते पति की नाक बजने लगी।

सीटी बजाती हुई ट्रेन अपने घड़घड़ाते पहियों पर बड़ी तेजी से भागी जा रही है। लगता है जैसे वह रुकना जानती ही नहीं।

युवती ने पति की ओर दृष्टि निक्षेप किया। आँखों के नीचे और चद्दर के आस-पास नींद की परियाँ लोरियाँ सुना रही हैं।

उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान की छाया अनायास ही तैर गई। उसने वापिस अपने विचारों का सूत्र पकड़ना चाहा। शीघ्र ही सफल हो गई।

चैतन्य लाभ करने पर रोगिन के मुँह से क्षीण स्वर में सबसे पहले निकला—'डाक्टर ! मैं कहाँ ?''

आत्मीयता से मुस्कराकर डाक्टर इसका उत्तर में बोला—'आप बिल्कुल निश्चिन्त रहें। हॉस्पिटल में आप ठीक दशा में हैं।'

'धन्यवाद !' पेशेन्ट ने अस्फुट स्वर में आभार प्रकट किया।

डॉक्टर हल्के से हँस।

"इसमे धन्यवाद कैसा ! यह तो हमारा फर्ज है । फिर भी फिर भी ।"

कहते कहते डाक्टर कुछ क्षणो के लिये रुके । पीछे खडी नर्स की तरफ इशारा करके वे फिर कहने लगे—'अगर धन्यवाद देना है तो इसे आप कभी न भूलें । यही खोजकर और अपनी पीठ पर लादकर आपको युद्ध क्षेत्र से लेकर आई थी । इसके बाद लगातार तीन दिन और तीन रातें जागकर इसने आपकी देख भाल की थी । इसका शुभ परिणाम आप स्वयं अपनी आखो से देख रहे हैं कुछ कहने की आवश्यकता नही ।"

डॉक्टर चले गये, लेकिन कैप्टिन को सोचने के लिये विवश कर गये । कृतज्ञता से भीगी-भीगी दृष्टि दूर खडी नर्स की आखो से टकराई और पल भर मे वह अन्तस की गहराइयो मे उतर गई ।

'नर्स !'—भावपूर्ण स्वर मे होठ थरथराये ।

जैसे एक करिश्मा हो गया । कहा गया वह अजनबीपन ?—इस एक दृष्टि से मानो अपरिचय का भाव अपने आप दूर हो गया । क्या आखो की इस मूक स्वर लिपि के पीछे गुप्त रूप से कोई अनजान रिश्ते छिपे रहते हैं जो समय पाकर अन्तर-स्रोत को तर कर जाते हैं ?

उसका बदन रोमाचित-सा हो गया ।

पहली ही दृष्टि मे प्यार वाली उक्ति को वह हमेशा मूर्खता की बात समझती थी । अक्सर इस किस्म की चर्चा करने वाली अपनी सहेलियो की वह खूब मजाक उडाती थी । इसके विपरीत आज क्या हो गया ?—प्रश्न अपने-आप मे महत्वपूर्ण है !

उसका एक विशेष भाव-भीनी और अनुराग से परिपूर्ण अन्दाज मे पलकें उठाना, उनमे हृदयग्राही कम्पन ले आना, अब फिर मीठी-मीठी आवाज में बोलना ! यह सब क्या है ?—लगता है कि रोम-रोम

एक अज्ञात पुलक से आह्लादित हैं ।

हुआ वही, जिसकी उम्मीद की जा सकती है । जिसने अस्वाभा विक कठोरता से अपने हृदय को सयम की कदराओ मे बन्द कर रखा है जिसने अनावश्यक वैरागीपन की निर्मम चट्टान के नीचे जीवन के आनन्द उमगें और आकाक्षाओ की सरस भावनाओ को दबा रखा है,एक बार पत्थर हटाने पर निर्मल पानी का एसा झरना फूटता है कि मन इस स्पर्श से बेसुध हो जाता है । कैसा विद्युत सचार-सा होने लगा है उसके तमाम शरीर मे ।

जैसा कि इस उम्र मे लडकियों का स्वभाव होता है उसी के अनुसार वह काफी दिनो तक सकोच और लज्जा से कतराती रही । किन्तु, एक विरोधी – सर्वथा नवीन—विचार धारा भी उसके हृदय में प्रवाहित है । उसके अधीन प्रीत की डोरी म बध जाने के लिये उसका यह मन आतुर है । जी चाहता है कि वह अपने प्रेमी की बाहो म झूलती रहे । सामने आने से डरती है, कही वे पुकार न लें। लेकिन साथ ही उनकी कर्ण प्रिय ध्वनि सुनने के लिये कान तरसते हैं । वह पास आने से घबराती है, फिर भी उनका सान्निध्य और मधुर स्पर्श पाने के लिये भीतर ही भीतर प्राण छटपटाते हैं ।

अन्त मे अन्दर की छटपटाहट को जसे कोई समाधान मिल गया ।

जिसकी सम्भावना थी—वही होकर रहा ।

उनकी एक आवाज पर पैरो मे मानो बेडिया पड गई । यत्र चालित सी वह आगे बढ गई । गर्दन झुकी-झुकी सी रही । सचमुच इस वक्त परस्पर आखे मिलाने का साहस भी उसम नही रहा ।

निकटता के लिये अधीर मन को सयत करके कैप्टिन ने उसके सम्मुख एक प्रस्ताव रखा ।

"जमना ! मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ ।"

लडकी एकाएक अवाक चकित रह गई । प्रस्ताव भी ऐसे आकस्मिक और अप्रत्याशित रूप से आया है जिस पर एकदम विश्वास नही किया जा सकता ।

अब अविश्वास और सन्देह करने का भी कोई युक्ति युक्त कारण दृष्टिगत नही होता। लेकिन इस पर भी जीवन का इतना महत्व पूर्ण निर्णय एक क्षण मे कैसे लिया जाय ? उसके प्रत्येक पहलू पर दृष्टि डालकर विचार करना अनिवार्य है ! सयत चित्त से सारी ऊच नीच देख लेना जरूरी है ।

उसे असमजस और अनिश्चय के झूले मे झूलते देखकर कैप्टिन घबराये । शायद उन्होने इस मौन का विपरीत अर्थ लिया । इस कारण व्यग्र कण्ठ से पुन कहने लगे—'जमना ! मैं तुम से प्यार करता हूँ ।"

जैसे अन्धकार पूर्ण मन के प्रागण म बडा ही धूप धुला प्रशस्त फैलाव उतर आया । यह हर्ष और उल्लास का सर्वोत्तम क्षण है, जिसे कभी भी विस्मरण नही कर सकते । उस जैसी अपमानित लाछित और परित्यक्ता का ऐसा सौभाग्य कहा ! खुशी के मारे उसकी आखो मे आसू छलक आये ।

थोडी ही देर मे अपने आप पर काबू पाकर उसने धीरे-धीरे अतीत का वह काला पृष्ठ पढकर सुना दिया, जिसके पीछे उसे क्या क्या यातनायें भोगनी पडी ।

लेकिन इस दुर्भाग्य-पूर्ण प्रसग को कप्टिन ने अपनी एक सरल एव निर्लिप्त हसी से ही खत्म कर दिया । लगा इस कथन से उनके मन म कोई भ्रम उत्पन्न नही हुआ ।

जमना तो निहाल हो गई । अनायास ही, प्यासे चकोर को अमृत बूद मिल गई ।

अब पत्नी की प्रेमातुर दृष्टि बलवर सोये पति के चारो ओर

मुग्ध भाव से कुण्डली मार कर बैठ गई ।

ट्रेन खूब तेज रफ्तार से भाग रही है, शायद अगला स्टेशन काफी दूर है ।

रणभूमि से लौटकर आने वाले बेटे का हार्दिक स्वागत करने की बेचैनी अति स्वाभाविक है । माता पिता को एक एक क्षण की प्रतीक्षा भारी लग रही है ! उनके दर्शनाभिलाषी नेत्र बार बार रेल की पटरियों पर बिछ जाते हैं ।

अंत में वह चिर प्रतीक्षित घडी भी निकट आ गई । अपने लाडले को प्रसन्न वदन उतरते देख उनके हृदय-कुसुम खिल उठे ।

विजयोल्लास से मुस्कराते हुये बेटे ने चरणों में झुक कर प्रणाम किया । पिता का मस्तक गर्व से ऊंचा हो गया । अश्रुप्लावित चक्षुओं से शुभ आसीसों की झडी लगाते हुये उन्होंने उसे छाती से लगा लिया ।

पिताजी ! यह आपकी बहू जमना है ।"

पीछे खडी युवती का परिचय देते हुये बेटे ने सहर्ष कहा ।

'ज म ना !"

ठाकुर विक्रमसिंह को अचानक एक धक्का-सा लगा । कुछ सोचते हुये वे दो कदम पीछे हट गये ।

इधर जमना के भी होश गुम ! कैसा आकस्मिक संयोग है ! उसे स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि उसके ससुर वही निर्दयी ठाकुर होंगे, जिन्होंने घृणा एवं विरक्ति भाव से एक दिन उसे ठुकरा दिया था । अब ?

प्रश्न की धार कटार के समान तेज है, इसलिये अतिशय घबराहट से पत्नी पर अचिन्तनीय संज्ञा सी छाने लगी ।

बटा शीघ्र ही समझ गया । उसने स्थिति को स्पष्ट करते हुये कहा— पिता जी ! वह अशुभ चूनरी मगल कभी का खत्म हो चुका है । इसने ही सकट के समय मेरे प्राणो की रक्षा की । पण्डितो की वह घोषणा मिथ्या और पाखण्ड पूर्ण सिद्ध हुई ।'

'सच !"

जैसे ठाकुर साहब की आखो पर पडा वह भ्रम का काला पर्दा एकाएक हट गया । सकोच के कारण वे अपनी भूल का पश्चाताप भी नही कर सके । बीच ही मे कण्ठावरोध हो गया । लेकिन आशीर्वाद देने के लिये जमना के सिर पर उनका हाथ उठ ही गया ।

'सुखी रहो !"

सिसकती कलिया

•

•

गाधी मार्ग के फुटपाथ की अपनी अनेक विशेषतायें हैं । पास ही पब्लिक पार्क है, इससे उसका मूल्य और महत्व अधिक बढ जाता है ।

सर्व प्रथम पोस्टरो की अजरज भरी आकृतियां सब का ध्यान आकर्षित करती हैं । वे इतनी रोचक और मन-भावन हैं कि क्षण भर ठहरकर उनका अवलोकन करने को जी चाहता है। विभिन्न प्रकार की भाव भगिमा बनाये जैसे वे अपने पास बुलाती हैं । है न कलाकार का कमाल ! अलग-अलग रेखाओ में ऐसे रग भरे हैं कि दृष्टि अपने आप स्थिर हो जाती है !

ये हैं सिने-जगत के सुप्रसिद्ध कलाकार, जो विचित्र मुख मुद्रा से

अपनी अभिनय कला का परिचय दे रहे हैं । उषा के पखे अपनी ठण्डी हवा के लिये आमन्त्रित करते हैं । सिलाई की मशीन तो मानो अभी आपको सुन्दर वस्त्र सी कर पहना देगी । साईकिल चलाती हुई षोडषी बाला की मुस्कराहट तो देखते ही बनती है । कहीं मोटर कहीं अखबार कहीं साबुन कहीं कपडे कहीं रेडियो आदि के विज्ञापनो की मूक वाणी भी सजीव तथा वाचाल हो उठती है ।

वस्तुत आधुनिक युग बहु–चर्चित विज्ञापनो का ही युग है । यह उसकी उल्लेखनीय सफलता है । व्यक्ति के दैनिक जीवन मे य धीरे धीरे महत्व पूर्ण स्थान ग्रहण करते जा रहे हैं । आखो के आगे और कानो के पास समय–असमय केवल विज्ञापनो का ही शोर सुनाई पडता है । स्मृति म सदैव इनकी धु धली धु धली साया सी मडराया करती है । अवचेतन मन भी इससे अस्पृश्य नही रहा । व्यक्ति चाहकर भी इनस सहज ही म मुक्ति नही पा सकता ।

जिया बेकरार है छाई बहार है ।
आजा मोरे बालमा तेरा इतजार है ।"

ढोलक चिमटा और हारमोनियम के साथ मिलकर यह स्वर लहरी दूर दूर तक चली जाती है । सडक पर चलने वाला जन समूह कौतूहल वश उसके चारो ओर सिमटता चला आ रहा है ।

सात आदमियो का छोटा-सा दल ! सिर पर नेवी कट टोपी ! सफेद और काली पट्टी का लिबास ! बडे बेहूदे ढग स उछल-कूद करते हुये वे अपन कुरूप हाव भावो का प्रदशन कर रहे हैं ।

उनमे दो छोट लडके भी शामिल हैं । उनकी आयु लगभग बारह और चौदह साल के करीब है । वे दोनो बहुत ही भोंडे तरीके से अपन हाथो को ऊचा करके नाच रह हैं । इसके साथ अपन बसुरे गले स उपरोक्त गीत को गाने का निरथक प्रयास भी करत जा रह हैं । एक अजीब फटी फटी सी बसुरी आवाज उनके कण्ठ से निकल पडती है जो

अप्रिय ही नही बेहद कर्ण-कटु है ! मगर खिचकर आ गई भीड मे से कइयों को इसमे भी खूब रस आ रहा है । हैं न आश्चर्य !

उन लडको म से एक ने लखनवी जनाना लिवास पहन रखा है । सिर पर चमकती हुई गोटे की तिरछी टोपी है । गले मे सलमे सितारो वाली रेशमी चुन्नी पडी है । पावडर, क्रीम काजल और लिपिस्टिक से उसने चेहरे का मेकअप कर रखा है । दूसरा केवल चूडीदार पायजामे और कुर्ते मे हैं । अलबत्ता सिर पर वैसी ही टोपी है ।

"जिया वकरार है ।"

पहला लडका अपने कण्ठ स्वर को अत्यधिक लोचदार बनाकर गाता है तो दूसरा भी उसके स्वर मे स्वर मिलाकर चीख पडता है— "हाय मेरी जान, सदके जावा !"

भीड तुमुल हर्ष ध्वनि करती हुई झूम उठती है। कोई चिल्लाता है । कुछेक आख मारते हुये अश्लील सकेत करते हैं । किसी ने चोली मे उभरे हुये नकली उरोजो की तरफ दृष्टि उठाकर सीटी बजाई है । कुछ ऐसे भी हैं, जो खीसें निपोर कर अशिष्ट शब्दो के द्वारा उक्तिया कस रहे हैं । पूरा का पूरा वातावरण इतना अधिक उत्तेजना पूर्ण हो गया है कि शील सकोच का कहीं भी चिन्ह नही । ट्रेफिक बन्द हो गया है उनकी बला से ! मोटरें हार्न बजाती हैं रिक्शे वाले चिल्लाते हैं तागे वाले चीखते हैं लेकिन यहा किसे परवाह है ! और तो और ट्रेफिक कन्ट्रोल करने वाला पुलिस का सिपाही भी उन्हे देख देख कर मजे से खीसे निपोर रहा है । कैसा वशीकरण है उनके पास !

अचानक सगीत व नाच का यह अलबेला कार्यक्रम बन्द हुआ । लगा जैसे उमग मे भरा समारोह का आश्चय जनक ढग से पटाक्षप हो गया । उपस्थित जन समुदाय घडी भर के लिये हक्का बक्का रह गया और एक-दूसरे का मुह जोहन लगा ।

इतने मे दल का एक व्यक्ति सामने आया और अपने थैले मे से

बीडी का एक बण्डल निकाल कर कहने लगा—"बीडी नम्बर वन ! बढिया पत्ते और तम्बाकू से बनी। इसकी शोहरत सारे हिंदुस्तान मे है। फिल्म स्टार तक शौक से पीते हैं। बीडी नम्बर वन ! ग्रभी रियायती दामा म मिलेगी। तीस पैस के बण्डल के पीछे एक माचिस मुफ्त ! बीडी नम्बर वन ! बुढा पीये तो जवान हो जाय ग्राशिक पीये तो उसकी महबूबा मेहरबान हो जाय। बीडी नम्बर वन बीडी नम्बर वन।"

इस प्रशस्ति गान के साथ वह एक वृत मे मथर गति से घूमकर चक्कर लगाता रहा, फिर अपनी ग्रावाज से लोगों को प्रभावित करने लगा।

वही फुटपाथ के पास वाली सडक। वही दो लडके। लेकिन ग्राज भिन्न रूप ग्रौर भिन्न वेश मे हाथ के ठेलो पर सिनेमा के बडे बडे पोस्टर ढो रहे हैं।

भाई जान, ग्रापने यह फिल्म देखी ?"

'हा।"

"कैसी लगी ?"

'एकदम रद्दी।"

इतना कहते हुये उसने ग्रपनी नेकर की जेब म हाथ डाला। दस पैसे वाले बीडी के बण्डल के साथ नया सा पर्स निकलकर सडक पर गिर पडा।

छोटे की ग्रारों विस्मय से फैल गई।

"ग्ररे, बटुग्रा ?"

'ग्रबे जानू तू क्या समझे है।" बडा शेखी बघारने लगा—

"ये स्साले बीडी वाले दिन भर हम नचाते हैं,पर यह ब दा लालू उस्ताद चुपके मे उनकी ही पाकेट मार लेता है हि हि हि ।'

एक खोखली सी प्रभाव—हीन हसी।

जानू जैसे बुझ गया ।

'भाई जान, दिन भर नाचते नाचते मेर तो पाव दद करने लगते हैं ।"

बडे ने गहरी उसास छोडी । उदास कण्ठ से बोला—' मेरा भी यही हाल है ।"

"पाव के तलवे जगह जगह से फट गय हैं।"

जानू की आखो मे अवसाद की मार्मिकता सघन हो गई ।

लालू चुप । बीडी के लम्बे लम्ब कश खीचता हुआ वह ठेला चलाता रहा ।

कभी पास स ताग गुजर जाते है कभी मोटरें साइकिलें और कभी रिक्शें ! पैदल चलन वाला की सख्या भी कम नही है । भीड का ताता टूटता ही नही । वैस यह शहर की एक प्रमुख और व्यस्त सडक है । व्यापारिक दृष्टि से तो इसका बहुत महत्व है । बडे बडे बैंक और दुकानें इसके दोनों तरफ मौजूद हैं ।

लालू ने सडक पर अधजली बीडी फेंकी और वितृष्णा स मु ह विगाड कर उसे पैर के जूते से कुचल दिया । न जाने कैसा अस्पष्ट सा भाव लहर की तरह उसके मन म तरंगित हो गया ।

अब उसन उडती हुई भावहीन दृष्टि आस पास की दुकानो पर डाली । खिचकर आती हुई भीड मे भी उसन कोई दिलचस्पी नही ली । केवल अनमने भाव से देखता रहा ।

तभी सामने फुटपाथ पर आते हुये दीनू और उसके साथी मिल गये । सबके हाथों म बूट पॉलिश के बक्स हैं ।

उनमे से एक छेडन की गरज से चिल्लाया—"देख पनिया, वह

मनारकली और उसका यार जा रहा है ।"

लालू मद् से जल उठा ।

' अब आ दीनिया के बच्चे, इस तरह ऊल जलूल बकना छोड़दे, वरना अच्छा नहीं होगा ।"

"जा जा इन धमकियो स मैं डरन वाला नही ।"— दीनू ने लापरवाही से कहा । तब उसने तीखा कटाक्ष किया—"स्साला जनानियो की तरह सडक पर नाचता फिरता है और हम पर जमाता है रोब ! हूँम् !'

उसने विरक्ति और घृणा के अनिरेक म नीचे सडक पर थूक दिया ।

'मादर चुप रह ।'

लालू ने आग्नेय नेत्रों स देखकर बाहें चढाई ।

दूसरी ओर से भी चुनौती का स्वर सुनाई पडा— "आजा भैन । किसे धौंस बताता है ।"

उसके साथियो ने भी बढावा दिया ।

दीनू ! आज स्साले की ऐसी मरम्मत करदे कि यह चूहे की औलाद जिंदगी भर याद रखे ।"

आने तो दे मा को । खूब ठुकाई करूगा ।"

"अरे तेरी भन की ।"

लालू ने दात किटकिटाये और दखते ही देखत दोनो गुत्थम-गुत्था हो गये ।

"मार स्साल को । और मार । तोड द दांत मादर के । मार ।"

शेष साथी घेरा बनाकर खडे खडे तमाशा देखत रहे ।

उस दिन, सयोग से इब्राहीम बैंड–मास्टर का घर खोजते-खोजते मैं उस्ताद अहमद के घर पहुँच गया । भाई की शादी है इसलिये बैंड की आवश्यकता है । समय पर पेशगी देनी जरूरी है ।

जिस घर के दरवाजे पर मैं खडा था, वह एक तरह से टूटा-फूटा, गदा और अव्यवस्थित ही नजर आया । उसके बदरग जीवन की आन्तरिक वास्तविकताओ को पहचानने मे शायद इतनी मुश्किल नही होगी, ऐसा ही कुछ लगा । बाहर और भीतर – किसी हद तक उसके आसपास टटोलने का मेरी दृष्टि का प्रयास कही विफल न हो जाय इस सम्भावना से सतर्क होकर मैंने आवाज लगाई । लेकिन प्रत्युत्तर नहीं मिला ।

किंचित् झिझक कर दरवाजे पर लगा टाट का पर्दा मैंने हटाया और बिन बुलाये मेहमान की तरह दबे पाव घर मे घुस गया । आगन मे गया तो एक बुरी से गध से मेरा सिर भिन्ना गया । सास लेना भी कठिन है मजबूरी मे यह महसूस हुआ ।

किसी कृत्रिम अन्धेरे के प्रभाव से अचकचा गई दृष्टि को बडे यत्न से सामान्य करके मैंने चारो तरफ देखा । वहा बिखराव और अव्यवस्था है जो साधारणतया आलसी और फिसड्डी किस्म के लोगो के घरों मे घटिया स्तर की होती है । कोई भी चीज अपनी जगह पर नही । सारी की सारी बेतरतीब ढग से फैली पडी हैं ।

एक टूटी माची पर मैली सी दरी बिछी है । नीचे फर्श पर झूठे बर्तन बिखरे हुये हैं । जर्मन सिल्वर की थाली और कटोरी पर जाने कब से मक्खियें मण्डरा रही है । चीनी मिट्टी उतरी चद्दर की प्लेट एक कोने मे पडी है, शायद कोई गली का कुत्ता अभी अभी उसे चाट गया है । इनके अलावा चाय पीने का कप और पुरानी चलन का टूटीदार लोटा दोना ओंधे रखे हुये हैं । वे सब मिलकर अपनी दीन हीन दशा की करुण कहानी खुद सुना रहे हैं । गिलास लुढक गया है

ग्रौर फश के एक भाग म काफी दूर तक पानी फैला हुआ है ।

अचम्भा तो तब हुआ, जब मैंने उस्ताद अहमद का एक अमानवीय रूप देखा। वे गदी सी लुगी बाधे और हाथ म बैत लिये खडे हैं। उनका आबनूस के समान काला शरीर बडा भयानक लग रहा है। भाव शून्य चेहरा अत्य त क्रूर है निर्मम है।

दो लडके फश पर मुह ढार कर बठे है और धीरे धीरे सिसक रहे हैं।

मन म हल्की सी दहशत हुई फिर भी इस विस्मय जनक दृश्य को देखकर कुछ जानने की उत्सुकता प्रकट नही की।

हुआ यह कि मुझे एकाएक दुआ—सलाम के लिये भी कोई उप युक्त शब्द नही मिल पा रहे हैं। मैं क्षण भर विवश सा स्थिर खडा रहा। वैसे मेरी आखें उस्ताद के चेहरे को भापती है उनकी दृष्टि का अर्थ खोजती है, उनके होठो के भावो को पढने की चेष्टा करती है।

इस बीच उन्होने निहायत ही बरुखी से मेरी तरफ ताका। लगा जसे मैं अवाछित व्यक्ति बिना आज्ञा के यहा कसे चला आया ? बस, वे अब मेरे प्रति एकदम असहिष्णु और अनुदार हो जायेंगे, इसमे रत्ती भर भी सदेह की गुजाइश नही।

पल भर म ही मुझे देखकर उनकी डरावनी आखो मे मानो एक मूक प्रश्न उभरा—'तुम्हारे आने का अभिप्राय क्या है ?"

परन्तु मैं चाहकर भी उनको ठीक ठीक उत्तर न दे सका। शब्द कण्ठ म घुमडते रहे उन्हे ध्वनि नहीं मिली। मैं बिना मतलब ही इधर-उधर देखने लगा।

'भय्या ! मेरे पर दद करने लगे हैं ।'

मर्म—विदारक सिसकी के साथ छोटे लडके न अपनी गदन ऊची उठाई।

हा भय्या।'—दूसरे ने भी आत स्वर म याचना करते हुये

कहा—"मैं भी पूरी तरह थक चुका हूँ ।"

"चुप !"

उसी समय उस्ताद ने बेरहम बनकर उन दोनों को डाटा—"कल शादी के बैंड के आगे कौन तुम्हारा बाप नाचेगा ?"

'अब्बा ।"

छोटे लडके का यह करुण स्वर अचानक हल्की-सी चीख म बदलकर उस दयाहीन वातावरण मे कुछ देर तक अनुगूज पैदा करता रहा ।

ये वेही दोना मासूम लडके हैं । मैं सहसा विस्मित—चकित रह गया । लेकिन आज की स्थिति तो बिल्कुल भिन्न है । एक नर-पिशाच के चुगल मे मानो कोई असहाय अबला फस गई है । यह घटना केवल अविस्मरणीय नही, बल्कि हृदय-स्पर्शी भी है ।

इस बार छोटा लडका मुह फाडकर रोने के लिये अधीर हो उठा ।

'अ ब् ब् बा !"

"चुप शैतान !"—कर्कश कण्ठ से वह पाषाण-खण्ड एकदम चिल्लाया – 'अब खडे हो जाओ, वरना चमडी उधेड कर रख दूगा ।"

मैं सिहर उठा ।

उस क्रूर मानव के हाथ मे तडपती बैंत ! आखो से निकलती क्रोध की ज्वाला । भय से पीले पडकर गिड़गिडाते हुये वे लाचार और असहाय लडके !

अब मैं अधिक देर चुप न रह सका । हस्तक्षेप की अनधिकार चेष्टा करते हुये मैंने आहिस्ता से कहा—'खा साहब ! आप इन लडको पर जरा रहम कीजिय । डर के मारे इनका बुरा हाल है ।"

जैसी आशा थी—ठीक वैसा ही हुआ । मेरे कथन से उनकी आखों म खून उतर आया । कदाचित् वे मेरी इस धृष्टता को इस समय सहन करने की स्थिति मे बिल्कुल नही थे ।

'रहम !"

उस्ताद ने इस शब्द का उच्चारण कुछ इस प्रकार किया, मानो मैं उनके सम्मान के विरुद्ध कोई अपमान करने का साहस कर बैठा हूँ। मेरी यह धृष्टता सर्वथा अक्षम्य है।

'ओह! अब मैं समझा।' —उस्ताद का चेहरा एकदम सिकुड कर अत्यन्त कठोर हो गया। देखते-देखते उस पर जहरीली नागिनें रेखाओं के रूप में फैल गई— जैसे वे अभी मुझे डस लेंगी।

'तो जनाब आप हमदर्दी दिखाते हैं। ओह हो हो हा हा।"

इस निष्ठुर एवं अश्रुतपूर्व हँसी से मैं सहसा आतंकित हो गया। अब तो मुझे अपने ही कथन पर खेद है ग्लानि है। मैंने अनुचित हस्तक्षेप करके उसके कोप को अकारण ही उग्र कर दिया। अब ?

हमदर्दी !"—वह बुरी तरह चिल्लाया— मुझे आप की यह हमदर्दी कतई नहीं चाहिये।"

उसका यह विरक्ति-पूर्ण स्वर मेरे ऊपर एक गाज के समान गिरा। इस अवज्ञा तथा तिरस्कार से आहत होकर मैं एक पल के लिये भी वहाँ ठहरना नहीं चाहता था। निःसंदेह वहाँ अब मेरी उपस्थिति एक प्रकार से लज्जास्पद एवं हास्यपूर्ण हो गई।

इतने में उसका निष्करुण स्वर पुनः सुनाई पड़ा— 'सुना नहीं आपने। मुझे हमदर्दी नहीं रोटी चाहिये। समझे बाबू। सिर्फ रोटी जिसके पीछे मेरे ये कलेजे के टुकड़े।"

बस बीच ही में कण्ठावरोध हो गया। उसका अस्वाभाविक स्वर एकाएक टूट गया।

यह परिवर्तन आकस्मिक है—अप्रत्याशित है। वह पाषाण खण्ड आश्चर्य-जनक ढंग से पिघलकर मोम बन गया। उसकी क्रूर आँखों में ममता का मर्मस्पर्शी भाव तैर गया। उसके पथरीले होंठों पर दुःख की पपड़ियाँ थरथराने लगी। ऐसा ज्ञात हुआ कि अनजाने में उसकी दुखती रग का मैं छू बैठा हूँ।

मैं अवाक्-स्तब्ध !

'बाबू ! मैं क्या करू ? मैं खुद मजबूर हूँ । मेरे जैसे सभी लाचार लोगों की यही हालत है ।"

उसके गालों पर सहसा अश्रु-धारा बह आई जिसे वह रोकने के लिये दूसरी तरफ देखने लगा । तनिक रुक कर उसने कहना आरम्भ किया—" आप समझते हैं कि यह सब कुछ मैं जान बूझ कर करता हूँ । नहीं साहब नहीं, मुझे अपने बच्चे उतने ही अजीज हैं जितने दूसरे मा-बाप को लगते हैं। लेकिन लेकिन ले कि न ।'

कहते कहते वह सुदूर शून्य में देखने लगा ।

क्षण भर ठहर कर उसने भावावेश में फिर मुह खोला—

' आपको कैसे यकीन दिलाऊ कि एक जमाना मेरा भी था । मेरे तबले की आवाज सुनकर शहर की नाचने वालियों के पैर अपने आप थिरक उठते थे । जिस महफिल में तबला लेकर मैं पहुँच जाता था फिर सुबह तक उसके उठने का नाम नहीं । और आज वक्त की गर्दिश में वह सब कुछ खत्म हो गया है ।

उसके इस उदास और निराशापूर्ण स्वर ने समस्या के प्रत्येक पक्ष को स्पष्ट कर दिया ।

मैं शीघ्र ही समझ गया । इस सामाजिक क्रान्ति के युग में जहा पुराने दकियानूसी संस्कार और रूढ़िवादी परम्परायें बड़ी तेजी से बदल रही हैं, वहा ये सामन्तवादी आडम्बर कैसे टिक सकते हैं! उनका स्थान तो नई मान्यतायें एवं नये मूल्य ले रहे हैं । इनका समाप्त होना प्रायः सुनिश्चित है ।

" हमारे लिये सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है कि हम दूसरा कोई इल्म नहीं जानते काम भी नहीं जानते । अव्वल तो किसी तरह का काम हमें मिलता ही नहीं । अगर किस्मत से मिल भी जाय तो वह हमारे बस का नहीं । रोजी चलाने व पेट पालने का हमारे पास और कोई जरिया नहीं । क्या करें ?

उसके चेहरे पर विषाद की छाया घनीभूत हो गई।

सच तो यह है कि उसने जिस रहस्य का उद्घाटन किया है वह चौंका देने वाला है। वास्तव मे मैं एक विचारशील की तरह थोड़ा गहराई म उतर कर सोचने लगा। इन जैस निराश्रित लोगा की समस्या बहुत ही जटिल है। इन गन्दे घरो की चहार दीवारी के भीतर न मालूम कितने जीवन बर्बाद हो रहे हैं। इनकी खुशियें बडी वेदर्दी से लुट चुकी हैं। ये निर्बल निस्सहाय और निःसम्बल इन्सान आज बेकारी, भुखमरी और गरीबी की दारुण यन्त्रणा सहन कर रहे हैं। वैश्याओ के कोठे बन्द हो चुके हैं। आज के समय म उनका अस्तित्व प्राय समाप्त हो गया है। इस सचाई को हम स्वीकार करते हैं, लेकिन इनके पुनर्वास का सम्पूर्ण दायित्व तो आज के जागरूक समाज पर है। वह इनकी तरफ से आखें कैसे मूद बठा है

'बाबूजी!" उसन अश्रु पूरित आंखों स अपनी एक मात्र आकांक्षा प्रकट की—'मैं भी चाहता हूँ कि मेरे बच्चे भी अच्छी तालीम लेकर कोई बडा हुनर सीखें। कोई इल्म सीखकर बेहतर इन्सान बन, पर पर प र।"

इतना कहते हुये वह अन्दर की कोठरी म फुर्ति से चला गया। वहा पहुँचकर वह फूट-फूट कर रोने लगा।

मैं अपन मन मे उसके प्रति गहरी सम्वेदना और सहानुभूति अनुभव कर रहा हूँ।

दोनों लडके बहुत ही बेचैनी स कभी मेरी ओर देखत हैं, कभी उस कोठरी की तरफ, जिसमे उनका बाप रोता हुआ चला गया है।

सुमेर सिह दईया

परिचय अपनी प्रखर दृष्टि तथा मार्मिक उदभावना के द्वारा ही सुमेर सिह दईया हिंदी के कथा लेखकों म सुपरिचित है—सुनाते हैं। लेखन के साथ साथ ट्रेड यूनियन आन्दोलन से हार्दिक लगाव। राजस्थान बैंक एम्प्लाइज़ यूनियन के उपाध्यक्ष। फिलहाल स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर, बीकानेर मे नौकरी करते हैं।

रचनाए

उपन्यास जाग उठा इसान, चम्बल के किनारे भावनाओ के खण्डहर, स्वप्न की पीडा घेरे मे कैद, बर्फ की चट्टान, आधी के अवशेष, कालपात्र।

कहानी दो भाई, प्यास की प्यास, एक बडी मीनार एक छोटी मीनार, स्वप्न और सत्य।

पता हनुमान हत्था, बीकानेर (राज०)